ओ३म् ।

अथ

योगवासिष्ठे-

वैराग्य और मुमुक्षुप्रकरण ।

(देवनागरीहिंदीभाषा-मुमुक्षुओंकेहितार्थ)

[दोहा]

"ब्रह्मरूप अहि ब्रह्मवित्, ताकी वाणी वेद ।
भाषा अथवा संस्कृत, करत भेद भ्रमछेद ॥"

जिसको

खेमराज-श्रीकृष्णदासने

बंबई.

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेमें

मुद्रित किया ।

मिति पौष शुद्ध १५ संवत् १९४९

परमात्मने नमः ।

प्रस्तावना.

वेदांत विषे यह योगवाशिष्ठ ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है यह ग्रंथ मूल संस्कृतमें है; तिसका कर्त्ता वाल्मीकि ऋषि है. तिसपर कोई विद्वानने टीका करी है. यह ग्रंथ बहुत प्राचीन है. इसकी भाषा कोई परमार्थी साधु पुरुषने करी है; तिनके नामकी ज्ञात नहीं है. ऐसा सुना है कि, योगवाशिष्ठकी कोई महात्मा पुरुष कहूं कथा करते थे, तहां इस भाषाके करनेवाले साधू श्रवण वास्ते प्रति दिन जाते थे. श्रवण करिके आश्रम पर आते थे और जैसा सुनते थे, वैसाही व्याख्यान सहित लिखते जाते थे; ऐसे करिके योगवाशिष्ठ ग्रंथकी भाषा तिस साधु पुरुषने संपूर्ण करी. इस रीतिसे यह ग्रंथ भया है; औ तिस कारणते इसकी भाषा अति सुगम भई है. औ वह साधु पुरुष अनुभवी थे याते कहीं भी सिद्धांत विरोध वाक्य इसमें नहीं देखपडते हैं. भाषा पढनेवाले मुमुक्षु जनोंपर, तिस कृपालु साधु पुरुषका बडा उपकार भया है.

सब मिलिके इस ग्रंथके षट् (६) प्रकरण हैं; सो सब छपे हैं; परंतु तिसकी बडी कीमत होनेते सर्वको उपयोगी नहीं होवे है. तिस कारणते औ मुमुक्षु जनोंको

आरंभके दो प्रकरण अति उपयोगी धारिके, ये दोनों प्रकरण बडे अक्षरोंमें टाइपपर मैंने छपाये हैं.इसकी कीमत लघु होनेते सर्वको इसका उपयोग सहजमें होवेगा.-

इन दो प्रकरणमें ही वेदांत सिद्धांत इतना दिखाया है; कि जो कोई शास्त्र रीतिसे इसका श्रवण, मनन, औ निदिध्यासन करे, तो अवश्यमेव मोक्षकी प्राप्ति होवे. वैराग्य प्रकरणमें इस जगत्‌की असत्यता ऐसी स्पष्ट दिखाई है, जो श्रवण मात्रते पुरुषकी वृत्ति वैराग्यवाली होइ आवे है; औ तिसकरि जगत् जालसे छूटनेकी तिस पुरुषको इच्छा होइ आवे है.-

परमानंदकी प्राप्ति औ अनर्थकी निवृत्ति अर्थ, मुमुक्षुको विचारही कर्त्तव्य है. औ तिसकरिके ज्ञान होवे है; ऐसा इस ग्रंथके मुमुक्षु प्रकरणके " विचार वर्णनमें " भलीप्रकार वर्णन किया है. जगत्‌के तुच्छ पदार्थनकी प्राप्ति अर्थ, पुरुष बहुत बर्षों पर्यंत पुरुषार्थ करते हैं, तब वांछित पदार्थकी प्राप्ति होती है. जगत्‌के कोई भी पदार्थ मोक्षके समान नहीं हैं. मोक्षकी प्राप्ति का मनुष्यजन्मका हेतु है; याते तिसकी प्राप्ति अर्थ पुरुषको दृढ़ अभ्यास करना चाहिये,

इस ग्रंथके विचारमें और अद्वितीयके बोधक प्रक्रिया ग्रंथोंका गुरुमुखसे श्रवण जो मुमुक्षु

प्रकरणमें पृष्ठ २३३ पर कहा है- जो पद पदार्थको जाननेहारा होवे, अरु इसको वारंवार विचारे. तब तिसका दृश्य भ्रम नाश पावे. इस शास्त्रके विचार विषे और किसी तीर्थ, तप, दान, आदिककी अपेक्षा नहीं; जहां स्थान होवे तहां बैठे; जैसा भोजन गृह विषे होवे तैसा करै; अरु वारंवार इसका विचार करै; तब अज्ञान नष्ट हो जावे, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे.,,

इस ग्रंथमें बहुत पुनरुक्ति दृष्टि आती हैं; परंतु सो दूषण नहीं हैं; ग्रंथका भूषण हैं. काहेतें जो इस शास्त्रका विषय दुर्बोध है; याते एकही दृष्टांत वा सिद्धांतका वारंवार श्रवण अथवा विचार मुमुक्षुको दृढता निमित्त उपयोगीही है.

अपनी तरफसे इस ग्रंथमें कछु अधिक न्यून नहीं किया है. विचारमात्रकी सरलताके अर्थ प्रसंगोंको भिन्न भिन्न कर दिये हैं. इस ग्रंथके छपानेमें चक्षु दोष करि कोई चूक रही होवे, तो सुज्ञ जन सुधारिके बांचना ऐसी इस संतोंके दासकी विनती है.

खेमराज-श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई

योगवाशिष्ठे विषयानुक्रमणिका ।

ॐ३म्

परमात्मने नमः ।

अथ श्री योगवाशिष्ठे-

वैराग्य प्रकरण प्रारंभः ।

प्रथमः सर्गः १

अथ कथारंभ वर्णनं ।

सत्-चित्-आनंदरूप जो आत्माहै तिसको नमस्कार है. सो कैसा है जिसते यह सब भासत है, अरु जिसविषे यह सर्व लीन होत है, अरु जिस विषे यह सब स्थित है, तिस सत्य आत्माको नमस्कार है. ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय, द्रष्टा, दर्शन, दृश्य; कर्त्ता, करण, क्रिया; जिसकरके सिद्ध होता है, ऐसा जो ज्ञानरूप आत्मा है, तिसको नमस्कार है. जिस आनंदके समुद्रके कणसों संपूर्ण विश्व आनंदवान् है; अरु जिस आनंद करि सर्व जीव जीवते हैं, तिस आनंद आत्माको नमस्कार है.

कोई एक सुतीक्ष्ण अगस्त्यमुनिका शिष्य होत भया तिसके मनमें एक संशय उत्पन्न हुआ, तिसको निवृत्त करनेके अर्थ अगस्त्य मुनिके आश्रमको गमन किया. जायकर विधि संयुक्त प्रणाम करि स्थित भया; और नम्र भावसों प्रश्न करने लगा.

सुतीक्ष्णोवाच, हे भगवन्! सर्व तत्त्वज्ञ, सर्व शास्त्रों-के ज्ञाता, एक संशय मुझको है, सो तुम कृपा करके नि-वृत्त करो. मोक्षका कारण कर्म है, कि ज्ञान है, कि दोनों हैं? याते जो मोक्षका कारण होय सो कहो.

अगस्त्योवाच, हेब्रह्मण्य! केवल कर्म मोक्षका कार-ण नहीं, और केवल ज्ञानते भी मोक्ष प्राप्त नहीं होता. दोनों करके मोक्षकी प्राप्ति होती है. कर्म करके अंतःक-रण शुद्ध होता है मोक्ष नहीं होता. अरु अंतःकरण शुद्धि विना, केवल ज्ञानते भी मुक्ति नहीं होती. अर्थ यह जो, शास्त्रका तात्पर्य, ज्ञानका निश्चय, अंतःकरण शुद्ध हुए विना ज्ञानकी स्थिति नहीं होती. ताते दोनों करके मो-क्षकी सिद्धि होती है. कर्म करके प्रथम अंतःकरणकी शुद्धि होती है; बहुरि ज्ञान उपजता है; तब मोक्षकी सिद्धि होती है. जैसे दोनो पंख करके पंखी आकाश मा-र्गको सुखेन सों उडता है कर्म अरु ज्ञान दोनोंकर मोक्ष सिद्ध होता है. हे ब्रह्मण्य! इस अर्थके अनुसार एक पुरातन इतिहास है, सो तू श्रवण कर.

एक कारण नाम ब्राह्मण अग्निवेषका पुत्र था, सो गु-रुके निकट जाय कर चार वेद षडङ्ग सहित अध्य-यन करत भया. अध्ययन करके घरको आवत भया. और कर्मते रहित होय कर चुप रहा. अर्थ यह जो संश-य युक्त होय कर्महीते रहित भया तब पिताने देखा

जो यह कर्मते रहित होयकर स्थित भया है. ऐसा देख-
के इस प्रकार कहत भया-

अग्निवेषोवाच,हे पुत्र!कर्मकी पालना क्यों नहीं कर्त्ता.
और तू कर्मके न करनेते सिद्धताको कैसे प्राप्त होवेगा?
जिसकरके तू कर्मते रहित हुआ है, सो कारण कहिदे.

कारणोवाच, हे पिताजी! एक संशय मुझको उत्पन्न
हुआ है.तिस करके मैं कर्मते चुप रहा हों,सो श्रवण करो.
वेदने एक ठौर कहा है कि जब लग जीवता रहै तब लग
कर्मको करना. जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं, सो करता-
ई रहै. अरु और ठौर कहा है कि धन करके मोक्ष होत
नाहीं, और कर्म करके मोक्ष होत नाहीं, और पुत्रादिक
करके मोक्ष होत नाहीं, केवल त्यागते मोक्ष होता है,
इन दोनों विषे मुझको क्या कर्त्तव्य है? यह संशय है!
सो तुम कृपा करके निवृत्तकरो, कि क्या कर्त्तव्य है?

अगस्त्योवाच, हे सुतीक्ष्ण! ऐसे जब कारणने पिता-
को कहा; तब तिसका वचन सुन अग्निवेष कहत भया.

अग्निवेषोवाच, हे पुत्र! एक कथा मुझते तू श्रवण कर.
जो पहिले हुई है, तिसको सुन कर हृदय विषे धरके,
आगे जो तेरी इच्छा होय सोई करना.

एक सुरुचि नाम अप्सरा हती, सो जेती कछु अप्स-
रा हतीं, तिनके विषे उत्तम थी. सो एक समय हिमा-
लयके शिखर पर बैठी थी. सो हिमालय पर्वत कैसा है!

कि कामना करके संपन्न जो हृदयमें बिचारे, सो पावे. तहां देवता अरु किन्नरके गण अप्सराके साथ क्रीडा करते हैं. और कैसा है. जहां गंगाजीका प्रवाह लहरी देत चला आवत है सो गंगा कैसी है कि महा पवित्र जल है जिसका, ऐसे शिखर पर सुरुचि अप्सरा बैठी थी; तिसने इंद्रका दूत अंतरिक्षते चला आवत देखा. जब निकट आया, तब अप्सराने कहा. अहो सौभाग्य देवदूत! तू देवगणमें श्रेष्ठ है, तू कहांते आया. और कहां जायगा? सो कृपा करके कहि दे.

देवदूतोवाच, हे सुभद्रे! तैंने पूछा है सो श्रवण कर.अरिष्टनेमि एक राजर्षि था;वाने अपने पुत्रको राज्य देकर, वैराग्य लिया, संपूर्ण विषयोंकी अभिलाषा त्याग करके, गंधमादन पर्वतमें जायकर भयंकर तप करने लगा. अरु धर्मात्माथा तिसके साथ मेरा एक कार्यथा, सो कार्य करके मैं अब इंद्रके पास चला जाता हौं तिसका मैं दूत हौं संपूर्ण वृत्तांत निवेदन करनेको चला हौं.

अप्सरोवाच, हे भगवन्! वृत्तांत कौनसा है? सो मुझसे कहो. मेरेको तू अति प्रिय है; यह जानकर पूछती हूं. और जो महा पुरुष है,तिनसों कोई प्रश्न करता है,तब वह उद्वेगतें रहित होकर उत्तर देता है, ताते तू कहि दे.

देवदूतोवाच, हे भद्रे! जो वृत्तान्त है सो सुन. विस्तार करकै मैं तुझको कहता हौं वह जो राजा गंधमादन प-

वंतमें तप करने लगा, सो बडा तप किया, तब देवतों-
के राजा जो इंद्र हैं तिसने मुझको बोलाय कर आज्ञा
करी कि हे दूत! तू गंधमादन पर्वतमें जा. और विमा-
न, अप्परा, नाना प्रकारकी सामग्री, गंधर्व, यक्ष, सिद्ध
किन्नर, ताल, मृदंग आदि वाजित्र, संग लेजा; और वह
गंधमादन पर्वत कैसा है! जो नाना प्रकारकी लता वृक्ष
करके पूर्ण है, तहां जायके राजाको विमानपर बिठायके,
इहां ल्याव. हे सुंदरी! जब इंद्रने ऐसा कहा, तब मैं
विमान अरु सामग्री सहित तहां आया. अरु राजासे
कहा- हे राजन्! तेरे कारण विमान ले आया हूं, तापर
बैठके तू स्वर्गको चल, और देवतानके भोग भोगु. जब
मैं ऐसे कहा तब मेरा वचन सुनकर राजा बोलत भया.

राजोवाच, हे देवदूत! प्रथम स्वर्गका वृत्तांत तू मु-
झसे कह कि तेरे स्वर्गमें दोष कहा अरु गुण कहा है?
तिनको सुनके मैं हृदयमें विचारों, पाछे जो मेरी इच्छा
होवेगी तो आऊंगा.

देवदूतोवाच, हे राजन्! स्वर्गमें बडे दिव्य भोग हैं,
सो स्वर्ग बडे पुण्यसों जीव पाते हैं.जो बडे पुण्यवाले होते
हैं, सो उत्तम सुख स्वर्गको पाते हैं. जो मध्यम पुण्य-
वाले हैं सो मध्यम सुख स्वर्गको पाते हैं. अरु कनिष्ठ
पुण्यवाले हैं सो कनिष्ठ सुख स्वर्गको पाते हैं. यह तो
गुण स्वर्गमें हैं सो तोसों कहे हैं. और—स्वर्गके जो दोष

हैं सो सुन-हे राजन्! जो आपते ऊंचे बैठे दृष्टि आवते हैं, अरु उत्तम सुख भोगते हैं, तिनको देखके ताप उत्पत्ति होती है क्योंकि उनकी उत्कृष्टता सही नहीं जाती है. अरु जो कोई अपने समान सुख भोगते हैं, तिनको देखके क्रोध उपजत है; कि मेरे समान क्यों बैठे हैं; अरु जो अपने नीचे बैठेहैं कनिष्ठ पुण्यवाले, तिनको देखके आपको अभिमान उपजत है; कि मैं इनते श्रेष्ठ हौं, और एक और भी दोष है, कि जब उसके पुण्य क्षीण होते हैं, तब तिसी कालमें उसको मृत्युलोकमें गिराय देते हैं; एक क्षणभी रहने देते नहीं. हे राजन्! यह जो दोष कहे सो स्वर्गमें हैं. जो तैंने पूंछा सो मैंने गुण अरु दोष कहे.

हे भद्रे! जब इस प्रकार राजासे मैंने कहा तब मोको राजाने कहा-हे देवदूत! इस स्वर्गके योग्य हम नहींहैं, अरु हमको इच्छाभी नहीं है. हम उग्र तप करेंगे, तप करके इस देहको भी त्याग देंगे. जैसे सर्प अपनी त्वचाको पुरातन जानिकै त्याग करता है, तैसे हम भी त्याग कर देंगे. हे देवदूत! तुम अपने विमानको जहांते लाये हो, तहां लेजाओ, हमारे तो नमस्कार हैं.

हे देवी! जब इस प्रकार राजाने मुझको कहा, तब विमान अप्सरा आदि सबको लेके स्वर्गमें गया, अरु संपूर्ण वर्तमान इंद्रसे कहा. तब इंद्र प्रसन्न हुवा, अरु सुंदर वाणी करके मुझसें कहत भया-हे दूत! तू बहुरि

जहां राजा है तहां जा. वह संसारते उपराम हुआ है. इसको अब आत्मपदकी इच्छा हुई है. इसको साथलेके, वाल्मीकि जिसने आत्मतत्त्वको आत्मा करि जाना है; तिसके पास ले जाय मेरा संदेशा कहना-कि हे महाऋषि! इस राजाको तत्त्वबोधका उपदेश करना; क्योंकि यह बोधका अधिकारी है. काहेते कि इसको स्वर्गकी भी इच्छा नहीं, अरु औरकी भी वांछा नहीं; ताते तुम इनको तत्त्वबोधका उपदेश करो, जो तत्त्वबोधको पाय करके संसार दुःखते मुक्त होवे.

हे सुभद्रे! जब इस प्रकार देवराजाने मुझसे कहा, तब मैं चला. जहां राजाथा, तहां जाइ करिकै मैंने कहा-कि हे राजन्! संसार समुद्रते मोक्ष होनेके निमित्त वाल्मीकिके पास चल, वाल्मीकि तुझको उपदेश करैगा. तब तिस को साथ लेकर, मैं वाल्मीकिके स्थानपर आय प्राप्त भया तिस स्थानमें राजाको बिठाया,अरु इंद्रका संदेशा दिया. जो वहां वृत्तान्त भया सो सुन-जब वहां गये, अरु प्रणाम कर बैठे; तब वाल्मीकिने कहा-हे राजन्! कुशल है?

राजोवाच; हे भगवन्! परम तत्त्वज्ञ. और वेदांत जाननेवालोंमें श्रेष्ठ!मैं अब कृतार्थ हुआ.तुम्हारे दर्शन करकै अब मुझको कुशल हुआ है अरु कछु पूछता हों. कृपा करके उत्तर कहना, जिससे संसार बंधन ते मुक्ति होय.

वाल्मीकोवाच, हे राजन्! महारामायण औषध तु-

झसे कहता हों सो श्रवण करके तात्पर्य हृदय विषे धारणेका यत्न कर. जब तात्पर्य हृदय विषे धारेगा, तब जीवन्मुक्त होयकर विचरेगा. हेराजन्! वशिष्ठजी अरु रामचंद्रजीका संवाद है, तिसमें सब कथा मोक्षके उपायकी कही है. तिसको सुनके जैसे रामचंद्रजी अपने स्वभाव विषे स्थित हुए, अरु जीवन्मुक्त होयके विचरे हैं, तैसे तू भी विचरेगा.

राजोवाच. हेभगवन्! रामचंद्रजी कौन था, अरु कैसा था, अरु कैसे होकर विचऱ्या है? सो कृपा करके कहो.

वाल्मीकोवाच, हे राजन्! शापके वशते, हरि जो विष्णु तिनने छल करके मनुष्यका देह धरा सो अद्वैत ज्ञानकर संपन्न है तौभी कछुक अज्ञानको अंगीकार करके, मनुष्यका शरीर धरा था.

राजोवाच, हे भगवन्! चिदानंद रूप जो हरिहैं, तिनको शाप किस कारण हुआ, अरु किसने दिया? सो कहो.

वाल्मीकोवाच, हे राजन्! एक कालमें सनत्कुमार जो निष्काम हैं, सो ब्रह्मपुरीमें बैठे थे; अरु त्रिलोकका पति जो विष्णु भगवान्, सो वैकुंठते उतरके ब्रह्मपुरीमें आए, तब ब्रह्मासहित सर्व सभा उठके खडी हुई, अरु पूजन किया; अरु सनत्कुमारने पूजन किया नहीं. तिसको देखकर विष्णु भगवान् बोलत भया-हे सनत्कुमार! तुझको निष्कामताका अभिमान है; ताते त काम करके

अवतार पावेगा, अरु स्वामिकार्तिक तेरा नाम होवेगा. जब विष्णु भगवानने ऐसा कहा, तब सनत्कुमार बोले-हे विष्णु! सर्वज्ञताका अभिमान तुझको है. सो तेरी सर्वज्ञता कोई काल निवृत्त होवेगी, अरु अज्ञानी होवेगा. हे राजन्! एक तो यह शाप हुआ; और भी सुन.

एक कालमें भृगुकी स्त्री जात रही थी; तिसके वियोग कर वह ऋषि तपायमान हुआथा. तिसको देखके विष्णुजी हँसे, तब भृगु ब्राह्मणने शाप दिया—हेविष्णु! मेरे तई देखि तैंने हांसी करी है, सो मेरी नाईंतू भी स्त्रीके वियोग कर आतुर होवेगा.

एक दिवस देवशर्मा ब्राह्मणने नरसिंह भगवानको शाप था, सो सुन—एक दिन नरसिंह भगवान गंगाके तीरपर गयेथे, तहां देवशर्मा ब्राह्मणकी स्त्री थी, तिसको देखके,नरसिंहजी भयानक रूप दिखायके हँसे. तिनको देखके ऋषिकी लुगाईने भय पाय प्राण छोड-दिये. तब देवशर्माने शाप दिया कि तुमने मेरी स्त्रीका वियोग किया, ताते तुमभी स्त्रीका वियोग पाओगे.

हे राजन्! सनत्कुमार. अरु देवशर्माके शाप करके विष्णु भगवानने मनुष्यका शरीर धरा, सो राजा दशरथके घरमें प्रगटे. हे राजन्! यह जो शरीर धरा है अरु आगे जो वृत्तांत हुआहै, सो सावधान होय श्रवण कर. दिव्य जो है देवलोक, अरु भू जो है पृथ्वीलोक, अरु

पाताल लोक ऐसी त्रिलोकीको प्रकाशता है; अरु अंतर बाहर आत्मतत्त्व करि पूर्ण है. ऐसा अनुभवात्मक मेरा आत्मा है. तिस आत्माको नमस्कार है.

हे राजन्! यह शास्त्र जो आरंभ किया है. तिसका विषय क्या है, अरु प्रयोजन क्या है, अरु संबंध क्या है, अरु अधिकारी कौन है? सो श्रवण कर. सत्, चित्, आनंदरूप, अचिंत्य, चिन्मात्र आत्माको जनावता है, सो विषय है. अरु परमानंद आत्माकी प्राप्ति अरु अनात्म अभिमान दुःखकी निवृत्ति, यह प्रयोजन इसमें है. अरु ब्रह्मविद्या मोक्ष उपाय कर आत्मपदका प्रतिपादन है, सो संबंधहै. अरु जिसको यह निश्चय है. कि मैं अद्वैत ब्रह्म, अनात्म देहका साथी हुआहों, सो किसी प्रकार छूटों, ऐसा ज्ञानवान है, अरु मुमुक्षु है, ऐसा जो विकृति आत्मा है, सो इहां अधिकारी है.

इस शास्त्रका मोक्ष उपाय है. परंतु कैसा है? मोक्ष उपाय परमानंदकी प्राप्ति करनहारा है. जो पुरुष इसको विचारे सो ज्ञानवान होवे. बहुरि जन्म मृत्युरूप संसारमें न आवे हे राजन्! यह महारामायण जो है सो पावन है. श्रवण मात्रसे सब पापका नाश कर्ता है, जिस विषे रामकथा है सो, प्रथम मैं अपने भारद्वाज शिष्यको श्रवण कराई है.

एक समय भारद्वाज चित्तको एकाग्र करके मेरे पास

आया था; तिसको मैं उपदेश किया था. तिसको श्रवण करके वचन रूपी समुद्रते साररूपी रत्नको हृदय विषे धरके एक समय सुमेरु पर्वत पर गया. तहां पितामह जो ब्रह्मा सो बैठेथे. अरु भारद्वाजने जायकर प्रणाम किया; अरु पास बैठा, अरु ब्रह्माजीको यह कथा सुनाई. तब ब्रह्माने प्रसन्न होयकर भारद्वाजसे कहा-हे पुत्र! कछु वर मांग, मैं तुझपर प्रसन्न हुआ हौं. हेराजन! जब इस प्रकार ब्रह्माजीने कहा, तब परम उदार जिसका आशय है, ऐसा जो भारद्वाज सो कहत भया-हे भूत भविष्यके ईश्वर! जो तुम प्रसन्न हुए हो, तौ यह वर देहु-कि संपूर्ण जीव संसार दुःखते मुक्त होहिं; अरु परमपदको पावहिं; सो उपाय कहो.

ब्रह्मोवाच, हे पुत्र! तू अपने गुरु वाल्मीकिके पास गमन कर. बहुरि जो तिसने आत्मबोध महारामायण अनिंदित शास्त्रका आरंभ किया है तिसको सुनकर जीव महा मोह संसार समुद्रते तरेंगे.कैसा शास्त्र है महा रामायण? जो संसार समुद्र तरनेको पुल है; अरु परम पावन है.

वाल्मीकोवाच, हे राजन्! जब इस प्रकार कहा, तब आप परमेष्ठी ब्रह्मा, भारद्वाजको साथ लेकर मेरे आश्रममें आये. तब मैंने भले प्रकारसों इसका पूजन किया. सो ब्रह्माजी कैसे हैं? जिसकी सर्व भूतके हितमें प्रीति है सो मुझसे कहत भये.

ब्रह्मोवाच, हे मुनि मैं श्रेष्ठ वाल्मीकि! यह जो रामके स्वभावके कथनका आरंभ तुमने किया है, तिस उद्यमका त्याग नहीं करना. इसको आदिते अंतपर्यंत समाप्त करना. कैसा है यह मोक्ष उपाय? जो संसाररूपी समुद्रके पार करनेको जहाज है. इस करिकै सर्व जीव कृतार्थ होवेंगे.

वाल्मीकोवाच, हे राजन्! इस प्रकार ब्रह्माजी मुझसे कहिके अंतर्द्धान होगये. जैसे समुद्रतें आवर्त चक्र एक मुहूर्त पर्यंत उठके बहुरि लीन होजाताहै तैसे ब्रह्मा जी अंतर्ध्यान होगये. तब मैं भारद्वाजसे कहा- हे पुत्र! ब्रह्माजीने क्या कहा?

भारद्वाजोवाच, हे भगवन्! तुमको ब्रह्माजीने ऐसाकहा, कि हे मुनिश्रेष्ठ! तुमने रामके स्वभावके कथनका उद्यम किया है, तिसका त्याग नहीं करना; अंत पर्यंतसमाप्ति करना. काहेते, कि इस संसार समुद्रके पार करनेको यह कथा जहाज है. इसकरि अनेक जीव कृतार्थ होवेंगे, अरु संसार शंकटते मुक्त होवेंगे.

वाल्मीकोवाच, हे राजन्! जब इस प्रकार ब्रह्माजीनें मुझको कहा; तब ब्रह्माजीकी आज्ञाके अनुसार मैंने ग्रंथ किया; अरु भारद्वाजकों कहा. हे पुत्र! वशिष्ठजीके उपदेशको पाय कर जिस प्रकार रामजी निःशंक होइ बिचरे हैं, तैसे तू भी बिचर. तब उनने प्रश्न किया.

भारद्वाजोवाच. हे भगवन्! जिसप्रकार रामचंद्रजी जीवन्मुक्त होकर बिचरे हैं, सो आदिसों क्रम करके मुझसे कहो

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! रामचंद्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, कौशल्या, सुमित्रा, दशरथ, ए आठों अष्टमंत्री, अष्ट गुण आदि लेकर जीवन्मुक्तहोय विचरे हैं, तिनके नाम सुन- रामजी लेके दशरथ पर्यंत आठ तो ये कृतार्थ हुएहैं. अविरोध, परमबोधवान भये हैं. और कृतभासी १, शतवर्धन २, शुकधाम ३, विभीषण ४, इंद्रजीत ५, हनुमंत ६, वशिष्ठ ७, वामदेव ८, ए अष्ट मंत्री सो निःशंक होय चेष्टा करत भये हैं, अरु सदा अद्वैत निष्ठ हुए हैं. इनको कदाचित् स्वरूपते द्वैतभाव नहीं फुर्या है. अनामय पदविषे स्थितिमें तृप्त रहे. जो केवळ चिन्मात्र, शुद्धपद. परमपावन, ताकों प्राप्त हुए हैं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे कथारंभ वर्णनंनाम प्रथमः सर्गः १

द्वितीयः सर्गः २

अथ तीर्थयात्रा वर्णनं।

भारद्वाजोवाच, हे भगवन्! जीवन्मुक्तकी स्थिति कैसी है? अरु रामजी कैसे जीवन्मुक्त हुये हैं? सो आदितें लेकर अंत पर्यंत सब कहो.

वाल्मीकोवाच, हे पुत्र! यह जगत् जो भासता है, सो वास्तविक कछु नहीं उत्पन्न भया. अविचार करके भासता है. विचार कियेते निवृत्त होजाला है. जैसे आकाशमें नीलता भासती है, सो भ्रम करके है, जब विचार करके देखिये तब नीलता प्रतीति दूर होजाती है. तैसे अविचार करके जगत् भासता है अरु बिचारते लीन होजाता है. हे शिष्य, जबलग सृष्टिका अत्यंत अभाव नहीं होता, तब लग परमपदकी प्राप्ति नहीं होती. जब दृश्यका अत्यंत अभाव होय जावे, तब पाछे शुद्ध चिदाकाश आत्म सत्ता भासेगी. कोई इस दृश्यको महा प्रलयमें क़दाचित् अभाव कहते हैं, परंतु मैं तुझको तीनोई कालका अभाव कहता हों. सो शत शास्त्रकर इस शास्त्रमें श्रद्धा संयुक्त आदिते लेकर अंत पर्यंत श्रवण कर;अरु तिनको धार, तब तिसकी भ्रांति निवृत्त होय जावे. अरु अव्याकृत पदकी प्राप्ति होवे. हे शिष्य! संसार भ्रममात्र सिद्ध है, इसको भ्रम मात्र जानकर विस्मरण करना. सो मुक्ति है. अरु इसको बंधनका कारण वासना है. वासना करके भटकत फिरता है. जब वासनाका क्षय होजाय, तब परमपदकी प्राप्ति होवे. जो वासनामें फिरता है, तिसका नाम मन है जैसे जल शरदीकी दृढ जडता पायके बर्फ होता है, पाछे सूर्यके तापते बहुरि गलकर जल होता है, तब केवल शुद्ध जल होय रहता है. तैसे आत्मारूपी

जल है तिस विषे संसारकी सत्यतारूपी जडता शीतलता है. तिस करके मनरूपी बर्फका पुतला हुआ है. जब ज्ञानरूपी सूर्य उदय होवेगा, तब संसारकी सत्यतारूपी जडता, शीतलता, निवृत्त होजावेगी.

जब संसारकी सत्यता अरु वासना निवृत्त हुई, तब मन नष्ट हो जावेगा. जब मन नष्ट हुआ, तब परम कल्याण हुआ. ताते इसके बंधनका कारण वासनाहै. अरु वासनाके क्षय हुयेते मुक्ति है सो वासना दोप्रकारकी है. एक शुद्ध अरु दूसरी अशुद्ध. सो अपने वास्तविक स्वरूपके अज्ञानतें अनात्मा जो देहादिक, तिनमें अहंकार करना, सो जब अनात्ममें आत्म अभिमान हुआ, तब नाना प्रकारकी वासना उपजति है. तिस करके घटी यंत्रकी नांई चक्र भमता है. हे साधु! यह जो पंच भूत का शरीर तू जो देखता है, सो सब वासना रूप है. वासना सो चक्र है. जैसे मणके धागेके आश्रयतें खडे होते हैं, और जब धागा टूट पडा, तब मणका न्यारा न्यारा होय पडता है, अरु ठहरता नहीं है. तैसे वासनाके क्षय हुए पंचभूतका शरीर नहीं रहता. ताते सब अनर्थका कारण वासना है. अरु जो शुद्ध वासना है, तिनमें जगत् का अत्यंत अभाव निश्चय होताहै. हे शिष्य! अज्ञानीका जो निश्चय है, सो वासना कर बहुरि जन्मका कारण हो जाता है. अरु ज्ञानीकी वासना है सो बहुरि जन्मका

कारण नहीं होता है. जैसे एक कच्चा बीज होता है; दूसरा दग्धबीजहोताहै. तिसमें जो कच्चा है सो बहुरि उगता है; अरु जो दग्ध हुआ है सो बहुरि नहीं उगता. तैसे अज्ञानीकी वासना है सो रस सहित है, सो जन्मका कारण है; अरु ज्ञानीकी वासना है सो रस रहित है सो जन्मका कारण नहीं. ज्ञानीकी चेष्टा स्वाभाविक गुण करके खडी होती है. और किसी गुणके साथ मिलकर अपनेमें चेष्टा नहीं देखता. खाता है, पीता है, लेता है, देता है, बोलता है, चलता है, विचार करता है, परंतु अंतर सदा अद्वैत निश्चेष्टाको धरता है. कदाचित् द्वैत भावना तिसको फुरती नहीं है. अपने स्वभाव विषे स्थित है. ताते निर्गुण अरु अरूप है. ताकी चेष्टा जन्मका कारण नहीं है, जैसे कुम्हारका चक्र है, सो जबलग उसको फेर चढावे, तबलग वह फिरता है; और जब फेर चढावना छोड दिया, तब स्थीयमान गतिसे उतरत उतरत फिरके स्थिर रह जाता है. तैसे जबलग अहंकार सहित वासना होती है, तबलग जन्म पावताहै. जब अहंकारते रहित हुआ तब बहुरि जन्म नहीं पावता. हे साधु ! यह जो अज्ञानरूपी वासना है, तिसको नाश करनेका उपाय एक ब्रह्म विद्या श्रेष्ठ है. ब्रह्मविद्या मोक्ष उपाय का शास्त्र है. जब इसते और शास्त्रमें गिरेगा तब कल्प पर्यंतहू अव्याकृत पदको न पावेगा. अरु जो ब्रह्म वि-

द्याका आश्रय करेगा सो सुखसों आत्मपदको प्राप्त होवेगा. हे भारद्वाज! यह मोक्ष उपाय रामजी अरु वशिष्ठजीका संवाद सो विचारने योग्य है; बोधका परम कारण है. ताते आद्यंत पर्यंत मोक्ष उपाय श्रवण कर. जैसे रामजी जीवन्मुक्त होय विचरे हैं सो सुन.

एक दिन रामजी विद्या पढके अध्ययन शालाते अपने गृहमें आये; अरु संपूर्ण दिन विचार करत व्यतीत करदिया. बहुरि मनमें तीर्थ, ठाकुरद्वाराका संकल्प धर पिता दशरथके पास आये. पितासों मिलके जो संपूर्ण प्रजाको सुखमें राखतेथे; अरु सब प्रजा तिसके निकट रहिके सुख पाइ तिस दशरथका चरण श्रीरघुनाथजीने ग्रहण किया. जैसे सुंदर कमलको हंस ग्रहण करे तैसे पिताका चरण ग्रहण किया. जैसे कमलके तरे कोमल तरियां होती हैं, तिन तरियों सहित कमलको हंस पकडता है; तैसे दशरथजीकी अंगुरीनको रामजी ग्रहण किया. अरु बोले कि हे पिता! मेरा चित्त तीर्थ अरु ठाकुरद्वाराके दर्शनको उठा है. ताते तुम आज्ञा करो तो मैं तीर्थका अरु ठाकुरद्वारेका दर्शन कर आऊं. मैं तुम्हारा पुत्र हूं. तुमको पालना करनी योग्य है. और आगे मैं कभी कहा नहीं; यह प्रार्थना अब करी है. ताते तुम आज्ञा देहु; जो मैं जाऊं. यह वचन मेरा फेरना नहीं. काहेते कि ऐसा त्रिलो-

कीमें कोऊ नहीं है, जिसका मनोरथ इस घरते सिद्ध हुआ नहीं है; सबका मनोरथ सिद्ध हुआ है. ताते मुझको कृपा कर आज्ञा देहु.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! इस प्रकार जब रामजीने कहा. तब वशिष्ठजी पास बैठेथे, तिनने भी दशरथसे कहा-हेराजन्! रामजीको आज्ञा देहु. सो तीर्थ कर आवें. क्योंकि इनका चित्त उठा है. राजकुमार हैं, इनके साथ सेना दीजे, धन दीजे, मंत्री दीजे, ब्राह्मण दीजे, जो ये दर्शन कर आवें.

हे भारद्वाज! जब ऐसे विचार किया, तब शुभ मुहूर्त्त देखकर रामजीको आज्ञा दीनी. जब चलने लगे, तब पिता अरु माताके चरण लगे. अरु सबको कंठ लगाइ रुदन करने लगे. तिनको मिलकर आगे चले. अरु लक्ष्मण आदि जो भाई हैं, और मंत्री थे, तिनको साथ लेकर, अरु वशिष्ठ आदि जो ब्राह्मण विधिकी जाननेवारे थे; अरु बहुत धन, बहुत सेना तिनको साथ ले चले. और दान पुण्य करके जब गृहके बाहर निकसे, तब वहांके जो लोग थे अरु स्त्रियां थीं तिन सबने रामजीके ऊपर फूल अरु फूलोंकी माला की बर्षा करी. सो बर्षा बरफ बरखती है ऐसी दीखतीथी. अरु रामजीकी जो मूर्ति है सो हृदयमें धरलीनी. इस प्रकार रामजी वहांसों चले; तहां ब्राह्मण अरु निर्ध-

नोंको दान देते देते तीर्थ जो गंगा, यमुना, सरस्वती आदि देके हैं, इसमें स्नान विधि संयुक्त कर पृथ्वीके चारों कोन उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिमको दान किया. अरु चारों ओर समुद्रके स्नान किये. अरु सुमेरु पर्वत पर गये. हिमालय पर्वत पर गये. अरु शालग्राम, बद्रीकेदार आदि गंगामें स्नान, किये. अरु दर्शन किये. ऐसे सब तीर्थ स्नान, दान, तप, ध्यान, विधि संयुक्त यात्रा करत भये. जैसी जैसी जहां विधि थी तैसी-तैसी तहां करी; एक वर्षमें संपूर्ण यात्रा करके रामजी बहुरि अपने घरमें आये.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे तीर्थयात्रा वर्णनं नाम द्वितीयः सर्गः २ ॥

तृतीयः सर्गः ३ ॥

अथ विश्वामित्रागमन वर्णनं।

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज ! जब रामजी यात्रा करके अपनी अयोध्यामें आवत भये तब नगरके वासी लोग पुरुष और स्त्री फूलनकी बर्षा करत भये. अरु जय जय शब्द मुखते उच्चारन लगे, अरु प्रेमहास्य करने लगे. और जैसे इंद्रका पुत्र अपने स्वर्गमें आवत है, तैसे रामचंद्रजी अपने घरमें आये. पहिले राजा दशरथको प्रणाम कर, फिर वशिष्ठजीको प्रणाम कर, फिर सब सभाके

लोगोंको यथायोग्य मिले, फिर अंतःपुरमें आवत भये. तहां कौशल्या आदि जो माताथीं, इनको यथायोग्य नमस्कार किये. और जो भाई बांधव कुटुंब थे तिन सबको मिले.

हे भारद्वाज! इस प्रकार रामजीके आवनका उत्साह सप्तदिन पर्यंत होता रहा. वा समयमें कोऊ मिलने आवे कोऊ कछु लेने आवे, तिनको दान पुण्य करत बाजे बजत उत्साह हुवा. भाट आदि स्तुति करन लगे. तदनंतर रामजीका आचरण हुआ, सो सुन- प्रातःकालमें उठके स्नान संध्यादिक सत्कर्म करते, बहुरि भोजन करते; बहुरि भाई बंधुको मिल अपने तीर्थकी कथा करते. देवद्वारके दरशनकी वार्त्ता करते. इस प्रकार सों उत्साह कर दिन रातको बितावतेथे.

एक दिन प्रातःकालमें उठके पिताजी दशरथको देखे सो जैसे इंद्रका तेज है, तैसा तेजवान् देखा. अरु वशिष्ठादिककी सभा बैठीथी, तहां वशिष्ठजीके साथ कथा वार्त्ता रामजी करते हुते, तहां एक दिन राजा दशरथ कहत भये- हेरामजी! तुम शिकार खेलने जायबो करो. ता समयमें रामजीकी अवस्था वर्ष १६ में थोरेक महीना कमतीथी. तब राजकुमार रामजीके साथ लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न भाई थे, भरत नहानेको गयेथे; फिर तिनके साथ स्नान संध्यादिक नित्य कर्म करके, भोजन

करके शिकार खेलने जाते. तहां जो जीवको दुःख देनेहारे जानवर देखे तिनको मारते. अरु अवर लोकको प्रसन्न करते, इस प्रकार दिनको शिकार खेलते रात्रिको निसान बाजते अपने घरमें आवते. ऐसे करत केतेक दिन बीते तामें रामजी अपने अंतःपुरमें आइ सबका त्याग करके एकांतमें चिंतन करत बैठि रहते.

हे भारद्वाज! जेती कछु राजकुमारकी चेष्टा सो सबको रामजीने त्याग कर दीनी थी. जेते कछु रस संयुक्त इंद्रियोंके विषय हैं, इनको त्यागके शरीरते दुर्बल जैसे हो मुखकी कांति घट गई, पीत वर्ण होगये. जैसे कमल सूखके पीतवर्ण होय जाता है, तैसे रामजीका मुख पीला होगया. अरु जैसे सूखे कमलपर भँवरे बैठते हैं, तैसे सूखे मुख कमलपर नेत्ररूपी भँवरे भासन लागे. सोहू शोभा होवन लागी. अरु इच्छा निवृत्त होय गई. जैसे शरत्कालमें ताल निर्मल होता है; तैसे इच्छा रूपी मलनते रहित चित्तरूपी तालहू निर्मल होता है तैसे वासना निवृत्त होते दिन दिन पै शरीर निर्मल होयगया अरु जहां बैठें तहां चिंता संयुक्त बैठे रहि जावें उठें नहीं अरु बैठें तब हाथपै चिबुक धरके बैठें जब टहलुए मंत्री बहुत कहहिं, कि हे प्रभो! यह स्नान संध्याका समय हुआ है सो अब उठो, तब उठकर स्नानादिक करहिं. अरु हृदयमें न विचारहिं. जेती कछु खाने, पीने, बोल-

ने, चलने, पहिरनेकी क्रिया है, सो सब विरस होय गई. ऐसे रामचंद्रजी भये. तब लक्ष्मण अरु शत्रुघ्नहू रामजीको संशय संयुक्त देखके तिस प्रकार हो बैठे. तब.

दशरथ यह वार्त्ता सुनके रामजीके पास आय बैठे अरु देखे तब महा कृश जैसा होय गया है. इस चिंता करके आतुर हुआ. कि हाय २ इनकी क्या अवस्था हुई है! इस शोकके लिये रामजीको गोदमें बैठाये! अरु पूँछने-लगे, कोमल सुंदर शब्द करके बोले कि हे पुत्र! तुमको क्या दुःख प्राप्त भया है जिसकर तुम शोकवान हुये हो? तब रामजीने कहा कि हे पिता! हमको तो दुःख कोऊ नहीं है. ऐसे कहिकै चुप होरहा. जब केतेक दिवस इस प्रकार व्यतीत भये, तब राजाभी शोकवान् हुआ. अरु सब स्त्रियांभी शोकवान् भई. अरु राजा, मंत्री, मिलके विचार करने लगे, कि, पुत्रका किसी ठौर विवाह करना. अरु यहभी विचार किया-कि क्या हुआहै, जो मेरे पुत्र शोकवान् होय रहते हैं, तब वशिष्ठजीसे पूँछा कि हे मुनीश्वर! मेरे पुत्र शोकमें क्यों रहते हैं! तब.

वशिष्ठजीने कहा हे राजन्! महापुरुषको जो क्रोध होता है, सो किसी अल्प कारण कर नहीं होता. अरु मोह भी अल्प कारण कर नहीं होता. अरु शोक भी अल्प कारण कर नहीं होता. जैसे पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, जो महाभूत हैं, सो अल्प कार्यमें विकारवान

नहीं होते. जब जगत्की उत्पत्ति प्रलय होती है, तब विकारवान होते हैं. तैसे महापुरुष अल्प कार्य्यमें विकारवान नहीं होते. तातें हे राजन्!तुम शोक करने योग्य नहीं. अरु रामजी जो शोकवान हुआ है, सो भी किसी अर्थके निमित्त होयगा, पाछे इसको सुख मिलेगा, तुम शोक मतकरो.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! ऐसे वशिष्ठजी अरु राजा दशरथ विचार करते थे;तिसकालमें विश्वामित्रजी अपने यज्ञके सहाय अर्थ आवत भये. राजा दशरथके गृहमें आयँकर पौरियासों कहत भये;कि राजा दशरथसे कहो. गाधिका पुत्र विश्वामित्र बाहर खडे हैं तब इननें और बडे पौरियाको जाय कहा. हे स्वामी! एक बडा तपस्वी द्वारपै आय खडा है, उसने हमसे कहा कि राजा दशरथके पास जाय कहो, कि विश्वामित्र आये हैं. सो सुनके राजा दशरथके पास गये, अरु कहा कि विश्वामित्र, गाधिका पुत्र बाहर खडा है. अरु संपूर्ण मंडलेश्वर कर पूज्य जो राजा दशरथ सबन सहित अपने सिंहासन पर बैठा है, अरु बडे तेज कर संपन्न है; तिससे कहा-कि विश्वामित्रने हमसे कहा है कि दशरथके पास जाय कहो, कि विश्वामित्र बाहर खडा है-

हे भारद्वाज! जब इस प्रकार बडे पौरियाने राजासों कहा, तब राजा सुनकर सुवर्णके सिंहासनसे उठ खडा

हुआ, अरु चरणों करके चला. एक ओर वशिष्ठजी, और दूसरी ओर वामदेवजी. अरु सुभटकी नाईं मंडलेश्वर स्तुति करत चले. जब जहांते विश्वामित्रजी दृष्टि आये तब तहांते प्रणाम करने लगे. जहां पृथ्वी पर शीश राजाका लागे तहां पृथ्वीभी हीरा, मोतीकी सुंदर होय जावे. इस प्रकार शीश नमावत नमावत राजा विश्वामित्रके आगे चला. अरु बडी जटा शिरपरते कांधपर परीहैं. ऐसे विश्वामित्र अग्निकी नाईं प्रकाशित हैं, अरु शरीर सुवर्णकी नाईं प्रकाशता है. अरु हृदयमें शांति कोमल स्वभाव जाननेमें आवे ऐसे, अरु महातेजवान, सुंदर कांति, अरु शांतिरूप, अरु हाथमें बांसकी लकडी, अरु महा धैर्यवान ऐसे विश्वामित्रको प्रणाम करत राजा दशरथ चरणोंके ऊपर जाय गिरा जैसे सूर्य सदा शिवके चरणों पर जाय गिरेथे, तैसे मस्तक नवाय कर कहा मेरे बडे भाग्य हुए जो तुम्हारा दर्शन हुआहै. हमारे ऊपर तुमने बडी अनुग्रह किया है. हमको बडा आनंद प्राप्त हुआहै. जो अनादि, अनंत है, आदि, मध्य, अंतते रहित अविनाशी है; ऐसा जो अकृत्रिम आनंद है, सो तुम्हारे दर्शन कर मुझको प्राप्त हुआ दृष्टिमें आवता है. हे भगवन्! आज मेरे बडे भाग्य हुए हैं, जो मैं धर्मात्माके गिननेमें आऊंगा. काहेते कि जो तुम मेरे कुशल निमित्त आये हो. हे भगवन्! तुम्हारा

मारे लक्षमें नहीं था. अरु तुमने बडा अनुग्रह किया है. जैसे सूर्य कोई कार्य करनेको पृथ्वी पर आवे, तैसे तुम मुझको दृष्टिमें आवते हो. अरु सबते उत्कृष्ट दृष्टिमें आवते हो. काहेते कि तुममें दो गुण हैं; एक तो क्षत्रियका स्वभाव तुम्हारेमें है, अरु दूसरा ब्राह्मणका स्वभाव भी तुम्हारेमें भासता है. अरु शुभ गुण कर संपूर्ण हो. हे मुनीश्वर तुम क्षत्रियमेंते ब्राह्मण भये हो. ऐसी कोईकी सामर्थ्य नहीं देखी. अरु तुम्हारा शरीर प्रकाश वान दीखता है. अरु जिस मार्गसे तुम आये हो, अरु जिस मार्गमें तुम दृष्टि करत आये हो, तहां ते अमृत वृष्टि करत आये हो, ऐसा दृष्टि आवता है. हे मुनीश्वर! तुम आये सो तुम्हारे दर्शन कर मुझको बडा लाभ हुआ है.

हे भारद्वाज! इस प्रकार राजा दशरथ विश्वामित्रसे बोले. अरु वशिष्ठजी आयकर विश्वामित्रको कंठ लगायके मिले. और जो मंडलेश्वर राजाथे सो बहुत प्रणाम कर इस प्रकार सब मिले. तब विश्वामित्रको राजा दशरथ घरमें ले आये. जहां राजसिंहासन था, तहां आनकर बिठाया. अरु वशिष्ठ, वामदेव, को बिठाये. और राजा दशरथने विश्वामित्रका पूजन किया. अरु अर्घ्य पादार्चन करके प्रदक्षिणा करी. ब-

हुरि वशिष्ठजीने विश्वामित्रका पूजन किया अरु विश्वामित्रने वशिष्ठजीका पूजन किया. ऐसे अन्योन्य पूजन हुआ. इस प्रकार पूजन करके सब अपने अपने आसन पर यथायोग्य बैठे. तब.

राजा दशरथ बोले. हे भगवन्! हमारे बडे भाग्य हैं जो तुम्हारा दर्शन हुआ. जैसे कोऊ तप्तको अमृत प्राप्ति होवे; अरु जन्मांधको नेत्र प्राप्त होवें, सो आनंद पावे. जैसे निर्धनको चिंतामणि प्राप्त होवे, अरु आनंदको पावे. अरु जैसे किसीका बांधव मुवा होय, सो विमान पर चठा हुवा आकाशते आवे, उसको जैसा आनंद प्राप्त होवे; तैसे तुम्हारे दर्शन कर, मैं आनंदको प्राप्त हुआ हों. हे मुनीश्वर, तुम्हारा आवना जिस अर्थ हुआहै, सो कृपा कर कहो. अरु जो तुम्हारा अर्थ है, सो पूर्ण हुवा जानो. काहेते कि ऐसा पदार्थ कोई नहींहै, जो तुमको देना कठिन है. सब कछु मेरे विद्यमान है. जो तुम्हारा अर्थ है, सो निश्चय कर जानने योग्य होय रहा है. जो कछु तुम आज्ञा करोगे सो मैं देऊंगा,

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे विश्वामित्रागमन वर्णनं नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

चतुर्थःसर्गः ४

अथ विश्वामित्रेच्छा वर्णनं.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! जब इस प्रकार राजा दशरथने कहा, तब मुनिनमें शार्दूल जो विश्वामित्र, सो बहुत प्रसन्न भये. अरु रोम खडे हो आये. जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाको देखके क्षीर सागर प्रसन्न होताहै, तैसे प्रसन्न होकर कहत भये-हे राजशार्दूल! तुम धन्य हो! ऐसा क्यों न होवे. जो तुम्हारेमें दो गुण श्रेष्ठ हैं. एकतो रघुवंशी हो, दूसरा वशिष्ठजी तुम्हारा गुरु है; ताकी आज्ञामें चलते हो. ताते,

हे राजन्! जो कछु मेरा प्रयोजन है सो तुम्हारे आगे प्रगट करता हों; श्रवण करो. दशरात्र यज्ञका मैंने आरंभकिया है; सो जब यज्ञको करने लगताहों तब राक्षस खर अरु दूषण उस यज्ञको तोर डारते हैं.जहां जहां मैं जायकर यज्ञ करता हों, तहां तहां आय कर अपवित्र जो रुधिर अरु मांस, अरु अस्थि सो डारते हैं. सो स्थान यज्ञ करने योग्य नहीं रहता. और बहुरि मैं और ठौर करने लगताहूं; तहां भी उसी प्रकार अपवित्र कर जाते हैं. तिसके नाश करनेके निमित्त मैं तुम्हारे पास आया हों.कदाचित्त ऐसे कहोकि तुम भीतो समर्थ हो;तो हे राजन्! मैंने यज्ञका आरंभ किया है तिसका

अंग क्षमाहै. जो उसको मैं शाप देऊं, तो वह भस्म होजावे, परंतु शाप क्रोध विना होत नाहीं. अरु क्रोध कियेते यज्ञ निष्फल होजाता है. अरु जो मैं चुपहो रहों तो वह राक्षस अपवित्र वस्तु डार जाते हैं. ताते मैं तुम्हारी शरण आयाहों,मेरा कार्य करो. हे राजन्! तेरा जो रामजी पुत्र है, सो कमलनयन काकपक्ष संयुक्त है. अर्थ यह जो बालक दूसरी शिखा सहित रहे हैं. तिसको मेरे साथ देहु, जो राक्षसोंको मारें; तब मेरा यज्ञ सफल होय. और तुमको ऐसा शोक करना नहीं चाहिये कि मेरा पुत्र बालक है यह तो बडे इंद्रके समान शूरबीर हैं. इनके समीप वह राक्षस ठरह न सकैंगे. जैसे सिंहके सन्मुख मृगके बच्चे ठहर नहीं सकते, तैसे तेरे पुत्रके सन्मुख राक्षस न ठरह सकैंगे. ताते मेरे साथ उनको तुम देहु. जो तुम्हारा भी धर्म रहै अरु यशभी रहै. मेरा कार्यभी होवे. इसमें संदेह नहीं करना.

हे राजन्! ऐसा पदार्थ त्रिलोकीमें कोई नहीं जो रामजीका किया कछु न होवे. इसीते मैं तेरे पुत्रको लिये जाता हों. यह मेरे करसों ढांपा रहेगा; अरु इसको कोई विघ्न मैं होने न देऊंगा, अरु जो तेरे पुत्र वस्तु हैं सो मैं जानताहूं; और वशिष्ठजीहू जानते हैं. और जो ज्ञानवान त्रिकालदर्शी होवेगा, सो भी इनको जानता होयगा. और कोईकी सामर्थ्यता नहीं है जो इनको जा-

नसकै. ताते तुम इनको मेरे साथ देहु, जो मेरे कार्यकी सिद्धि होय.

हेराजन्! जो समय पर कार्य होता है,सो थोरे करनेसे- [illegible] द्वितियाके [illegible] खके एक तंतुका दान किया होय सोभी बहुत है; पीछे वस्त्रका दान कियेते भी तैसा कार्य सिद्धि नहीं होता. तैसे समय कर थोडा कार्य भी बहुत सिद्धिको देताहै. अरु समय बिना बहुत कार्य भी थोरे फलको देताहै.ताते तुम मेरे साथ अब रामजीको दीजे.

खर, दूषण, ए बडे दैत्य हैं. सो आय कर मेरा यज्ञ खंडन करते हैं. जब रामजी आवैंगे तब वह भाग जायँगे.रामजीके आगे खडे न होय सकैंगे.इनकेते जसे वह सब अल्प बल हो जावेंगे. जैसे सूर्यके तेज करके तारागणका प्रकाश छिप जाता है, तैसे रामजीके दर्शनसे वह स्थित न रहैंगे. जैसे गरुडके आगे सर्प नहीं ठहर सक्ते, तैसे रामजीके आगे राक्षस न ठहर सकैंगे. देख कर भाग जायँगे. ताते तुम मेरे साथ देहु. जो मेरा कार्य होवे; अरु तुम्हारा धर्म भी रहै. रामजीके निमित्त संदेह मत करना. वह राक्षसकी सामर्थ्य नहींजो रामजीके निकट आवे.अरु मैंभी रामजीकी रक्षा करूंगा.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! जब विश्वामित्रने ऐसा

कहा, तब राजा दशरथ सुनकर चुपरहा अरु गिर-पडा. एक मुहूर्त्त पर्यंत पडा रहा.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे विश्वा-मित्रेच्छा वर्णनं नाम चतुर्थः सर्गः ४

पंचमः सर्गः ५

अथ दशरथोक्ति वर्णनं।

वाल्मीकोवाच, हेभारद्वाज ! एक मुहूर्त्त पीछे राजा उठे, अरु महादीन से होगये. अरु महा मोहको प्राप्त होय गये. धैर्यते रहित होकर बोले.

राजोवाच, हे मुनीश्वर ! तुम क्या कहा? रा-मजी अभी तो कुमार हैं शस्त्रविद्या, अस्त्रविद्या भी सीखे नहीं हैं अभी तो फूलनकी सेज्यापर शयन क-रने वारे हैं. वह युद्धको क्या जाने. अंतःपुरमें स्त्रिय-नके पास बैठने वाले हैं, राजकुमार बालकनके साथ खेलनेवाले हैं. और कदाचित्त रणभूमि देखीहू नहीं है. भ्रुकुटीको चढायकै कदाचित्त युद्ध भी नहीं किया. अरु कमलकी नाईं जिसके हाथहैं, अरु कोमल जि-सका शरीर है. वह राक्षसके साथ युद्ध कैसे करैगा. कहूं पत्थरका अरु कमलका भी युद्ध हुआ है. । राम जीका वपु कमल समान कोमल है. अरु वह महा क्रूर पत्थरकी नाईं है; उनके साथ युद्ध कैसे होवेगा.

हे मुनीश्वर! मैं नव सहस्र वर्षका हुआ हों, अब दशवां सहस्र लगा है. वृद्ध हुआ हों. यह वृद्धावस्थामें मेरे घर पुत्र हुवे हैं. सो चारोंके मध्य रामजी कमल नयन, कछु षोडश वर्षका हुआ है. अरु मुझको बहुत प्रियतम है. अरु मेरा प्राण है. रामजी बिन मैं एक क्षण भी रहि नहीं सकता. जो तुम इनको ले जाओगे, तो मेरा प्राण निकस जायगा! मैं मृतक हो जाऊंगा.

हे मुनीश्वर! केवल मेराई ऐसा सनेह सो नहींहै. उसका भाई जो लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, अरु उसकी मातां जो है, सो सबहीके प्राण रामजी हैं. जो तुम रामजीको ले जाओगे, तो हम सबही मर जायँगे. वियोग करके जो हमको मारने आये हो तो ले जाओ. हे मुनीश्वर! मेरे चित्तमें रामई पुर रहा है. तिसको मैं तुम्हारे साथ कैसे देऊं. मैं उसको देखत देखत प्रसन्न होता हों. जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाको देख कर क्षीर समुद्र प्रसन्न होता है, अरु चंद्रको देख कर चकोर प्रसन्न होता है, अरु मेघ बूंदको देख कर पपीहा प्रसन्न होता है, तैसे रामजीको देख कर मैं प्रसन्न होता हूं. तब रामजीके वियोग कर मेरा जीवना कैसा होयगा. हे मुनीश्वर! मेरेको रामजी जैसी प्रिय स्त्री भी नहीं. अरु धन भी ऐसा प्रिय नहीं. अरु राज्य भी ऐसा प्रिय

नहीं. और पदार्थ भी मुझको कोई रामके समान नहीं है. ऐसा रामजी प्यारा है.

हे मुनीश्वर! तुम्हारे वचन सुनके बड़े शोकको प्राप्त हुआहूं. मेरे बडे अभाग्य आये हैं, जो तुम्हारा आवना इस निमित्त हुआ है. तुम्हारे वचन सुन कर जैसे कमलके ऊपर पत्थरकी बर्षा होय ऐसी व्यथा मेरेको होती है. अरु पत्थरकी बर्षाते जैसे कमल नष्ट होजाते हैं, तैसे तुम्हारे वचन ते मेरी नष्टता हो जायगी. जैसे बडा मेघ चढ आवे, तामें बडा पवन चलै तब मेघकी गंभीरताका अभाव होय जाय; तैसे तुम्हारे वचनते मेरी बडी प्रसन्नताका अभाव होय जाता है! जैसे बसंत ऋतुकी मंजरी, ज्येष्ठ आषाढमें सूख जाती है,

तुम्हारे वचन सुन मेरे हृदयकी प्रसन्नता जर जाती है! हे मुनीश्वर! रामजीको देनेमें मैं समर्थ नहीं जो तुम कहो तो एक अक्षौहणी सेना मेरी है, सो बडे शूरबीरकी है, जिसको शस्त्रविद्या, अस्त्रविद्या, मंत्र विद्या, सब आवती है. और सबै युद्धमें चतुर हैं. तिनके साथ मैं तुम्हारे संग चलता हों वहां जायके मैं उनको मारूंगा. अरु हस्ती, घोडा, रथ, प्यादे, ऐसी चतुरंगिनी सेनाको साथ ले जाओ. अरु जो तुम्हारे यज्ञके खंडनहारे हैं तिनको नाश करो. अरु एकके साथ मैं युद्ध नकर सकूंगा. जो कदाचित्त यज्ञ खंडनहारा कुबेरका

भाई, अरु विश्रवाका पुत्र, रावण होवे तो उसके साथ युद्ध करनेको मैं समर्थ नहीं.

हे मुनीश्वर! आगे मेरेमें बडा पराक्रम था, वैसा त्रिलोकीमें किसीको नहीं था. जो मेरे निकट मारनेको आता, तो वाको मैं मार देता. अब मेरी वृद्धावस्था हुई है; अरु देह जर्जरी भावको प्राप्त हुआ है. इस कारण रावणके साथ युद्ध करनेको मैं समर्थ नहीं हूं.

हे मुनीश्वर! मेरे बडे अभाग्य हैं जो तुम्हारा आना इस निमित्त हुआ है. अब मेरा वैसा पराक्रम नहीं. मैं रावण सों कँपता हों. केवल मैं ही नहीं कँपता; इंद्रादिक देवता सब रावणसे कँपते हैं; अरु राक्षस सब उसके वश वर्त्तते हैं. अब किसीको शक्ति नहीं है जो रावणके साथ युद्ध करै? इस कालमें वह बडा शूरवीर है.

हे मुनीश्वर! जब मेरी समर्थता भी नहीं रही; तो राजकुमार रामजी कैसे समर्थ होवेंगे. अरु जिस रामजीको लेने तुम आये हो, सो रोगी हो रहा है. उसको चिंता ऐसी आय लगी है, जिससे वह महा दुर्बल होगया है. अरु अंतःपुरमें एकांतमें बैठा रहता है. खाना पीना इत्यादिक जो राजकुमारकी चेष्टा है सो सब उसको विरस होगई है. अरु मैं नहीं जानता कि उसको क्या दुःख प्राप्त हुआ है. जैसे कमल सूखके पीत वर्ण होजाता है, तैसा उसका मुख होगया है. उसको

युद्ध करनेकी समर्थता नहीं. अरु अपने स्थानते बाह-
रकी पृथ्वी भी नहीं देखी है. सो युद्ध कैसे करैंगे।

हे मुनीश्वर! वह युद्ध करनेको समर्थ नहीं है. अरु
हमारे प्राण वही हैं. जो उसका वियोग होवेगा तो हमा-
रा जीवना नहीं होवेगा. जैसे जल बिना मछली जीवती
नहीं है, तैसे हम रामजी बिना कैसे जीवेंगे. अरु जो
राक्षसके युद्ध निमित्त कहो तो हम तुम्हारे साथ चलें, अ-
रु रामजी युद्ध करनेको योग्य नहीं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे दशरथोक्ति
वर्णनं नाम पंचमः सर्गः ५ ॥

षष्ठःसर्गः ६।

अथ राम समाज वर्णनं.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! जब इस प्रकार राजा
दशरथने कहा, तब महा दीन जैसे मोह सहित अधी-
र्यवान वचन सुनकर, क्रोधसों विश्वामित्र कहत भये.

विश्वामित्रोवाच, हेराजन्! तू अपने धर्मको सुमि.
रन कर. यह प्रतिज्ञा तैंने करीहै, "जो तेरा अर्थ
होवेगा सो पूर्ण करूंगा; और पूर्ण हुवा जानना" ऐसा
तुमने कहा है; अब तू अपने धर्मको त्यागता है और जो
तू सिंह हुआ मृगोंकी नाईं भागता है तो भाग; परंतु

आगे रघुवंशमें ऐसा कोई नहीं हुआ. जैसे चंद्रमाके मंडलमें शीतलता होती है, अग्नि निकसता नहीं है. तैसे तुम्हारे कुलविषे ऐसा कदाचित् नहीं हुआ; अरु जो तू करता है तो कर, हम उठ जायँगे. काहे ते कि शूने गृहते शूनेई जाता है. परंतु यह तुमको योग्य नथा. अरु तुम बसते रहो, राज्य करते रहो, अरु जो कछु होवेगा सो हम समझ लेंयगे. अरु जो अपने धर्मको तू त्यागता है, तो त्याग दे.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! इस प्रकार जब अत्यंत क्रोधवान् होकर विश्वामित्र बोला, तब इसके क्रोध करनेसे पचास कोटि पृथ्वी कँपने लगी. अरु इंद्रादिक देवता भी भयको प्राप्त हुवे; कि ये क्या हुवा. तब वशिष्ठ जी बोले.

वशिष्ठोवाच, हे राजा! इक्ष्वाकुके कुलमें सब परमार्थी हुए हैं. और तू अपने धर्मको क्यों त्यागता है. मेरे विद्यमान तैंने कहा है, "जो तुम्हारा अर्थ होवेगा, सो मैं पूर्ण करूंगा." अब तू क्यों भाजता है? रामजीको इसके साथ दे. अरु यही तेरे पुत्रकी रक्षा करेंगे. जैसे सर्पते अमृतकी रक्षा गरुड करता है, तैसे तेरे पुत्रकी रक्षा यह करेगा. अरु यह कैसा पुरुष है, सो श्रवण कर-इसके समान बल किसीका नहीं. साक्षात् बलकी मूर्त्ति है, अरु धर्मात्मा है. साक्षात् धर्मकी मूर्त्ति है. अरु

ऐसा तपस्वी कोऊ नहीं है. अरु तपकी खानि है. अरु इसके समान कोऊ बुद्धिमान नहीं है अरु इसके समान कोई शूरमा नहीं है. अरु अस्त्र शस्त्र विद्यामें भी इसके तुल्य कोऊ नहीं है. काहेते कि जो दक्ष प्रजापतिकी दो- पुत्री थीं. एक जय, अरु दूसरी सुभगा,सो ये ऋषिकों दीनी है. अरु जयथी, तिसमें दैत्योंके मारने निमित्त पांचसौ पुत्रोंको प्रगट किये थे, अरु सुभगाके भी पां- चसौ पुत्र भये थे सो सब दैत्योंके नाश निमित्त उत्पत्ति कियेथे. सो स्त्रियां इसके विद्यमान मूर्त्ति धरके स्थित हुई हैं. ताते इसको जीतनेको कोऊ समर्थ नहीं है. जिसका साथी विश्वामित्र होवे, सो त्रिलोकीमें काहू सों नहीं डरे. ताते इसके साथ तू अपना पुत्र दे, अरु संशय मतकर. किसीकी सामर्थ्य नहीं जो इसके होते तेरे पु- त्रको कछु कोऊ कहिसके. इसकी दृष्टिके देखनेते दुः- खका अभाव होजाताहै. जैसे सूर्यके उदयते अंधकार- का अभाव होजाताहै तैसे.

हे राजन्! इसके साथ तेरे पुत्रको खेद कहाहोवे. तू इक्ष्वाकुके कुलकाहै, अरु दशरथ तेरा नामहै. सो तेरे जैसे धर्म्मात्मा जब अपने धर्ममें स्थित नरहे तो और जीवते धर्मकी पालना कैसे होयगी. जो कछु श्रेष्ठ पुरुष चेष्टा करतेहैं; तिनके अनुसार और जीव करतेहैं. जो तुम सारखे अपने वचनकी पालना नकरैंगे, तब और

सों कहा बनैगी? अरु तुम्हारे कुलमें ऐसा कबहूं नहींहुवा; ताते अपने धर्मको त्यागना योग्य नहीं. तू अपने पुत्रकोदे. अरु जो तू उनके भयकर शोकमान होवे, तौभी ना मतिकहै. और मूर्त्तिधारी काल आयकर स्थित होवे तौभी विश्वामित्रके विद्यमान तेरे पुत्रको कछु होवे नहीं. तू शोक मत कर; अपने पुत्रको इसके साथ दे. अरु जो नदेगा, तौ दो प्रकारका तेरा धन नष्ट होवेगा-एक धन यह है कि जो कूप, बावरी, ताल, कराये होयँगे, तिनका जो पुण्य है, सो नष्ट हो जावेगा. अरु तप, व्रत, यज्ञ, दान, स्नानादिकका जो पुण्य है, अरु क्रिया है तिस सबका फल नष्ट होजावेगा, औ तेरा गृह निरर्थ होय जावेगा. ताते मोह अरु शोकको त्याग; अरु अपने धर्मका सुमरण कर. रामजी इसके साथ दे दे. तेरे सब कार्य्य सफल होवेंगे.

हे राजन् ! जो इस प्रकार तुमको करना था; तो प्रथमही बिचारकर कहना था. काहेसे कि विचार विना काम करनेका परिणाम दुःख होता है. ताते इसके साथ अपने पुत्रको देहु.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार वशिष्ठजीने कहा, तब राजा दशरथ धैर्यवान होकर, भृत्योंमें जो श्रेष्ठ भृत्यथा, वाको बुलायकर कहत भया. हे महाबाहु! रामजीको ले आओ. तब इसके साथ जो चाकर

अंतर बाहर आवने जावने वारा था, अरु छलते रहित था, सो राजाकी आज्ञा लेकर रामजीके निकट गया, और एक मुहूर्त पाछे पीछा आया. अरु कहत भया- हे देव! रामजी तो बडी चिंतामें बैठे हैं. मैंने रामजीसे वारं- वार कहा कि अब चलिये, तब वह कहते हैं कि चले हैं. ऐसे कहि कहि चुप हो रहते हैं.

हे भारद्वाज! इस प्रकार जब राजाने श्रवण किया तब कहा. रामजीके मंत्री अरु टहलुए सब बुलावो. से- वक सबको बुलाय निकटलाये.तब राजा आदरसों कोम- ल सुंदर वचन युक्तिसे कहत भया-हे रामजीके प्यारे! रामजीकी कहा दशाहै. और ऐसी दशा क्यों कर हुई है. सो सब क्रम करके कहो.

मंत्री उवाच, हे देव! हम कहा कहैं; जेते हम कछु दृष्ट आवते हैं सो सब आकार अरु प्राण देखने मात्र हम हैं. अरु हम सब मृतक हैं काहेते कि हमारा स्वामी रामजी बडी चिंताको प्राप्त हुआ है. हे राजन्! जिस दिनसे रघुनाथजी तीर्थ कर आये हैं तिस दिनसे चिंता- को प्राप्त भये हैं. जब उत्तम भोजन हम लेजातेहैं, और पान करनेका पदारथ, और पहरनेका पदारथ, अरु देखनेका पदारथ कछु लेजातेहैं, सो सुखदाई पदारथ रस सहित तिसे देखके किसी प्रकार प्रसन्न होते हमने नहीं देखाहै. ऐसी चिंताके विषे वह लीनहैं. कि देखता

भी नहीं. अरु जो देखताहै तो क्रोध करताहै. अरु सुख-
दाई पदारथका निरादर करताहै. अरु अंतःपुरमें इनकी
माता, नानाप्रकारके हीरे अरु मणिके भूषण देतीहै, तो
उनको भी डारदेताहै. नहींतो किसी निर्धनको दे देताहै.
प्रसन्न किसी पदारथपै होते नहींहैं सुंदर स्त्रियां खडी वि-
द्यमान होतीहैं, नानाप्रकारके भूषणहू सहित महामोह
करनेहारी निकट होइकर लीला करतीहैं. कटाक्षहू स-
हित प्रसन्न करने निमित्त; तौभी विषवत जानतहै,
उनकी ओर देखता भी नहीं. जैसे पपैया और जलको
देखता भी नहीं जब अंतःपुर बिषे निकसता है, तब
उनको देखकर क्रोधवान होता है;

हे राजन्! और कछु उसको भला नहीं लगता.
किसी बडी चिंता विषे मग्नहै. और तृप्त होकर भोजन
भी नहीं करता, क्षुधावंत रहताहै. और न कछु पहरने,
खाने, पीनेकी इच्छा रखताहै; न राज्यकी इच्छाहै, न
किसी इंद्रियहूके सुखकी इच्छा है. महा उन्मत्तकी नाईं
बैठा रहता है. अरु जब कोई सुखदाई पदारथ फूलादि-
क लेजातेहैं, तब क्रोध करता है. हम नहीं जानते कि
क्या चिंता उसको भई है. एक कोठरीमें पद्मासन करि
अरु हाथमें मुख धरके बैठा रहताहै. अरु जो कोऊ
बडा मंत्री आयके पूछता है, तब उससे कहताहै-कि तुम
जिसको संपदा मानते हो सोई आपदाहै. जिसको आ-

पदा जानते हो सो आपदा नहीं है. अरु नानाप्रकारके संसारके पदारथ जो रमणीय कर जानते हो, सो सब झूठे हैं. याहीमें सब डूबे हैं. ये सब मृग- तृष्णाके जलवत् हैं; तिनको सत्य जान मूर्ख जो हरिण सो दौरते हैं. अरु दुःख पाते हैं.

हे राजन्! कदाचित् बोलते हैं तो ऐसे बोलते हैं. और कछु उनके उरमें सुखदायी नहीं भासताहै. अरु जो हम हांसीकी वार्त्ता करतेहैं. तो वह हँसता नहीं है. जिस पदारथको प्रीति संयुक्त लेते थे तिस पदारथको अब डारि देतेहैं अरु दिन दिनपै दुर्बल हुये जाते हैं अरु जब अंतःपुरमें स्त्रियोंके पास बैठताहै; अरु वह नाना-प्रकारकी चेष्टा रामजीको प्रसन्न करनेके निमित्त देखा-वती हैं उनको भी देखके प्रसन्न नहींहोता अरु जैसे मे-घकी बूंदतें पर्वत चलायमान नहींहोतेहैं, तैसे आप च-लायमान नहीं होते हैं. अरु जो बोलताहै तो ऐसे क-हता है-न राज्य सत्य है, न भोग सत्य है, न जगत् सत्य है, नामित्र सत्य हैं; मिथ्या पदारथके निमित्त मूर्ख परे य-त्न करते हैं. जिनको सत्य जानते हैं अरु सुखदायक जानते हैं, सो बंधनका कारण है, और कहा कहिये. जो कोई उनके पास राजा अथवा पंडित जावे तिनको देख-कर कहता है-यह पशु हैं, आशारूपी फांसीसे बांधे हुयेहैं

हे राजन्! जो कछु भोग्य पदारथ हैं तिनको देखकर

उसका चित्त प्रसन्न नहीं होता. अरु देखके क्रोधवान होता है. जैसे पपैया मारवाडमें आवे, अरु मेघकी बूंदहू देखता नहीं है अरु खेदवान होता है. तैसे रामजी विषय हूते खेदवान होताहै. हे राजन्! इन करके हर्षवान नहीं होता, ताते हम जानतेहैं कि इनको परमपद पानेकी इच्छा है. परन्तु कदाचित् मुखते सुना नहीं है. अरु त्यागका अभिमान भी कदाचित् सुना नहीं है. कबहूं गाताहै, अरु बोलता है तब ऐसे कहता है-हाय हाय! मैं अनाथ मारागया हूं. अरे मूर्ख तुम संसार समुद्रमें क्यों डूबते हो. यह संसार परम अनर्थका कारण है, इसमें सुख कदाचित् हू नहीं है. इससे छूटनेका उपाय करो.

हे राजन्! ऐसा भी कभी हम सुनते हैं. अरु किसीके साथ बोलता नहीं है. न हँसता है न मंत्रीके साथ, न अपने अंतःपुरनकी स्त्रियोंके साथ न माताके साथ बोलता है. किसी परम चिंतामें मग्न है. अरु किसी पदारथ कर आश्चर्यवान नहीं होता. जो कोऊ कहे कि आकाशमें बाग लगाहै, तिसमें फूल फूले हैं तिनको मैं ले आया हूं, तिसको सुनकर भी आश्चर्यवान नहीं होता. सब भ्रम मात्र देखता है. न किसी पदार्थते उसको हर्ष होता है. न किसी पदार्थते उसको शोक होता है, किसी बडी चिंतामें मग्न है सो किसी को चिंता निवारनेमें हम समर्थ न-

हीं देखते हैं. वह तो चिंताके समुद्रमें मग्न है. हे राजन्! यह चिंता हमको लगरही है; कि रामजीको न खानेकी इच्छा है, न पहिरनेकी इच्छा है, न बोलने की, न देखनेकी इच्छा रही है, न किसी कर्मकी इच्छा रही है. ताते मृतक नहो जावे ऐसी हमें चिंता है. अरु जो कोऊ कहता है कि तू चक्रवर्त्ती राजा है, तेरो बडा आयुर्बल होइ, अरु बडे सुखको पाओ. तब तिसके वचन सुन कठोर बोलता है.

हेराजन्! केवल रामजीहीको ऐसी चिंता नहीं; लक्ष्मण अरु शत्रुघ्नको भी ऐसी चिंता लगरही है. रामको देखकर जो कोऊ उनकी चिंता दूर करनेहारा होवे तो करे; नहीं तो बडी चिंता मध्य डूबे रहैंगे. किसी पदारथकी इच्छा उनको नहीं रहती है.

हे राजन्! अब कहा कहते हौ? तेरा पुत्र अब अतीत ह्वै रहा है. एक वस्त्र उपरना ओढकर बैठा है ताते सोई उपाय करो, जिससे उसकी चिंता निवृत्त होवे.

विश्वामित्रोवाच, हे साधु! जो रामजी ऐसे हैं, तो हमारे पास विद्यमान लाओ, हम उसका दुःख निवृत्त करैंगे. हे राजा दशरथ! तू बडा धन्यहै. कि जिसका पुत्र विवेक अरु वैराग्यको प्राप्त भया. हे राजन्! हम तेरे पुत्रको परमपदकी प्राप्ति करैंगे. अभी सब दुःख उनके मिट जायँगे. हम वशिष्ठादि जो बैठेहैं सो एक युक्तिकर उपदेश करैंगे. तिस करके उनको आत्मपदकी प्राप्ति

होवेगी. तब वह दशा तेरे पुत्रकी होवेगी जो लोष्ट पत्थर अरु सुवर्णको समान जानेंगे. अरु जो कछु तुम्हारे क्षत्रियकी प्रवृत्तिका आचरणहै सो करेंगे. अरु हृदयमें प्रेमते उदासी होवेंगे. ताते हे राजन्! उस करके तुम्हारा कुल कृतकृत्य होवेगा. ताते रामजीको शीघ्र बोलावहु.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! ऐसे मुनींद्रके वचन सुनकर राजा दशरथ मंत्री अरु नौकरोंसे कहत भया-कि रामजी अरु लक्ष्मण अरु शत्रुघ्नको लेआओ. जैसे हरिणीको हरिण ले आताहै तैसे ले आओ. जब राजा दशरथने ऐसा कहा, तब मंत्री अरु भृत्य रामजीके पास जायके कहा; तब रामजी आये सो आवत आवत राजा दशरथ, अरु वशिष्ठजी, अरु विश्वामित्रको देखे, कि तीनोंके ऊपर चमर होयरहेहैं; अरु बडे मंडलेश्वरबैठेहैं. तिननेहू रामजीको देखे. जो शरीरते कृश होय रहे हैं. जैसे महादेवजी स्वामिकार्तिकको आवत देखे, तैसे रामजीको आवत राजादशरथ देखत हैं. तहां रामजी आयकर राजा दशरथजीके चरणोंपै मस्तक लगाय नमस्कार किया. फिर तैसेई वशिष्ठजीको अरु विश्वामित्रजीको नमस्कार किया. बहुरि सभामें जो ब्राह्मण बडे बडे बैठे थे, तिनकोहू नमस्कार किये. अरु जो बडे बडे मंडलेश्वर बैठेथे तिनने उठकर रामजीको प्रणाम किया. फिर,

राजा दशरथने रामजीको गोदमें बैठाया. अरु देखकर मस्तक चूमा. अरु बहुत प्रेम पुलकित होय रामजीसों कहत भया- हेपुत्र ! केवळ विरक्तता कर परमपदकी प्राप्ति नहीं होतीहै. अरु वशिष्ठजी गुरु हैं, तिनके उपदेशकी युक्ति कर परमपदकी प्राप्ति होयगी.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी ! तुम धन्यहो, अरु बडे शूरमे हो, जो विषय रूपी शत्रु तुमने जीते हैं जो विषय अजीत है, अरु दुष्ट है ताको तुमने जीता ताते तुम धन्य हो, धन्य हो !

विश्वामित्रोवाच, हे कमलनयन राम ! अपने अंतरकी चपलताहै, तिसको त्याग करके, जोकछु तुम्हारा आशय होय सो प्रगट कर कहो. हे रामजी ! यह जो तुमको मोह प्राप्त हुआहै; सो कैसे अरु किस कारण हुआहै ? अरु केताकहै ? सो कहो. अरु जो अब कछु तुमको बांछित होय सो कहो, हम तुमको तिसीपदमें प्राप्त करैंगे, जिसमें दुःख कदाचित्त होवे नहीं. और आकाशको चूहा काटि नहीं सकत है, तैसे तुमको पीडा कदाचित् नहोवेगी. हे रामजी, तम्हारे संपर्ण दुःख नाश कर तुम संशय मतकरो. जोकछु तुम्हारा वृत्तांत होय सो हमसे कहो.

वाल्मीकोवाच, हेभारद्वाज ! जब ऐसे विश्वामित्रने कहा, सो सुनकर रामजी बहुत प्रसन्न भये; अरु

शोकको त्यागदिया. जैसे मेघको देखके मोर प्रसन्न होता है; तैसे विश्वामित्रके वचन सुन रामजी प्रसन्न हुए. अरु अपने हृदयमें निश्चय किया कि अब मुझको उस पदकी प्राप्ति होवेगी.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे रामसमाज वर्णनं नाम षष्ठःसर्गः ॥ ६ ॥

सप्तमः सर्गः ७।

अथ रामेण वैराग्य वर्णनं.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज ! ऐसे मुनीश्वरके वचनको रामजी सुनके बहुत प्रसन्न होयके बोले.

श्रीरामोवाच, हे भगवन् ! जो वृत्तांत है सो तुम्हारे विद्यमान क्रम करके कहता हों- इन राजा दशरथ के घरमें जो मैं उत्पन्न भया हों, बहुरि क्रम करके बडा हुआ हों, उपवीत पाया हों अरु चारो वेद पढकर ब्रह्मचर्यादि व्रत पायाहों, तापाछे एक दिन पढके मैं घरमें आया, तब मेरे हृदयमें बात आय रही कि तीर्थाटन करों, अरु देवद्वारमें जायके देवनके दर्शन करों; तब मैं पिताकी आज्ञा लेकर तीर्थको गया. अरु गंगा आदि संपूर्ण तीर्थमें स्नान किया; अरु शालिग्राम अ-

रु केदार आदि ठाकुरके विधि संयुक्त दर्शन किये; अरु यात्रा करके इहां आया. फिर उत्साह हुआ.

तब मेरे में विचार आया, कि प्रातःकाल उठके स्नान संध्यादिक कर्म करना, बहुरि भोजन करना, ऐसे इस प्रकारसों केतेक दिन व्यतीत भये, तब मेरे हृदयमें विचार उत्पन्न हुआ, सो विचार मेरे हृदयको खेंचले गया. जैसे नदीके तटपर तृण लता होते हैं, तिसको नदीका प्रवाह खेंच लेजाता है, तैसे मेरे हृदयमें जो कछु जगत्‌की आस्थारूप तृणलता थी, सो विचार रूपी प्रवाह ले गया. तब मैं जानता भया कि राज्य करके क्या है ! अरु भोगते क्या है ! अरु जगत् क्या है ! सब भ्रम मात्र है. इसकी वासना मूर्ख रखते हैं. यह स्थावर जंगम रूपी जेता कछु जगत् है सो सब मिथ्या है.

हे मुनीश्वर ! जेते कछु पदारथ हैं, सो मनसों करके हैं सो मनभी भ्रममात्रहै. अनहोता मन दुःखदायीहुआहै. मन जो पदारथ सत्य जान कर दौरताहै, अरु सुखदायक जानता है, सो मृग तृष्णाके जलवत् है. जैसे मृग तृष्णाको देखकर मृग दौरते हैं, अरुहै नहीं; सो मृग दौरत दौरत थकके पडजाता है; तौहू जल तिसको प्राप्त नहीं होता. तैसे मूर्खजीव पदारथको सुखदायी जानकर भोगनेका यत्न करता है; अरु शांतिको नहीं पाता है

हे मुनीश्वर ! इंद्रियनके भोग सर्पवत् हैं, जिनका मारा हुआ, जन्म मरनको पाता है. जन्मते जन्मांतरको पाताहै. भोग अरु जगत् सब भ्रम मात्रहै. तिन विषे जो आस्था करते हैं, सो महा मूर्ख है ऐसा मैं विचार करके जानता हों; जो सब आगमापाईहै. अर्थ यह जो आवतेहू हैं, अरु जातेहूहैं. ताते जिस पदार्थका नाश न होय. सो पदार्थ पावने योग्यहैं, इसीकारणते मैंने भोगका त्याग किया हैं.

हे मुनीश्वर ! जेते कछु संपदारूप पदारथ भासतेहैं, सो सब आपदा है. इनमें रंचकहू सुख नहीं है. जब इनका वियोग होताहै, तब कंटककी नांई मनमें चुभता है. जब इंद्रियको भोग प्राप्तहोताहै, तब राग दोषकर जलता है; अरु जब नहीं प्राप्त होता तब तृष्णा कर जलताहै. ताते भोग दुःखरूपहै. जैसे पत्थरकी शिलामें छिद्र नहीं होता, तैसे भोगरूपी दुःखकी शिलामें रंचकभी सुखरूपी छिद्र नहीं होताहै.

हे मुनीश्वर ! विषयकी तृष्णामें बहुत कालसों जलता रहा हों. जैसे हरे वृक्षके छिद्रमें रंचक अग्नि धरा होय, तब धुवाँ होय थोरा थोरा जलता रहता है; तैसे भोगरूपी अग्नि करके मन जलता रहता है. यह विषयमें सुख कछुहू नहीं, अरु दुःख बहुतहै. इनकी इच्छा करनी मूरखताहै. जैसे खाईके ऊपर तृण अरु पात होता-

है. तिसकर खाईं आच्छादित होय जाती है, तिसको देखके हरिण कूद परता है, अरु दुःख पावताहै; तैसे मूर्ख भोगको सुखरूप जानके भोगनेकी इच्छा करता है; जब भोगता है तब जन्मते जन्मांतर रूप खाईमें जाय परते हैं अरु दुःख पावतेहैं.

हे मुनीश्वर! भोगरूपी चोर है; सो अज्ञानरूपी रात्रिमें लूटने लगताहै सो आत्मरूपी धनहै, तिसको ले जाताहै; तिसके वियोगते महादीन रहताहै. अरु जिस भोगके निमित्त यह यत्न करताहै, सो दुःखरूपहै शांतिको प्राप्त नहीं होता. अरु जिस शरीरके अभिमान करके यह यत्न करताहै,सो शरीर क्षणभंग होताहै, अरु असारहै. जिसको सदा भोगकी इच्छा रहतीहै, सो मूर्ख अरु जडहै, इसका बोलना चालनाभी ऐसाहै; जैसे सूखे बाँसके छिद्रमें पवन जाताहै, अरु पवनके वेगकर शब्द होताहै; तैसे वह मनुष्यकी वासनाहै. जैसे थका हुआ मनुष्य मारवाड़के मार्गकी इच्छा नहीं करता तैसे दुःख जानकर मैं भोगकी इच्छा नहीं करताहों.

अरु यह जो लक्ष्मी है सो परम अनर्थकारी है. जब लग इसकी प्राप्ति नहीं होती, तब लग तिसके पावनेका यत्न होता है. अरु अनर्थ करके प्राप्ति होती है. अरु जब प्राप्ति हुई, तब सब गुणका नाश कर देती है शीलता, संतोष, धर्म, उदारता, कोमलता, वैराग्य,

विचार, दयादिक गुणका नाश करती है. जब ऐसा गुणका नाश हुवा, तब सुख कहांते होय. परम आपदा प्राप्त होती है. परमदुःखका कारण जानकर मैं इस्का त्याग किया है [illegible] श्वर! इसमें गुण तब लग है, जब लग लक्ष्मी नहीं प्राप्त भई. जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई तब सब गुण नाश होजाता है. जैसे बसंतऋतुकी मंजरी हरियावल तबलग रहती है, जब लग ज्येष्ठ आषाढ नहीं आया; जब ज्येष्ठ आषाढ आया, तब मंजरी जरजाती है. तैसे जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई तब सब शुभ गुण जरजाते हैं. अरु मधुर वचन तब लग बोलता है, जब लग लक्ष्मीकी प्राप्ति नहीं होतीहै जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई, तब कोमलताका अभावहोय कठोर होजाता है. जैसे जल पतला तब लग रहता है जब लग शीतलताका संयोग नहीं होय. जब शीतलताका संयोग होता है, तब बर्फ होकर कठोर दुःखदायक होय जाता है. तैसे यह जीव लक्ष्मी पाकर जड होय जाता है.

हे मुनीश्वर! जो कछु संपदा है सो आपदाका मूल है; काहेते कि जब लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है, तब बडे सुखको भोगता है; अरु जब तिसका अभाव होता है, तब तृष्णा करके जलता है. जन्मते जन्मान्तरको पावता है. लक्ष्मीकी इच्छा है सोई मूर्खता है. यह तो क्षणभंग है. याते भोग उपजता है, अरु नाश भी होता है. जै-

से जलते तरंग उपजते हैं, अरु मिट जाते हैं. अरु बिजुली स्थिर नहीं होती है, तैसे भोगहू स्थिर नहीं रहते. अरु पुरुषमें शुभ गुण तब लग है, जबलग तृष्णाका स्पर्श नहीं किया. जब तृष्णा भई तब शुभ गुणका अभाव होय जाता है. जैसे दूधमें मधुरता तब लग है, जब लग उनका सर्पने स्पर्श नहीं किया; जब सर्पने स्पर्श किया, तब दूधहै, सो विषरूप होजाता है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे रामेण वैराग्य वर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ७॥

अष्टमःसर्गः ८

अथ लक्ष्मी तिरस्कार वर्णनं।

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! लक्ष्मी देखने मात्र ही सुंदर है, अरु जब इस्की प्राप्ति हुई, तब सद्गुणका नाश कर देती है. जैसे विषकी लता देखने मात्र सुंदर है, अरु स्पर्श कियेते मार डारती है, तैसे लक्ष्मीकी प्राप्ति हुए, आत्मपदते मृतक होता है. अरु महादीन होय जाता है. जैसे किसीके घरमें चिंतामणि दबी रही, ताको खोदकर लेवे नहीं, तबलग दारिद्री रहता है, तैसे अज्ञान कर ज्ञान बिना महादीन जैसा हो रहता है, आत्मानंदको पाय नहीं सकता आत्मानंदके पानेका जो

मार्ग है, तिसके नाश करनहारी लक्ष्मी है. इसकी प्राप्तिते जीव महाअंध होय जाता है.

हे मुनीश्वर, जब दीपक प्रज्वलित होता है, तब उसका बडा प्रकाश दृष्ट आवता है; जब दीपक बुझ जाता है, तब प्रकाशका अभाव होय जाता है, अरु काजरकी समक्षता रहजाती है, जो वारंवार वासना उपजती थी, सो रहती है; तैसे जब इस लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है, तब बडे भोग उनको भुगवाती है; अरु तृष्णारूप काजर उसते उपजता रहता है. जब लक्ष्मीका अभाव होता है; तब वासना तृष्णाकी समक्षता छांड जाती है. तिस वासना तृष्णा करके अनेक जन्मको पाता है, शांतिको कदाचित् नहीं प्राप्त होता.॥

हे मुनीश्वर! जब जिसको लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है, तब शांतिके उपजावनहारे गुणका नाश करती है. जैसे जबलग पवन नहीं चलता, तबलग मेघ रहता है, जब पवन चला कि मेघका अभाव होजाता है, तैसे लक्ष्मीकी प्राप्ति हुए गुणका अभाव होता है, अरु गर्वकी उत्पत्ति होती है.

हे मुनीश्वर! जो शूरमा होइके अपने मुखते अपनी बडाई न कहै, सो दुर्लभ है. अरु समर्थ होय किसीकी अवज्ञा न करे, सबमें समबुद्धि राखे सो दुर्लभ है. तैसे लक्ष्मीवान होकर शुभ गुण संयुक्त होय सो भी दुर्लभ है.

हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी जो सर्प है, तिसको बढाने-का स्थान लक्ष्मी रूपी दूध है, सो पीवत पवन रूपी भोगका आहार करत कदाचित् अघात नहीं. अरु महा मोहरूप उन्मत्त हस्ती है, तिसको फिरनेका स्था-न पर्वतकी अटवी रूपी लक्ष्मी है. अरु गुण रूप जो सूर्यमुखी कमळ है, तिसकी लक्ष्मी रात्रि है, अरु भो-गरूपी चंद्रमुखी कमल है तिनका लक्ष्मी चंद्रमा है. अरु वैराग्य रूप जो कमलनी है, तिसके नाश करने-हार लक्ष्मी बरफ है. अरु ज्ञानरूपी जो चंद्रमा है तिन-का आच्छादन करनेहारी लक्ष्मी राहु है. अरु मोहरू-पी जो उलूक है तिसकी यह रात्रि है. अरु दुःखरूपी जो बिजुरी है तिसको लक्ष्मी आकाश है. अरु तृष्णा-रूपी जो लता है, तिसको बढावनहारी लक्ष्मी मेघ है. अरु तृष्णारूप जो तरंग है, तिसकी लक्ष्मी समुद्र है. अरु भोगरूपी पिशाच है, तिसका लक्ष्मी स्थान है. अ-रु तृष्णारूपी भवँरको लक्ष्मी कमळनी है. जन्मके दुः-खरूप जलको यह लक्ष्मी ताल है.

हे मुनीश्वर! देखने मात्र यह सुंदर लगती है. अरु दुःखका कारण है. जैसे खड्गकी धारा देखने मात्र सुं-दर होती है, अरु परश कियेते नाश करती है, तैसी यह लक्ष्मी है. अरु विचाररूपी मेघका नाश करनेमें लक्ष्मी वायु है.

हे मुनीश्वर! यह मैं विचारकर देखा है, इसमें सुख कछूहू नहीं. अरु संतोषरूपी मेघका नाश करनहारा यह शरत्काल है. अरु इस मनुष्यमें गुण तब लग दृष्टि आवे, जबलग लक्ष्मीकी प्राप्ति नहीं भई. जब लक्ष्मीकी प्राप्ति भई, तब शुभ गुण नाश पाते हैं.

हे मुनीश्वर! लक्ष्मी ऐसी दुःखदायक जानकर इसकी इच्छा मैंने त्यागदीनी है. यह भोग मिथ्यारूप है. जैसे बिजुरी प्रगट होय छिपजाती है. तैसे यह लक्ष्मीहू प्रगट होय छिप जातीहै. जैसे जल है, सो हिम है, तैसे लक्ष्मीकी ज्योति है, सो मूर्ख जडके आश्रयते है. इस्को छलरूप जानकर मैंने त्याग किया है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे लक्ष्मी तिरस्कार वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ८॥

नवमः सर्गः ९.

अथ संसारसुख निषेध वर्णनं ॥

रामोवाच, हे मुनीश्वर! जो वाको देखकर प्रसन्न होता है, सो जैसे पत्रके ऊपर जलकी बूंद नहीं रहती है, तैसे लक्ष्मी क्षणभंग है. जैसे जलके तरंग होयके नाश पाता है, तैसे लक्ष्मी होयके नाश पाती है.

हे मुनीश्वर! पवनको रोकना कठिन है सोभी को-

ऊ रोका है; अरु आकाशका चूरन करना अति कठिन है, सो भी कोऊ चूरन कर डारै; अरु बिजुलीको रोकना अति कठिन है, सोभी कोऊ रोके है, परंतु लक्ष्मी पायके कोई स्थिर होवे सो नहीं. जैसे शशाके सींगसों कोऊ मार नहीं सकता; अरु आरशीके ऊपर जैसे मोती नहीं ठहरता है; जैसे तरंगकी गांठ नहीं परत है; तैसे लक्ष्मीहू स्थिर नहीं रहति है. लक्ष्मी बिजुलीके चमक जैसी है. सो होतीहू है, अरु मिट भी जाती है, अरु लक्ष्मी पायके आपको अमर हुआ चाहे, सो महा मूर्ख जानना. अरु लक्ष्मीको पायकर जो भोगकी वांछा करत है सो महाआपदाका पात्र है, तिनको जीनेते मरना श्रेष्ठ है. जीनेकी आशा मूर्ख करते हैं, सो अपने नाशके निमित्त करते हैं; जैसे स्त्री जो गर्भकी इच्छा करती है, सो अपने नाशके निमित्त करती है.

अरु जो ज्ञानवान् पुरुष है, जिनकी परमपदमें स्थिति है, अरु तिसकर तृप्ति पायेहैं, तिनका जीना सुखके निमित्तहै. तिनके जीनेते औरका कार्य्यभी सिद्ध होजाताहै. तिनका जीना चिंतामणिकी नाईं श्रेष्ठ है. अरु जिनको सदा भोगकी इच्छा रहती है, और आत्मपदते विमुख है, तिनका जीना किसी सुखके निमित्त नहीं है. वह मनुष्य नहीं, गर्दभ है, अरु जैसे वृक्ष, पक्षी, पशुका जीवनाहै, तैसे तिसका भी जीवना है.

हे मुनीश्वर। जो पुरुष शास्त्र पढा है, अरु पाने योग्य पद नहीं पाया, तब शास्त्र उसको भाररूप है जैसे औरका भार होता है, तैसे पढनेकाभी भारहै. अरु पढके विचार चर्चा करता है; और तिसके सारको नहीं गृहण करता; तो यह बिचार चर्चाहू भार है. ॥

हे मुनीश्वर! मन जो है, सो आकाशरूपहै. सो मनमें जो शांति न आई, तो मनहू उसको भारहै. अरु जो मनुष्य शरीरको पाया है उसका अभिमान नहीं त्यागता है तो यह शरीर भी उसको भारहै. यह शरीरका जीवना तबही श्रेष्ठहै, जब आत्मपदको पावे, अन्यथा उसका जीना व्यर्थ है. और आत्मपदकी प्राप्ति अभ्याससे होती है. जैसे जल पृथ्वीते खोदते निकसता है- तैसे अभ्यास कर आत्मपदकी प्राप्ति होती है. अरु जो आत्मपदते विमुखहोय, आशाकी फांसीमें फँसेहैं, सो संसारमें भटकते रहते हैं.

हे मुनीश्वर! संसारके तरंग अनेक काळसों उत्पन्न होय नष्टहोय जातेहैं, तैसे यह लक्ष्मीहू क्षणभंगहै, इसको पायके जो अभिमान करता है सो मूर्ख है. जैसे बिल्ली चूहाको पकडनेके लिये परी रहती है, तैसे लक्ष्मी उनको नरकमें डारनेके लिये, घरमें परी रहती है. जैसे अंजळीमें जल नहीं ठहरता, तैसे लक्ष्मी चली जाती है. ऐसी क्षण भंग लक्ष्मी अरु शरीरको पाय-

कर जो भोगकी तृष्णा करते हैं, सो महा मूर्ख हैं, सो मृत्युके मुखमें परे हुए जीनेकी आशा करते हैं. जैसे सर्पके मुखमें मेढक पडता है, सो मच्छरको खानेकी इच्छा करता है, याते सो महामूर्ख है;तैसे यह पुरुष मृत्युके मुखमें परा हुआ भोगकी वांछा करता है, सो महामूर्ख है.

अरु युवा अवस्था नदीके प्रवाहकी नाईं चली जाती है, बहुरि वृद्धावस्था प्राप्त होती है, तामें महादुःख प्रगट होते हैं, अरु शरीर जर्जर होय जाता है; फिर मरता है. इक क्षणहू मृत्यु इनको बिसारती नहीं है, सदाई देखत रहता है, जैसे महाकामी पुरुषको सुंदर स्त्री मिलती है, तब उसको देखनेका त्याग नहीं करता, तैसे मृत्यु मनुष्यको देखे बिना नहीं रहता है.

हे मुनीश्वर! मूर्ख पुरुषका जीना दुःखके निमित्त है. जैसे वृद्ध मनुष्यका जीवना दुःखका कारणहै, तैसे अज्ञानीका जीवना दुःखका कारण है. उसको बहुत जीवनेते मरना श्रेष्ठहै. जो पुरुषने मनुष्य शरीर पायकर आत्मपद पानेका यत्न नहीं किया तिनने आपेई अपना नाश किया है; सो आत्महत्यारा है.

हे मुनीश्वर! यह माया बहुत सुंदर भासती है; अरु आखिर नाशको पाती है. जैसे वृक्षको अंतरते घुण खाय जाता है अरु बाहरते बहुत सुंदर दिखता

यह पुरुष बाहरते सुंदर दृष्टि आता है, अरु अंतरते इनको तृष्णा खाय जाती है. जो पदार्थको सत्य अरु सुखरूप जानकर सुखके निमित्त आश्रय करता है, सो सुखी नहीं होताहै. जैसे नदीमें सर्पको पकरके पार उतरा चाहे, सो पार नहीं उतरता है, वह मूर्खता करके डूबेईगा; तैसे जो संसारके पदारथको सुखरूप जान कर आश्रय करता है, सो सुख नहीं पाता संसारसमुद्रमेंई डूब जाता है.

हे मुनीश्वर ! यह संसार इंद्रधनुषकी इंद्र धनुष बहुत रंगका दृष्टिमें आता है, अरु तिसते अर्थ सिद्धि कछु नहीं होती है; तैसे यह संसार भ्रममात्र है. इसमें सुखकी इच्छा रखनी व्यर्थहै. इस प्रकार जगत्को मैं अस्तरूप जानकर निर्वासना होनेकी इच्छा करी है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे संसारसुख निषेध वर्णनं नाम नवमः सर्गः॥ ९॥

दशमः सर्गः १०

अथ अहंकार दुराशा वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर ! यह जो अहंकार उदय हुवा सो अज्ञानते महादुष्ट है. अरु यही परमश-

त्रु है. इसने मेरेको भार प्राप्त किया है अरु मिथ्या है. जेते कछु दुःख हैं तिन सबकी खानि अहंकार है. जब लग अहंकार है, तबलग पीडाकी उत्पत्तिका अभाव कदाचित् नहीं होता है.

हे मुनीश्वर! जो कछु मैं अहंकारसों भजन किया अरु पुण्य किया है, अरु जो लिया दिया है; और कछु किया है, सो सब व्यर्थ है. इसकर परमार्थकी सिद्धि कछु नहीं है. जैसे राखमें आहुति धरी व्यर्थ होजाती है तैसे जानत हों. अरु जेते कछु दुःख हैं तिनका बीज अहंकार है, इसका नाश होवे. तब कल्याण होवे. ताते तुम इसका उपाय मुझको कहो, जिसकर अहंकार निवृत्त होवे.

हेमुनीश्वर! जो वस्तु सत्य है, तिसका त्याग करनेमें दुःख होताहै. अरु जो वस्तु नाशवान अरु भ्रम करके दिखतीहै, तिसके त्याग करनेते आनंदहै! अरु शांतिरूप जो चंद्रमाहै तिसको आच्छादन करनेका अहंकाररूपी राहुहै. जब राहु चंद्रमाका ग्रहण करताहै, तब उसकी शीतलता अरु प्रकाश ढपजातीहै; तैसे जब अहंकार उपजता है, तब समता ढप जाती है. जब अहंकाररूपी मेघ गर्जके बरखता है, तब तृष्णारूपी कंटक मंजरी बढ जातीहै, सो कदाचित् घटत नहीं. जब अहंकारका नाश होवे. तब तृष्णाका अभाव होवे जैसे.

जबलग मेघहै तबलग बिजुरी है. जब विवेकरूपी पवन चले, तब अहंकाररूपी मेघका अभाव होयके बिजुरी नाश पाती है. जैसे जब लग तेल अरु , तब लग दीपकका प्रकाशहै; जब तेल बातीका नाश होताहै, तब दीपकका प्रकाशभी नाश पाताहै. तैसे जब अहंकारका नाश होवे, तब तृष्णाका भी नाश होताहै.

हे मुनीश्वर! परम दुःखका कारण अहंकारहै. जब अहंकारका नाश होवे, तब दुःखका भी नाश होयजाय. हे मुनीश्वर! यह जो मैं रामहों सो नहीं, अरु इच्छा भी कछु नहीं. काहेते जो मैं नहीं तो इच्छा किसको होवे. अरु इच्छा होइ तो यही होइ जो अहंकारके रहित पदकी प्राप्ति होवे. जैसे जनींद्रको अहंकारका उत्थान नहीं हुआ, तैसा मैं होऊं, ऐसी मुझको इच्छाहै.

हे मुनीश्वर! जैसे कमलको बर्फ नाश करताहै, तैसे अहंकार ज्ञानका नाश करताहै. जैसे पारधी जालसों पक्षीको बंधन करताहै, तिसकर पक्षी दीन होजातेहैं, तैसे अहंकाररूपी पारधीने तृष्णारूपी जाल डारके जीवको बंधन कियाहै, तिसकर महादीन होगयाहै! जैसे पक्षी अन्नके कनको सुखरूप जानकर चुगनेको आताहै, फिर चुगते फिरते जालमें बँध जाताहै;तिस बंधनकर दीन होजाताहै, तैसे यह पुरुष विषय भोगकी इच्छा कियेते तृष्णारूपी जालमें बंधहोय महादीन होजाता-

है. ताते हे मुनीश्वर ! मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर अहंकारका नाशहोवे. जब अहंकारका नाश होवेगा तब मैं परम सुखी होऊंगा जैसे विंध्याचळ पर्वतके आश्रयते उन्मत्त हस्ती पडे गर्जतेहैं तैसे अहंकाररूपी जो विंध्याचळ पर्वतहै, तिसके आश्रयते मनरूपी उन्मत्त हस्ती नानाप्रकारके संकल्प विकल्परूपी शब्द करताहै, ताते सोई उपाय कहो जिसकर अहंकारका नाश होवे, सो. अहंकार अकल्याणका मूलहै. जैसे मेघका नाश करनहारा शरत्काल है; रागग्यका नाश करनहारा अहंकारहै. मोहादिक विकाररूप जो तनका रहनेका अहंकाररूपी बिलहै, अरु अहंकार कामी पुरुषकी नांईहै. जैसे कामी पुरुष कामको भुगतता है अरु फूलकी माला गरेमें डारके प्रसन्न होताहै, तैसे तृष्णारूपी तागा है; अरु मनुष्यरूपी फूलके मनके हैं सो तृष्णारूपी तागेके साथ पिरोयेहैं. सो अहंकाररूपी कामीपुरुष गरेमें डारताहै अरु प्रसन्न होताहै.

हे मुनीश्वर! आत्मारूपी सूर्य्य है, तिसका आवरन करन हारा मेघरूपी अहंकारहै, जब ज्ञानरूपी सूर्य उदयका काल आवे, तब अहंकाररूपी बादरका नाश हो जाताहै. अरु तृष्णारूपी तुषारका भी नाश होवे.

हे मुनीश्वर ! यह निश्चय कर मैंने देखाहै, कि जहां अहंकार है तहां सब आपदा आय प्राप्त होतीहैं जैसे समु-

द्रमें सब नदी आयके प्राप्त होतीहैं, तैसे अहंकारमें सब आपदाकी प्राप्तिहै. ताते सोई उपायकहो जिसकर अहंकारका नाश होवे.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे अहंकार दुराशा वर्णनं नाम दशमः सर्गः १०

एकादशः सर्गः ११

अथ चित्त दौरात्म्य वर्णनं ॥

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! यह जो मेरा चित्त है, सो काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णादिक दुःख कर जर्जरी भाव होगया है. अरु महा पुरुषके जो गुण वैराग्य, विचार, धैर्य, संतोष, तिनकी ओर नहीं जाता; सर्वदा विषयकी गिरदमें उडता है. जैसे मोरका पंख पवनके लागे ठहरता नहीं, तैसे यह चित्त सर्वदा भटकता फिरता है, अरु, इसको लाभ कछु प्राप्त नहीं होता. जैसे श्वान द्वार द्वारपै भटकता फिरता है, तैसे यह चित्त पदारथके पावने निमित्त भटकता फिरता है, और प्राप्त कछु नहीं होता. अरु जो कछु प्राप्त होता है तिसकरि तृप्त नहीं होता. अंतर तृष्णा रही आवत है. जैसे पिटारेमें जल भरिये, तासों वह पूर्ण नहीं होता, क्योंकि छिद्रते जल निकस जाता है; अरु पिटारा शून्यका शून्य रहता

है. तैसे चित्तको भोग पदार्थ प्राप्त होता है, तासों संतुष्ट नहीं होता है. सदा तृष्णाई रहत है.

हे मुनीश्वर! यह चित्तरूपी महामोहका समुद्र है, तिसमें तृष्णारूपी तरंग उठतेई रहत हैं; सो कदाचित् स्थिर नहीं होते. जैसे समुद्रमें तीक्ष्ण वेगकर तरंग होता है, सो तटके वृक्षको लागता है, अरु जलमें बहे जाते हैं; तैसे चित्तरूपी समुद्रमें विषय बहि जाते हैं. वासनारूपी तरंगके वेगसों मेरा जो अचल स्वभाव था. सो चलायमान होगया है सो इस चित्तसों मैं महा दीन हुआ हों जैसे जालमें परा पक्षी दीन होजाता है तैसे चित्तसे, धीवरकी वासना रूपी जालमें बंधा हुआ मैं दीन होगया हूं. जैसे मृगके समूहते भूली मृगी अकेली खेदवान होती है, तैसे मैं आत्मपदते भूला हुआ चित्तमें खेदवान हुआ हों.

हे मुनीश्वर! यह चित्त सदा क्षोभवान रहता है, कदाचित् स्थिर नहीं होता. जैसे क्षीरसमुद्र मंदराचल करके क्षोभवान हुआ था, तैसे यह चित्त संकल्प विकल्प कर खेद पावत है. जैसे पिंजरेमें आया सिंह पिंजरेमें फिरता है, तैसे वासनामें आया चित्त स्थिर नहीं होता.

हे मुनीश्वर! इस चित्तने मेरेको दूरते दूर डारा है. भारी पवनसों सूखा तृण दूरते दूर जाय पडता है; तैसे चित्तरूपी पवनने मुझको आत्मानंदते दूर डारा है

जैसे सूखे तृणको अग्नि जरावत है, तैसे मोको चित्तजारता है. जैसे अग्निते धूम निकसता है,तैसे चित्तरूपी अग्निते तृष्णारूपी धूम निकसता है, तिसकर मैं परम दुःख पावत हों. यह चित्त हंस नहीं बनता है. जैसे राजहंस दूध अरु जल मिलेको भिन्न भिन्न करता है, तिसकी नाई मैं अनात्मामें अज्ञान करके एकसा होगया हों; तिसको भिन्न नहीं कर सकता हों. जब आत्मपद पानेका यत्न करता हों, तब अज्ञान प्राप्त करने नहीं देता. जैसे नदीका प्रवाह समुद्रमें जाता है, तिसको पहाड सूधे नहीं चलने देता है, अरु समुद्रकी ओर जाने नहीं देता है, तैसे मुझको चित्त आत्माकी ओरते रोकता है; सो परम शत्रु है. हे मुनीश्वर। ताते सोई उपाय कहो, जिसकर चित्तरूपी शत्रुका नाश होवे.

यह तृष्णा मेरा भोजन करती रहती है; जैसे मृतक शरीरको श्वान अरु श्वाननी भोजन करते हैं, तैसे आत्माके ज्ञान बिन मैं मृतक समान हों. जैसे बालक अपनी परछाहींको बैताल मानकर भयको पाता है. सो जब विचार करके समर्थ होता है, तब बैतालका भय पातानहीं तैसे चित्त रूपी बैतालने मेरा स्पर्श किया है; तिसकरके मैं भयको पाता हों, ताते तुम सोई उपाय कहो; जिसते चित्तरूपी वैताल नष्ट होय जावे॥

हे मुनीश्वर! अज्ञान करके मिथ्या वैताल चित्तमें

दृढ होरहा है, तिसके नाश करनेको मैं समर्थ नहीं हो सकता हों अग्निमें बैठना सो भी मैं सुगम जानता हों, और चलके बडे पर्वतके ऊपर जाना, सो भी मैं सुगम मानता। ।. अरु बडे वज्रका चूरन करना यह भी मैं सुगम मानताहों. परंतु चित्तका जीतना महा कठिन है, ऐसा मैं जानता हों. चित्त सदाई चलायमान स्वभाववाला है. जैसे थंभके साथ बांधाहुआ बानर कदाचित्त स्थिर होय नहीं बैठता, तैसे चित्त वासनाके मारे स्थिर कदाचित् नहीं होताहै. हे मुनीश्वर! बडा समुद्रका पान करजाना सुगम है, अरु अग्निका भक्षण करनाभी सुगम है, और सुमेरुका उल्लंघन करना सोभी सुगम है, परंतु चित्तको जीतना महाकठिन है; जो सदा चळरूप ह. समुद्र अपना द्रव स्वभावका कदाचित् नहीं त्यागकरता, अरु महाद्रवीभूत रहताहै, तिसकर नानाप्रकारके तरंग होते हैं, तैसे चित्तभी चंचलस्वभावको कभी नहीं त्यागता है. नानाप्रकारकी वासना उपजती रहती हैं, अरु बालककी नाईं चंचल है, सदा विषयकी ओर धावता है. कहूं पदार्थकी प्राप्ति होतीहै, परंतु अंतरते सदा चंचल रहताहै, जैसे सूर्यके उदय हुए दिन होताहै, अरु अस्त हुएते नाश पाताहै; तैसे चित्तके उदयहुए त्रिलोकीकी उत्पत्तिहै, अरु चित्तके लीन हुएते लीन होजातीहै.

हेमुनीश्वर! किसी समुद्रमें जल गंभीरहै, तिसमें बड़े सर्प रहते हैं,सो जब कोऊ समुद्रमें प्रवेश करे,तब वह सर्प उनको काटताहै, तिनको विष चढ जाता तिसकरके बडादुःख पाताहै.सो दृष्टांत सु ।-चित्तरूपी समुद्रहै अरु वासनारूपी जलहै; तिसमें छल रूपी सर्पहै, जब जीव उसके निकट जाताहै; तब भोगरूपी सर्प उसको काटताहै,तब तृष्णारूपी विष पसरताहै;तिसकर मरतेहैं.

हेमुनीश्वर! जो भोगको सुखरूप जानकर चित्त दोडताहै; सो भोग दुःखरूपहै. जैसे तृणसों खाई आच्छादित होय जातीहै. तिसको देखकर मूर्ख मृग खानेको दौरताहै,तब खाईमें गिर पडताहै अरु दुःख पाताहै तैसे चित्तरूपी मृग भोगका सुख जानकर भोगनेको लगता है, तब तृष्णारूपी खाईमें गिर पडताहै, अरु जन्मान्तर दुःखको भुगताहै

हे मुनीश्वर! यह चित्त कबहूं बडा गंभीरहो बैठताहै; और जब भोगको देखताहै, तब तिनकी ओर ईलकी नाईं लागि गिर पडताहै जैसे गीदड पक्षी आकाशमें चढा फिरताहै, सो जब पृथ्वीपर मांसको देखताहै, तब तहांते आय पृथ्वीपर बैठताहै, अरु मांसको लेताहै, यह चित्त कबि निराला उडताहै, जब तब आशक्ति पाय विषयमें गिर जाताहै. अरु यह चित्त वासनारूपी शय्यामें सोता रहताहै; अरु आत्मपदमें

जागता नहीं इस चित्तकी जालमें मैं पकराया हों सो कैसा जालहै तामें वासनारूपी सूत्रहै, अरु संसारकी सत्यतारूपी ग्रंथी है अरु भोगरूपी त्तिसमें चुनहै; इसको देखके मैं फँसाहों. कबहूं पातालमें, कबहूं आकाशमें वासनारूपी जेवरीकर घटी यंत्रकी नाईं बंधाहों. ताते हे मुनीश्वर! तुम सोई उपाय कहो जिसकर चित्तरूपी शत्रुको जीतों.

अब मुझको किसी भोगकी इच्छा नहीं अरु जगत्की लक्ष्मी मुझको विरस भासतीहै. जैसे चंद्रमा बादरकी इच्छा नहीं करता,अरु चतुर्मासमें आच्छादित होय जाताहै. ताते मैं भोगकी इच्छा नहीं करता और जगत्की लक्ष्मीको मैं नहीं चाहता, अरु मेरा चित्तहै सो परम शत्रुहै.

हे मुनीश्वर! महापुरुष जो जीतनेका यत्न करतेहैं, सो जब चित्तको जीते, तब परमपदको पावे. ताते मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर मनको जीतों. सब दुःख इसके आश्रयते रहतेहैं. जैसे पर्वतपर बनहै सो पर्वतके आश्रयते रहताहै.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे चित्तदौरात्म्य वर्णनं नाम एकादशः सर्गः ११

द्वादशः सर्गः १२।

अथ तृष्णा गारुडी वर्णनं.

श्रीरामोवाच ! हे ब्रह्मन् ! चैतन्यरूपी आकाशमें जो तृष्णारूपी रात्रि आईहै तामें काम,क्रोध,लोभ, मोहादिक घुवड विचरतेहैं; जब ज्ञान रूप सूर्य उदय होवे, तब तृष्णारूपी रात्रिका अभाव होयजावे. जब रात्रि नष्ट भई, तब मोहादिक उलूकभी नष्ट होजातेहैं. जब सूर्यका उदय होताहै, तब बर्फ उष्ण होय पिगल जाताहै; तैसे संतोषरूपी रसको तृष्णारूपी उष्णता सुखावतीहै. बहुरि तृष्णा कैसीहै जैसे शून्यवनमें पिशाचनी अपने परिवार सहित फिरती रहतीहै, अरु प्रसन्न होतीहै, सो वन अरु पिशाच कैसाहै, आत्मपदते शून्य जो चित्त सो भयानक शून्य बनहै तिसमें तृष्णारूपी पिशाचनी है, अरु मोहादिक उसका परिवारहै, उनको साथ लेकर फिरती है.

हे मुनीश्वर ! चित्तरूपी पर्वतहै; तिसके आश्रयते तृष्णारूपी नदीका प्रवाह चलताहै अरु नानाप्रकारके संकल्परूपी तरंगको पसारतेहैं जैसे मेघको देखकर मोर प्रसन्न होताहै; तैसे तृष्णारूपी मोर भोगरूपी मेघको देखके प्रसन्न होताहै, ताते परमदुःखका मूल तृष्णाहै. जब मैं किसी संतोषादि गुणका आश्रय करता

हों, तब तृष्णा तिसको नाश करदेतीहै. जैसे सुंदर सारंगीको चूहा तोर डारताहै; तैसे संतोषादि गुणको तृष्णा नाश करतीहै.

हे मुनीश्वर! सबते उत्कृष्ट पदमें बिराजनेका मैं यत्न करता हों; तब तृष्णा बिराजने नहीं देती. जैसे जालमें फँसा हुआ पक्षी आकाशमें उडनेका यत्न करता है; परंतु उड नहीं सकता है; तैसे मैं अनात्मपदमेंते आत्मपदको प्राप्त नहीं हो सकता. स्त्री, पुत्र, अरु कुटुंब, ने जाल बिछाया है, तामें फँसा हों सो निकस नहीं सकता. सो आशारूपी फांसीमें बंधा हुआ, कबहूं ऊर्ध्वको जाता हों; कबहूं अधःपात होता हों; सो घटी–यंत्रकी नांई मेरी गति है. जैसे इंद्रका धनुष मेघमें मलीन होता है, सो बडा अरु बहुत रंगसों भरा है, परंतु मध्यते शून्य है, तैसे तृष्णा मलिन अंतःकरणमें होती है सो बडी है, अरु गुणरूपी रंगते रंगी है, देखने मात्रको सुंदर है; परंतु इससे कार्य्य सिद्धि कछु नहीं होती.

हे मुनीश्वर! तृष्णा रूपी मेघ है; तिसते दुःखरूपी बुंद निकसते हैं. अरु तृष्णारूपी काली नागनी है; उसका स्पर्श तो कोमल है, परंतु विष करके पूर्ण है; तिसके डसेते मृतक होजाता है. अरु तृष्णारूपी बादर है, सो आत्मरूपी सूर्यके आगे आवरण करता है. जब ज्ञानरूपी पवन निकसे तब तृष्णारूपी बादरका नाश हो-

वे; अरु आत्मपदका साक्षात्कार होवे. अरु ज्ञानरूपी कमलको संकोच करनहारी तृष्णा रूपी निशाहै; अरु तृष्णारूपी महा भयानक काळी रात्रिहै, जिसकर बडे धीरजवान भी भयभीत हैं; अरु नयनवारेको भी अंध कर डारती है; जब यह आवती है, तब वैराग्य अरु अभ्यासरूपी नेत्रको अंध कर डारती है. अर्थ यह जो सत्य असत्यको विचारने नहीं देती.

हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी डाकनी है, सो संतोषादिक पुत्रको मार डारती है. अरु तृष्णारूपी कंदरा है, तिसमें मोहरूपी उन्मत्त हस्ती गर्जते हैं अरु तृष्णारूपी समुद्र है, तिसमें आपदा रूपी नदी आय प्रवेश करती है. ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर तृष्णारूपी दुःखते छूटों.

हे मुनीश्वर! अग्निसों भी ऐसा दुःख नहीं होता अरु इंद्रके वज्रकर भी ऐसा दुःख नहीं होता, जैसा दुःख तृष्णाकर होता है. सो तृष्णाके प्रहारसों घायल बडे दुःखको पाता है. अरु तृष्णारूपी दीपक परा जरता है; तिसमें संतोषादि पतंगिये जर जाते हैं. जैसे जलमें मछली रहती है, सो जलमें कंकरी, रेती आदि वैसेको देख, मांस जानकर वह मुखमें लेती है; ताते उसका अर्थ सिद्धि कछु नहीं होता तैसे तृष्णा भी जो कछु पदार्थ देखती है, तिसके पास उडती है; अरु तृप्ति किसी-

कर नहीं होती. अरु तृष्णारूपी एक पंखनी है, सो कबहूं कहूं उडजाती है, अरु स्थिर कबहूं नहीं होती; तैसे तृष्णाभी कबहूं किसी पदार्थको, कबहूं किसीको गृहण करती है; परंतु स्थिर कबहूं नहीं होती. अरु तृष्णारूपी वानर है, सो कबहूं किसी वृक्षपर, कबहूं किसीके ऊपर जाता है, स्थिर कबहूं नहीं होता है, जो पदार्थ नहीं प्राप्तहोता तिसके निमित्त यत्न करता है.तैसे तृष्णाहू नाना प्रकारके पदार्थका गृहण करती है. अरु भोगकर तृप्त कदाचित् नहीं होती. जैसे घृतकी आहुती कर अग्नि तृप्ति नहीं पावे, तैसे जो पदार्थ प्राप्ति योग्य नहीं है, तिसके ओर भी तृष्णा दौरती है; शांतिको नहीं पाती है.

हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी उन्मत्त नदी है, तिसमें जो बहाया पुरुष, ताको कहांका कहां ले जाती है. कबहूँ तो पहारकी बाजूमें लेजाय; कबहूं दिशामें लेजाय; परंतु इनको ले फिरती है. तैसे तृष्णारूपी नदी है, सो मुझको ले फिरती है. अरु तृष्णारूपीनदी है, इसमें वासना रूपी अनेक तरंग उठते हैं, कदाचित् मिटते नहीं हैं. अरु तृष्णारूपी नटनी है, अरु जगत्‌रूपी अखाडा तिसने लगाया है; तिसको शिर ऊंचा कर देखती है, अरु मूर्ख बडे प्रसन्न होते हैं. जैसे सूर्यके उदय हुए सूर्यमुखी कमल खिलके ऊंचा आता है, तैसे मूर्ख तृष्णाको देखकर प्रसन्न होते हैं. तृष्णारूपी वृद्ध-

स्त्री है; जो पुरुष इसका त्याग करता है, तब वाके पाछे लगी फिरती है, कबहूं इसका त्याग नहीं करती. अरु तृष्णारूपी दौरहै, तिसके साथ जीवरूपी पशु बांधे हुए हैं; तिसकर भर्मते फिरते हैं अरु तृष्णा दुष्टनी है; जब शुभ गुणको देखे, तब तिनको मार डारती है. तिसके संयोगते मैं दीन होजाता हों. जैसे पपैया मेघको देखकर प्रसन्न होता है अरु बूंद ग्रहण करने लगता है; मेघको जब पवन ले जाता है, तब पपैया दीन होजाता है. तृष्णा शुभगुणका नाश करती है; तब मैं दीन हो जाता हों.

मुनीश्वर ! तृष्णाने मुझको दूरते दूर डारा है सूखे तृणको पवन दूरते दूर डारता है; तैसे तृष्णारूपी पवनने मुझको दूरते दूर डारा है. आत्मपदते दूर परा हों हे मुनीश्वर ! जैसे भौंरा कमलके ऊपर जाता है; कबहूं नीचे बैठता है, कबहूं आसपास फिरता है; अरु स्थिर नहीं होता; तैसे तृष्णारूपी भौंरा संसाररूपी कमलके नीचे ऊपर फिरता है. कदाचित् ठहरता नहीं है. जैसे मोतीका बांस होता है,तिसते अनेक मोती निकसते हैं, तैसे तृष्णारूपी बांसते जगत्रूपी अनेक मोती निकसते हैं, तिसकर लोभीका मन पूर्ण नहीं होता है. तैसे तृष्णाते मन पूर्ण नहीं होता. दुःखरूपी रत्नका तृष्णारूपी डब्बा है, तिसमें

अनेक दुःख रहते हैं ताते सोई उपाय कहो, जिसकर तृ-
ष्णा निवृत्त होवे.

यह तृष्णा वैराग्यसों निवृत्ति पाती है. और किसी उपाय कर निवृत्ति नहीं होती है. जैसे अंधकारका नाश प्रकाश कर होता है, और किसी उपाय कर नहीं होता; तैसे तृष्णाका नाश और उपायसों नहीं है. अरु तृष्णारूपी हल है, सो गुण रूपी पृथ्वीको खोद डारता है. अरु तृष्णारूपी लता है, सो गुणरूपी रसको पीती है. अरु तृष्णारूपी धूर है, सो अंतःकरण रूपी जलमें उछलके मलीन करती है.

हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी नदी है, सो वर्षाकालमें बढती है, फिर घट जाती है. तैसे जब इष्ट भोगरूपी जल प्राप्त होता है, तब हर्ष कर बढती है, जब भोगरूपी जल घट जाता है, तब सूखके क्षीण होजाती है. हे मुनीश्वर! इस तृष्णाने मुझको दीन किया है. जैसे सूखे तृणको पवन उडाता है; तैसे मुझको उडाती है ताते सोई उपाय तुम कहो, जिसकर तृष्णाका नाश होवे, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे, अरु दुःख नष्ट होवे, अरु आनंद होवे.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे तृष्णा
गारुडी वर्णनं नाम द्वादशः सर्गः ॥१२॥

त्रयोदशः सर्गः १३

अथ देह नैराश्य वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! यह जो अमंगळरूप शरीर जगत्‌में उत्पत्ति पाया है,सो बडा अभाग्यरूप है. सदा विकारवान,मांस मज्जा कर पूर्ण है; सदा अपवित्र है.इन करके मैं कछु अर्थ सिद्धि होना नहीं देखता. ताते तिन विकाररूप शरीरकी इच्छा रखता.

यह शरीर न अज्ञ है, न तज्ञ है. अर्थ यह जो न जड है न चैतन्य है.जैसे अग्निके संयोग कर लोहा अग्निवत्‌ होता है; सो जलाता भी है; परंतु आप नहीं जलता. तैसे यह देह न जड है. न चैतन्य है. जड इस कारणते नहीं, कि इसते कार्य भी होता है. अरु चैतन्य इस कारणते नहीं कि इसको आपते ज्ञान कछु नहीं होता; ताते मध्यम भावमें है काहेते जो चैतन्य आत्मा इसमें व्याप रहा है; सो लोह अग्निकी नाई जानत हों, अरु आपते अपवित्र रूप अस्थि, मांस, रुधिर, मूत्र, विष्ठा करि पूर्ण अरु विकारवान, ऐसी जो देह है सो दुःखका स्थान है. अरु इष्टके पायेते हर्षवान होती है, अरु अनिष्टके पायेते शोकवान होती है; ताते ऐसे शरीरकी मुझको इच्छा नहीं.यह अज्ञान कर उपजता है.

हे मुनीश्वर! ऐसे अमंगळरूपी शरीरमें जो अहंप-

ना फुरता है; सो दुःखका कारण है. यह संसारमें स्थित होकर नाना प्रकारके शब्द करता है. अरु तूष्णी कबहूं नहीं धरता है. अरु अहंकार रूपी बिलाडा देहमें रहा हुआ, अहं, अहं, करता है; चुप कदाचित्त नहीं रहता है. हे मुनीश्वर! जो किसीके निमित्त शब्द होवे सो सुंदर है; अन्यथा शब्द व्यर्थ है. जैसे जयके निमित्त ढोलका शब्द सुंदर होताहै; तैसे अहंकारते रहित जो पदहै, सो शोभनीकहै; और सब व्यर्थहै.

अरु शरीररूपी नौका भोगरूपी रेतीमें परीहै इसको पार होना कठिनहै. जब वैराग्यरूपी जल बढे अरु प्रवाह होवे; अरु अभ्यासरूपी पतवारीका बल होवे; तब संसारके पाररूपी किनारेपै पहुंचे. अरु शरीररूपी बेडाहै; अरु संसाररूपी समुद्र और तृष्णारूपी जलमें पराहै; अरु बडा प्रवाहहै. अरु भोगरूपी तिसमें मगरहै; सो शरीररूपी बेडाको पार लगने नहीं देता. जब शरीररूपी बेडाके साथ वैराग्यरूपी वायु लगे, अरु अभ्यासरूपी पतवारीका बललगे, तब शरीररूपी बेडा पारको पावे. हेमुनीश्वर! जिन पुरुषने ऐसे बेडेको उपायकर आपको संसारसमुद्रते पार कियाहै; सो सुखी भयेहैं. अरु जिनने नहीं किया, सो परम आपदाको प्राप्त होताहै. सो इस बेडकर उलटे डुबेंईगे. जैसे बेडेमें छिद्र होवे; और वामें जल प्रवेश कर आवे, तब वह डूब जाताहै,

अरु तिसमें जो मच्छहै सो खाइ जाताहै; सो इहां शरीररूपी बेडेका तृष्णारूपी छिद्रहै. तिस करके इहां संसार समुद्रमें डूब जाताहै अरु भोगरूपी मगर इसको खाताहै.अरु यह आश्चर्यहै कि बेडा अपने निकट नहीं भासताहै. अरु मनुष्य सो मूर्खता करके आपको बेडा मानताहै; अरु तृष्णारूपी छिद्र करके दुःख पाताहै.

अरु शरीररूपी वृक्षहै, तामें भुजारूपी शाखा हैं; अरु अंगुरी इसके पत्रहैं; अरु जंघा इसका थंभहै, अरु वासना इसकी जडहै; अरु सुख दुःख इसके फूलहैं; अरु तृ-ष्णारूपी घुनहै; सो शरीररूपी वृक्षको खाता रहताहै. जब इसको श्वेत फूल लगे, तब नाशका समय पाताहै. कारण जो मृत्युके निकट वर्त्ती होताहै. बहुरि शरीररूपी इसके टासहैं; अरु गिटे इसका गुंछाहै अरु दांत फूलहैं जंघा स्थंभहैं; अरु कर्म जलकर बढजाताहै. जैसे वृक्षते जल निकसताहै; सो चिकटाहै तैसे जल श-रीरके द्वारा निकसता रहताहै. अरु तृष्णारूपी विषते पूर्ण सर्पनी रहतीहै, अरु जो कामनाके लिये इस वृक्ष-का आश्रय लेताहै; तब तृष्णारूपी सर्पनी तिसको ड-सतीहै; तिस विषसों वह मरि जाताहै हेमुनीश्वर! ऐसा जो अमंगलरूपी शरीर वृक्षहै, तिनकी इच्छा मुझको नहींहै यह परम दुःखका कारणहै.

जब लग यह पुरुष अपने परिवारमें बँधा हुआहै

तबलग मुक्ति नहीं होती; जब परिवारका त्याग करे तब मुक्ति होवे. देह, इंद्रिय, प्राण, मन, बुद्धि, इसका परिवार है इनमें जो अहंभावहै, वाका त्यागकरे तब मुक्ति होवे अन्यथा मुक्ति नहीं होती.

हेमुनीश्वर! जो श्रेष्ठ पुरुषहैं,सो पवित्रई स्थानमें रहते हैं;अपवित्रमें नहीं रहते.सो अपवित्र स्थान यह देहहै;इसमे रहनेवाला भी अपवित्रहै,अरु अस्थिरूपी इस घरमें लकडेहैं; वामें रुधिर, मूत्र, विष्ठाका इसमें कीच लगाया है; और मांसकी कहगील करीहै; अरु अहंकाररूपी इसमें श्वपच रहताहै; अरु तृष्णारूपी श्वपचनी इसकी स्त्रीहै; अरु काम, क्रोध, मोह, लोभ इसका बेटा है. आंत अरु विष्ठादिक करि पूर्ण भरा हुआहै. ऐसा जो अपवित्र स्थान अमंगळरूप जो शरीर तिनका मैं अंगीकार नहीं करता. यह शरीर रहो चाहे मत रहो. इसके साथ मेरा अब कछु प्रयोजन नहीं.

हेमुनीश्वर! एक बडा घरहै, तिसमें बडे पशु रहतेहैं; सो धूरको उडावतेहैं. सो गृहमें कोऊ जाताहै तब सींगसों मारने लगताहै अरु धूडभी उसके ऊपर गिरतीहै. सो शरीररूपी बडा गृहहै, तिसमें इंद्रियरूपी पशुहै; जब इस गृहमें पैठताहै, तब बडी आपदाको प्राप्त होताहै. तात्पर्य यह जो इसमें अहंभाव करताहै, तब इंद्रियरूपी पशु सो विषयरूप सींगसों मारते हैं अरु तृष्णारू-

पी धूड इसको मलीन करतीहै. हेमुनीश्वर! ऐसे शरीरको मैं अंगीकार नहीं करता.

जिसमें सदा कलह पडेई रहते हैं; तिसमें ज्ञान रूपी संपदा प्रवेश नहीं होती. ऐसा जो शरीर रूपी गृह है, तिसमें तृष्णारूपी चंडी स्त्री रहती है. सो इंद्रियरूपी द्वारसों देखती रहती है, सो सदा कल्पना करत रहती है; तिसकर समदमादिरूप संपदाका प्रवेश नहीं होता. तिस घरमें एक सेज्या है, जब उनके ऊपर विश्राम करता है, तब कछुक सुख पाता है; परंतु तृष्णा का जो परिवार है सो विश्राम करने नहीं देता. सो सुषुप्तिरूपी सेज्या है; जब उसमें विश्राम करता है, तब काम क्रोधादिक रुदन करते हैं. अरु ए चंडी स्त्रीका जो परिवार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, इच्छा है सो उठाइ देते हैं; विश्राम करने नहीं देते हे मुनीश्वर! ऐसा दुःखका मूल जो शरीर रूपी गृह है, तिसकी इच्छा मैंने त्याग दीनी है. यह परम दुःख देनहारा है, इसकी इच्छा मुझको नहीं है.

हे मुनीश्वर! शरीररूपी वृक्ष है; तिसमें तृष्णारूपी कौवानी आय स्थित भई है. सो जैसे कौवानी नीच पदारथके पास उडती है; तैसे तृष्णारूपी कौवानी भोगरूपी मलिन पदारथके पास उडती है. बहुरि तृष्णा बंदरीकी नांई शरीररूपी वृक्षको हिलाती है, वृक्षको

स्थिर होने देती नहीं. अरु जैसे उन्मत्त हस्ती कीचमें फँ-
स जाता है, अरु निकस नहीं सकता, अरु खेदवान हो-
ता है, तैसे अज्ञान रूपी मद कर उन्मत्त हुआ जीव शरी-
ररूपी कीचमें फँसा है, सो निकस नहीं सकता है; परा-
ई दुःख पावता है. ऐसे दुःख पावनेवारा शरीर है, तिस-
का मैं अंगीकार नहीं करता.

हे मुनीश्वर! यह शरीर अस्थि, मांस, रुधिर करि
पूर्ण है, सो अपवित्र है. जैसे हस्तीके करन सदाई हिल-
ते हैं, तैसे इसको मृत्यु परा हिलाता है. कछु कालका
विलंब है,परंतु मृत्यु इसका ग्रास कर लेवेगा. ताते मैं इ-
स शरीरका अंगीकार नहीं करता हों.

यह शरीर कृतघ्न है; भोग भुगतता है; बडे ऐश्वर्य-
को प्राप्त करताहै; परंतु मृत्यु इनकी सखापन नहीं कर-
ता है. जब जीव इसको छांड कर परलोकको जाता है,
तब अकेलाई जाता है; और शरीरको छोड देता है;
जीव इसके सुख निमित्त अनेक यत्न करता है; परंतु सं-
गमें सदा नहीं रहता. ऐसा जो कृतघ्न शरीर है, इसका
मैंने मनसों त्याग किया है; जो यह दुःख देनहारा है.

हे मुनीश्वर! और आश्चर्य देखो,–जो वाईका भो-
ग करता है, तिसके साथ चलता नहीं; जैसे धूर कर
मार्ग भासनेते रह जाता है; तैसे यह जीव जब चलने
लगता है; तब शरीरके साथ क्षोभवान होता अरु वास-

नारूप धूर संयुक्त चलता है; परंतु दीखता नहीं कि कहां गया. जब परलोकको जाता है, तब बडा कष्ट होता है; काहेते कि शरीरके साथ स्पर्श किया है.

हे मुनीश्वर! यह शरीर क्षण भंगुहै. जलका बूंद पत्रके ऊपर गिरती है, सो क्षणमात्र रहती है; तैसे शरीर भी क्षणभंग है. ऐसे शरीरमें आस्था करनी, सो मूर्खता है; अरु ऐसे शरीरके ऊपर उपकार करना भी दुःखके निमित्त है, सुख कछु नहीं है. और जो धनाढ्य शरीरसों बडे भोग भुगतते हैं अरु निर्धन थोडे भोग भुगतते हैं; परंतु जरावस्था अरु मृत्यु दोनोंको होते हैं. इसमें विशेषता कछु नहीं. शरीरका उपकार करना, और भोग भुगतना, सो तृष्णा करके उलटा, दुःखका कारण है. जैसे कोऊ नागनी घरमें रखके उसको दूध प्यावे;तोऊ आखिर उसको काटके मारेगी; तैसे जीवने तृष्णारूपी नागनीके साथ सखाई करी है, सो मरेगा; क्योंकि नाशवंत है. इसके निमित्त जो भोग भुगतनेका यत्न करना सो मूर्खता है. जैसे पवनका वेग आता है, अरु जाता है; तैसे यह शरीर नाशवंत है. इससों प्रीति करनी, सो दुःखका कारण है. सब जीव इसकी आस्थामें बांधे हुए हैं; इसका त्याग कोऊ विरलानेहीं किया है. जैसे कोऊ विरला मृग होता है, सो मरुथलके जलकी आस्था त्यागता है; और सब परे भ्रमते हैं.

हे मुनीश्वर! बिजलीका अरु दीपकका प्रकाश भी आता जाता दीखता है; परंतु इस शरीरका आदि अंत नहीं दिखता है; कि कहां ते आता है, अरु कहां जाता है. जैसे समुद्रमें बुद्बुद उपजता है, अरु मिट जाते हैं, तिसकी आस्था करनेते कछु लाभ नहीं; तैसे यह शरीरकी आस्था करनी योग्य नहीं. यह अत्यंत नाशरूप है, स्थिर कदाचित्त नहीं होता है. जैसे बिजुरी स्थिर नहीं होती, तैसा शरीर भी स्थिर नहीं रहता; इसकी मैं आस्था नहीं करता. इसका अभिमान मैंने त्यागा है. जैसे कोऊ सूखे तृणको त्याग देता है; तैसे मैंने अहंममता त्यागी है.

हे मुनीश्वर! ऐसे शरीरको पुष्ट करना, सो दुःखके निमित्त है यह शरीर किसी अर्थ आवने योग्य नहीं; जलावने योग्य है. जैसे लकडी जलाए बिन और काममें नहीं आती है; तैसे यह शरीरभी जड अरु गुंगा जलावनेके अर्थ है. हे मुनीश्वर! जिन पुरुषने काष्ठरूपी शरीरको ज्ञानाग्निकर जलाया है; तिनका परम अर्थ सिद्ध भया है. अरु जिनने नहीं जलाया, सो परम दुःख पाया है.

हे मुनीश्वर! न मैं शरीर हों, न मेरा शरीर है, न इसका मैं हों, न यह मेरा है; अब मुझको कामना कोऊ नहीं है. मैं निरासी पुरुष हों. अरु शरीरके साथ मुझको प्रयोजन कछु नहीं है. ताते तुम सोई उपाय कहो; जिसकर मैं परमपदकी प्राप्ती पाऊं.

हे मुनीश्वर! जिस पुरुषने शरीरका अभिमान त्यागा है, सो परमानंद रूप है; और जिसको देहका अभिमान है, सो परम दुःखी है. जेते कछु दुःख हैं, सो शरीरके संयोग करि होते हैं मान, अपमान, जरा, मृत्यु, दंभ, भ्रांति, मोह, शोक, आदि सर्व विकार देहके संयोग कर होते हैं. जिसको देहमें अभिमान है तिनको धिःकार है. और सब आपदाभी तिसको प्राप्त होती हैं. जैसे समुद्रमें नदी आयकर प्रवेश करती है; तैसे देहाभिमानमें सर्व आपदा आय प्रवेश करती हैं. जिसको देहका अभिमान नहीं, सो पुरुषनमें उत्तम है, अरु वंदना करने योग्य है; ऐसेको मेरा नमस्कार है; अरु सर्व संपदाभी तिसको प्राप्त होती हैं. जैसे मान सरोवरमें सब हंस आय रहते हैं, तैसे जहां देहाभिमान नहीं रहा, तहां सर्व संपदा आय रहती हैं.

हे मुनीश्वर जैसे अपनी छायामें बालक बैताल कल्पता है; अरु तिसकर भय पाता है; जब इसको विचारकी प्राप्ति होती है, तब बैतालका अभाव होजाता है. तैसे अज्ञानकर मुझको अहंकाररूपी पिशाचने शरीरमें दृढ आस्था बताई है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर अहंकाररूपी पिशाचका नाश होवे; अरु आस्थारूपी फांसी टूटे.

हे मुनीश्वर ! प्रथम जो मुझको अज्ञानकर सं-

योग था, सो अहंकाररूपी पिशाचका था, तिसते अनंतर शरीरमें आस्था उपजीहै. जैसे बीजते प्रथम अंकुर होताहै; फिर अंकुरते वृक्ष होताहै; तैसे अहंकारते शरीरकी आस्था होतीहै.हेमुनीश्वर! इस अहंकाररूपी पिशाचने सब जीवनको दीन कियेहैं. जैसे बालकको छायामें बैताल भासताहै अरु दीनताको प्राप्त होताहै; तैसे अहंकाररूपी पिशाचने मुझको दीन कियाहै सो अहंकाररूपी पिशाच अविचारते सिद्धहै; अरु विचार कियेते अभावको प्राप्त होताहै जैसे प्रकाशकर अंधकार नाश होजाताहै;तैसे विचार कियेते अहंकार नाश होयजाताहै.

हेमुनीश्वर! जो शरीरमें आस्था रक्खीहै, सो शरीर जलके प्रवाहकी नाईं स्थिर नहींहोता; ऐसा चलहै. जैसे बिजुरीकी चमक स्थिर नहीं होती; अरु गंधर्वनगरकी आस्था व्यर्थहै; तैसे शरीरकी आस्था करनी व्यर्थहै. हेमुनीश्वर ऐसे शरीरकी आस्था करके अहंकार करते हैं; अरु जगत्‌के पदार्थ निमित्त यत्न करतेहैं; सो महा मूर्खहैं. जैसे स्वप्न मिथ्याहै, तैसे यह जगत् मिथ्याहै; तिसको सत्य जानकर जो इसका यत्न करताहै सो अपने बंधनके निमित्त करताहै. जैसे घुरान गुफा बनाती है, सो अपने बंधनके निमित्तहै; अरु पतंग दीपककी इच्छा करताहै सो अपने नाशके निमित्तहै तैसे अज्ञानी जो अपने देहका अभिमान कर भोगकी इच्छा करताहै, सो अपने नाशके निमित्तहै.

हेमुनीश्वर! मैंतो इस शरीरका अंगीकार नहीं करता. इस शरीरका अभिमान परमदुःख देनहाराहै. जिसको देह अभिमान नहीं रहा. तिसको भोगकी इच्छा भी न रहेगी. ताते मैं निराशहों; अरु परमपदकी इच्छाहै, जिसके पायेते बहुरि संसार समुद्रकी प्राप्ति नहोवे.

इति योगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे देह नैराश्य वर्णनं नामं त्रयोदशः सर्गः १३ ॥

चतुर्दशः सर्गः १४।

अथ बालअवस्था वर्णनं.

रामोवाच, हेमुनीश्वर! इस संसारसमुद्रमें जो जन्म पायाहै, तामें बालक अवस्था इसको प्राप्त भईहै, सोभी परमदुःखका मूलहै; तिसमें परमदीन होजाताहै; अरु जेते अवगुण इसमें आय प्रवेश करतेहैं, सो कहताहों. अशक्तता, मूर्खता, इच्छा, चपलता, दीनता अरु दुःख, संताप, एते विकार इसको आय प्राप्त होते हैं. यह बालावस्था महा विकारवानहै. अरु बालक पदार्थकी ओर धावता है, एक वस्तुका ग्रहणकर दूसरीको चाहताहै, स्थिर नहीं रहताहै; फिर औरमें लग जाताहै. जैसे बानर ठहरके नहीं बैठता, अरु जो कोऊ ऊपर क्रोध कर-ताहै तब अंतरते परा जलताहै; अरु बडी बडी इच्छा

करताहै;तिसकी प्राप्ति नहीं होती; सदा तृष्णामें रहताहै अरु क्षणमें भयभीत होजाताहै; शांतिको प्राप्त नहीं होता; फिर महादीन हो जाताहै. जैसे कदली बनका हस्ती सांकरसों बांधाहुआ दीन होजाताहै; तैसे यह चैतन्य पुरुष, बालक अवस्थाकर दीन होजाताहै. जो कछु इच्छा करताहै, सो विचारविना करताहै; तिसकर दुःख पाताहै. अरु मूढ गुंग अवस्थाहै; तिसकर कछु सिद्धि नहीं होती; कोऊ पदार्थकी प्राप्ति होतीहै; तिसमें क्षणमात्र सुखी रहताहै; बहुरि तपने लगताहै. जैसे तपती पृथ्वीपर जल डारिये तब एक क्षण शीतल होती है; फिर उसी प्रकारसों तपतीहै; तैसे वह भी तपता रहताहै. जैसे रात्रिके अंतमें सूर्य उदय होताहै तिसकर उलूकादि कष्टवान होतेहैं; तैसे इस जीवको स्वरूपके अज्ञान कर बालावस्थामें कष्ट होताहै.

हे मुनीश्वर! जो बालक अवस्थाकी संगति करताहै सो भी मूर्ख है; काहेतेकि यह विवेक रहित अवस्था है; अरु सदा अपवित्र है; और सदा पदार्थकी ओर धावता है; ऐसी मूढ अरु दीन अवस्थाकी मुझको इच्छा नहीं. जिस पदार्थको देखता है तिसकी ओर धावता है; अरु क्षण क्षण अपमानको पाता है. जैसे कूकर क्षण क्षणमें द्वारकी ओर धावता है, अरु अपमान पाता है; तैसे बालक अपमानको प्राप्त होता है अरु

बालकको सदा माता अरु पिताका भय रहता है; बांधवका सदा भय रहता है, अरु आपते बडे बालकका भी भय रहता है; अरु पशु पक्षीहूका भय रहता है. हे मुनीश्वर! ऐसी दुःखरूप अवस्थाकी मुझको इच्छा नहीं. जैसे स्त्रीके नयन चंचल हैं, अरु नदीका प्रवाह चंचल है, इसते भी मन अरु बालक चंचल है, ऐसे जानता हों, अरु सब चंचलता बालकते कनिष्ट है, बालक सबते चंचल है. जैसा मन चंचल है,तैसा बालक भी चंचल है. मनका रूप बालक है.

हे मुनीश्वर! जैसे वेश्याका चित्त एक पुरुषमें नहीं ठहरता; तैसे बालकका चित्त एक पदार्थमें नहीं ठहरता कि इस पदार्थ कर मेरा नाश होवेगा, ऐसा विचार भी तिसको नहीं, अरु इसकर मेरा कल्याण होवेगा सो विचार भी नहीं. ऐसेई परा चेष्टा करता है, अरु सदा दीन रहता है, अरु सुख दुःख इच्छा दोष करके तपायमान रहता है. जैसे जेठ आषाढमें पृथ्वी तपायमान होती है, तैसे बालक तपताई रहता है, शांतिको कदाचित् नहीं पाता.

अरु जब विद्या पढने लगता है; तब गुरुसों बडा भयभीत होता है! जैसे कोऊ यमको देखके भय पावे, औंर गरुडको देखके जैसे सर्प भय पावे, तैसे भयभीत हो जाता है. जब शरीरको कोऊ कष्ट आय प्राप्त होता है,

तब बडे दुःखको प्राप्त होता है. परंतु दुःखके निवारण-में समर्थ नहीं होता; अरु सहनको भी समर्थ नहीं. अंतरते परा जलता है; अरु मुखते कछु बोल सकता नहीं. जैसे वृक्ष कछु नहीं बोल सकता, अरु जैसे अवर तिर्यक योनि दुःख पावते हैं अरु कहि नहीं सकते हैं अरु दुःखका निवारण नहीं करि सकते, न संहार कर सकते, अंतरते परे जलते हैं; तैसे बालक गुंगा मूढ हुआ दुःख पाता है. हे मुनीश्वर! ऐसी जो बालककी अवस्था, तिसकी जो स्तुति करता है, सो मूर्ख है.

यह तो परम दुःखरूप अवस्था है, इसमें विवेक विचार कछु नहीं. एक खानेको पाता है, अरु रुदन करता है. ऐसी अवगुण रूप अवस्था मुझको नहीं सुहाती है. जैसे बिजुरी अरु जलके बुद्बुदे स्थिर नहीं रहते तैसे बालकहू स्थिर कदाचित् नहीं होता.

हे मुनीश्वर! यह महा मूर्ख अवस्था है; कबहूं कहताहै—हेपिता! मुझको बर्फका टुकडा भूनि दे. कबहूं कहता है:—मुझको चंद्रमा उतार दे. ये सब मूर्खताके वचन हैं. ताते ऐसी मूर्खावस्थाको मैं अंगीकार नहीं करता. जैसे दुःखका अनुभव बालकको होता है, सो हमारे स्वप्नमें भी नहीं आया तात्पर्य यह कि बालावस्था-में बडा दुःख है. यह बालावस्था अवगुणका भूषण है, सो अवगुण कर सोभती है; ऐसी नीच अवस्थाको मैं

अंगीकार नहीं करता. इसकी स्तुति करनी सो मूर्खता. है इसमें गुण कोई भी नहीं है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे बालावस्था वर्णनं नाम चतुर्दशः सर्गः १४

पंचदशः सर्गः १५

अथ युवा गारुडी वर्णनं.

रामोवाच, हे मुनीश्वर! दुःखरूप बालावस्थाके अनंतर जो युवा अवस्था आती है, सो नीचेते ऊंची चढती है; सो भी उत्तम गिनवेके निमित्त नहीं है अधिक दुःखदायक है. जब युवा अवस्था आती है, तब कामरूपी पिशाच आय लगता है. सो कामरूपी पिशाच युवा अवस्थारूपी गडेलेमें आय स्थित होता है, चित्त फिराता है; अरु इच्छामें पसारता है. जैसे सूर्यके उदय हुये सूर्यमुखी कमल खिल आता है अरु पंखुरीनको पसारता है, तैसे युवा अवस्था रूपी सूर्य उदय होता है, तब नाना प्रकारकी इच्छा फुरती है; अरु कामरूपी पिशाच इसको स्त्रीमें डारदेता है, तहां परा दुःख पाता है. जैसे कोऊको अग्निके कुंडमें डारि दिया होय, अरु वह दुःख पावे, तैसे कामके वश हुआ दुःखको पाता है.

हे मुनीश्वर! जो कछु विकार है, सो सब युवा अव-

स्थामें आयके प्राप्त हुए हैं. जैसे धनवानको देखके निर्धन सब धनकी आशा करते हैं, तैसे युवा अवस्थाको देखकर सब दोष आय इकट्ठे होते हैं. अरु जो भोगको सुखरूप जानकर भोगकी इच्छा करता है, सो परम दुःखका कारण है. जैसे मद्यका घट भरा हुआ देखने मात्र सुंदर लगता है, परंतु जब उनका पानकरे तब उन्मत्त होय जाय; तिस उन्मत्तता कर दीन होजाता है; अरु निरादरको पाता है. तैसे यह भोग देखने मात्र सुंदर भासता है; परंतु जब इनको भुगतता है, तब तृष्णाकर उन्मत्त होजाता है.अरु पराधीन होय जाता है.

हे मुनीश्वर ! यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ये सब जो चोर हैं, सो युवारूपी रात्रिको देखकर लूटने लगते हैं ! अरु आत्मज्ञानरूपी धनको चोर ले जाता है, तिसकर यह दीन होता है. यह पुरुष आत्मानंदके वियोग कर दीन हुआ है. हे मुनीश्वर ऐसी जो-दुःख देनहारी युवा अवस्था, तिसका मैं अंगीकार नहीं करता, अरु शांति जो है, सो चित्त स्थिर करनेके लिये है, सो चित्त युवा अवस्थामें विषयकी ओर धावता है. जैसे बाण लच्छके ओर जाता है, तब उसको विषयका संयोग होता है, सो विषयकी तृष्णा निवृत्त नहीं होती, अरु तृष्णाके मारे जन्मते जन्मांतर रूप दुःखको पाता है. हे मुनीश्वर ! ऐसी दुःखदायक युवा अवस्थाकी, मुझको इच्छा नहीं है.

हे मुनीश्वर! जेते कछु दुःख हैं, सो सब युवा अवस्थामें आयकर प्राप्त होते हैं. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, चपलता, इत्यादिक जो दुःख हैं, सो सब युवा अवस्थामें स्थिर होते हैं जैसे प्रलय कालमें, सब रोग आय स्थिर होते हैं, तैसे युवा अवस्थामें सब उपद्रव आय मिलते हैं, और क्षण भंग हैं. जैसे विजुरीका चमका होयके मिट जाता है, जैसे समुद्रमें तरंग होते हैं, अरु मिट जाते हैं, तैसे युवा अवस्था होयके मिट जाती जैसे स्वप्नमें कोई स्त्री विकारकर छल जाती है, तैसे अज्ञानकर युवा अवस्था छल जाती है.

हे मुनीश्वर! युवा अवस्था जीवकी परम शत्रु है.जो-पुरुष इस शत्रुके शस्त्रते बचे हैं, सो धन्य हैं! इसके शस्त्र काम, क्रोध हैं, जो इसते छुटा है, सो वज्रके प्रहार कर भी छेदा न जावेगा. जो इनकर बांधा हुआ है, सो पशु है.

हे मुनीश्वर! युवावस्था देखनेमें तो सुंदरहै,परंतु अंतरते तृष्णाकरके जरजरीतहै. जैसे वृक्ष देखनेमें तो सुंदर होय, अरु अंतरते घुन लगाहुआहै; तैसे युवावस्था जो भोगके निमित्त यत्न करतीहै, सो भोग आपात रमणीयहै. कारण यह कि जबलग इंद्रिय अरु विषयका संयोगहै, तबलग अविचारित भला लगताहै; अरु जब वियोगहुआ तब दुःख होताहै. ताते भोग कर-

कै मूर्ख प्रसन्नहोतेहैं, अरु उन्मत्त होतेहैं, तिसको शांति नहींहोती. अरु अंतरते सदा तृष्णा रहतीहै. स्त्रीमें चित्तकी आसक्ति रहतीहै. जब इष्ट बनिताका वियोग होताहै, तब तिसके सुमरन करके जलताहै. जैसे वनका वृक्ष अग्नि करके जलताहै तैसे युवावस्थामें इष्ट वियोग करके जीव जलताहै जैसे उन्मत्त हस्ती सांकर करके बंधन पाताहै, तब स्थिर होताहै; कहूं जाय नहीं सकता; तैसे कामरूपी हस्तीहै, तिसको सांकररूप युवा अवस्था बंधन करतीहै, अरु युवावस्थारूपी नदीहै, तिसमें इच्छारूपी तरंग उठतेहैं सो कदाचित्त शांतिको नहीं पातेहैं; अरु.

हे मुनीश्वर! यह युवावस्था बडी दुष्टहै. कोऊ बडा बुद्धिवान होवे, अरु सदा निर्मल प्रसन्न होवे; एते गुण करके संपन्न होवे; तिसकी बुद्धिको भी युवावस्था मलिन कर डारतीहै. जैसे निर्मल जलकी बडी नदी होवे; अरु जब वर्षाकाल आवे, तब मलीन होय जावे; तैसे युवावस्थामें बुद्धि मलीन होय जातीहै.

हे मुनीश्वर! शरीररूपी वृक्षहै, तिसमें युवावस्था रूपी वल्ली प्रगट होतीहै; सो पुष्ट होताहै, तब चित्तरूपी भँवरा आय बैठताहै; सो तृष्णारूपी तिसकी सुगंध करके उन्मत्त होताहै; अरु सब विचार भूल जाताहै. जैसे जब प्रबल पवन चलताहै, तब सूखे पत्रको उडाय

लेजाताहै; अरु रहने नहीं देता; तैसे युवावस्था आवतीहै, तब वैराग्य, संतोषादिक गुणका अभाव करती है. अरु दुःखरूपी कंमलका युवावस्थारूपी सूर्यहै; युवावस्थाके उदयते सब दुःख प्रफुल्लित हो आतेहैं. ताते सब दुःखका मूल युवावस्थाहै. जैसे सूर्यके उदयते सूर्यमुखी कमल खिल आतेहैं, तैसे चित्तरूपी कमल संसाररूपी पंखुरी, अरु सत्यतारूपी सुगंध कर खिल आताहै. अरु तृष्णारूपी भौंरा तिसपर आय बैठताहै, अरु विषयकी सुगंध लेताहै.

हे मुनीश्वर! संसाररूपी रात्रिहै, तिसमें युवावस्था रूपी तारागण प्रकाशतेहैं, कारण यह जो शरीर युवावस्था करि सुशोभित होताहै, अरु युवावस्था शरीरको जर्जरी भाव करके हो आतीहै. जैसे धानका छोटा वृक्ष हरा तब लग रहताहै, जबलग उसको फूल नहीं आया; जब फूल आतेहैं तब सूखनेको लगताहै; अरु अन्नके कन परिपक्क होतेहैं, तब अन्नके छोटे वृक्ष जर्जर भावको पातेहैं. उसकी हरियावल नहीं रह सकती. तैसे जब लग जवानी नहीं आई, तबलग शरीर सुंदर कोमल रहताहै जब जवानी आई तब शरीर क्रूर होजाताहै, फेर परिपक्क होकर क्षीण होजाताहै; अरु वृद्ध होताहै. ताते.

हे मुनीश्वर! ऐसी दुःखकी मूलरूप युवा अवस्था है तिसकी मुझको इच्छा नहीं; जैसे समुद्र बडे जलकर

पूर्णहै; तरंगको पसारताहै; अरु उछलताहै; तोऊभी मर्यादाका त्याग नहीं करता; ईश्वरकी आज्ञा मर्यादामें रहनेकीहै, अरु युवावस्था तो ऐसीहै जो शास्त्रकी मर्यादा, अरु लोककी मर्यादा मेटके चलतीहै; अरु तिनको अपना विचार नहीं रहता जैसे अंधकारमें पदार्थका ज्ञान नहीं होता, तैसे युवावस्थामें शुभ अशुभका त्याग नहीं होता. जिसको विचार नहीं रहा तिसको शांति कहांते होवे; सदा व्याधि तापमें जरा रहताहै; जैसे जल बिना मच्छको शांति नहीं होती, तैसे विचार बिना सदा पुरुष जलता रहताहै.

जब युवावस्थारूप रात्रि आती है, तब काम पिशाच आयके गर्जता है; तिसकर इसको यही संकल्प उठते हैं; जो कोऊ कामी पुरुष आवे, तिसके साथमें यही चर्चा करों– हे मित्र! वह कैसी सुंदर है? अरु कैसे उसके कटाच्छ हैं? सो किस प्रकार मोकों प्राप्त होय. हे मुनीश्वर! इस इच्छाके साथ वह सदा जरतारहता है. जैसे मरुथलकी नदीको देख मृग दौरता है; अरु जलकी अप्राप्ति कर जलता है; तैसे कामी पुरुष विषयकी वासना करके जलता है, अरु शांति नहीं पाता है.

हे मुनीश्वर! मनुष्य जन्म उत्तम है, परंतु जिनके अभाग्य हैं, तिनको विषयते आत्मपदकी प्राप्ति नहीं

होती. जैसे चिंतामणि कोईको प्राप्त होवे, तो तिसका निरादर करे और उसको जाने नहीं, और डारि देवे, तैसे जो पुरुष मनुष्य शरीर पायकर आत्मपद नहीं पाया, सो बडे अभागी हैं; अरु मूर्खता करके अपने जीवनेको व्यर्थ खोय डारता है. अरु युवा अवस्थामें परम दुःखका क्षेत्र अपने निमित्त बोता है, अरु जेते विकार युवावस्थामें हैं, सो सब आयके इनको प्राप्त होते हैं मान, मोह, मद इत्यादि विकार करके पुरुषार्थका नाश करता है. हे मुनीश्वर! ऐसे युवावस्था बडे विकारको प्राप्त करती है. जैसे नदी वायुसों अनेक तरंग पसारती है, तैसे युवावस्था चित्तके अनेक कामको उठावती है. जैसे पंखी पंख कर बहुत उडता है; जैसे सिंह भुजाके बलसों पशुको मारनेको दौरता है, तैसे चित्त युवावस्था कर विक्षेपकी ओर धावता है.

हे मुनीश्वर! समुद्रका तरना कठिन है, काहेतेकि तामें जल अथाह है, अरु विस्तार भी बडा है; अरु तिसमें मच्छ, कच्छ, मगर, बडे देहधारी रहते हैं; ऐसा दुस्तर समुद्रका तरना सो मैं सुगम मानता हों, परंतु युवावस्था का तरना महा कठिन है. कारण यह कि युवावस्थामें निर्दोष रहना कठिन है; ऐसी शंकटवारी जो युवावस्था है, तिसमें चलायमान नहीं होते सो पुरुष धन्य हैं! अरु वंदना करने योग्य हैं. हे मुनीश्वर! यह

युवावस्था चित्तको मलीन कर डारती है. जैसे जलकी बावरी है, तिसके निकट राख कांटे रहे होंय, सो पवन चलनेते सब आय बावरीमें गिरें; तैसे पवनरूपी युवावस्था दोषरूपी धूर कांटेनको चित्तरूपी बावरीमें डारके मलीन कर देती है. ऐसे अवगुण करके पूर्ण जो युवावस्था, तिनकी इच्छा मुझको नहीं है.

युवावस्था! मेरे पर यही कृपा करनी, जो तेरा दर्शन नहीं होवे; तेरा आवना मैं दुःखका कारण मानता हूं. जैसे पुत्रके मरनका शंकट पिता शोष नहीं सकता, अरु सुखका निमित्त नहीं देखता; तैसा तेरा आवना मैं सुखका निमित्त नहीं देखता ताते मुझपर दया करनी जो अपना दर्शन न होवे!

हे मुनीश्वर! युवावस्थाका तरना महा कठिन है. जो कोऊ जोबनवान होवे, सो नम्रता संयुक्त होवे; और शास्त्रके गुण, वैराग्य, विचार, संतोष, शांति, इनकर संपन्न होवे सो दुर्लभ है. जैसे आकाशमें वन होना आश्वर्य है; तैसे युवावस्थामें, वैराग्य, विचार, शांति, संतोष पावना यह बडा आश्वर्य है. ताते मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर युवावस्थाके दुःखकी मुक्ति होय जाय; अरु आत्मपदकी प्राप्ति होय.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे युवा गारुडी वर्णनं नाम पंचदशः सर्गः १५

षोडशः सर्गः १६

अथ स्त्रीदुराशा वर्णनं.

हे मुनीश्वर! जिस काम विलासके निमित्त स्त्रीकी वांछा करता है, सो स्त्री, अस्थि, मांस, रुधिर, मूत्र, विष्ठाकारि पूर्ण है; इसीकी पूतरी बनी े जंत्रीकी बनी पुतरी होती है, सो तागेसों कर अनेक चेष्टा करती है; तैसे यह अस्थि, मांसादिककी पुतरीमें कछु और नहीं है. जो विचारकर नहीं देखता तिसको रमणीक दिखती है. जैसे पर्वतके शिखर दूरते सुंदर अरु निकटते असार हैं; पडे पत्थरई दिखते हैं; तैसे स्त्री, वस्त्र अरु भूषणसों करि सुंदर भासती है; अरु जो अंगको भिन्न भिन्न विचार कर देखो तो सार कछु नहीं है जैसे नागनीके अंग बहुत कोमल होते हैं; परंतु उसका स्पर्श करो तो काटके मार डारती है; तैसे जो कोई स्त्रीको स्पर्श करते हैं तिनको नाश कर डारती है; जैसे विषकी बेलिदेखने मात्र सुंदर लगती है, परंतु स्पर्श कियेते मार डारती है. जैसे हस्तीको जंजीर से बांधो तब जिस द्वारपै रहता है, तहांई स्थिर रहता है; तैसे अज्ञानीका जो चित्तरूपी हस्ती है सो कामरूपी जंजीरसे बंधा हुआ स्त्रीरूपी एक स्थानमें स्थिर रहता है; वहांते कहूं जाय नहीं सकता. और जब हस्तीको महावत

अंकुशका प्रहार करता है, तब बंधनको तोरके निकस जाता है, तैसे यह चित्तरूपी मूर्ख हस्ती है, सो महावतरूपी गुरुका उपदेशरूपी अंकुश्का वारंवार प्रहार करता है तब सो भी निर्बंध होय जाता है.

हे मुनीश्वर ! कामी पुरुष जो स्त्रीकी वांछा करता है, सो अपने नाशके निमित्त करता है; जैसे कदली बनका हस्ती,कागजकी हस्तिनी देखकर छल पायके बंधन में आता है, ताते परमदुःख पाता है; तैसे परमदुःखका मूल स्त्रीका संग है. हे मुनीश्वर ! जैसे वनके दाहकी अग्नि सबको जलावती है, तैसे स्त्रीरूपी अग्नि तिसते अधिक है; काहेते जो उस अग्निके परश कियेते तप्त होते हैं; और स्त्रीरूपी अग्नि तो स्मरण मात्रमें जलाती है. और जो सुख रमणीय दिखाता है, सो आपातरमणीय है. जब स्त्रीके सुखका वियोग होता है, तब मुर्देकी नांई होजाता है. तिस कालमें भी (स्त्रीसंयोगकाल) शव (मुर्दा) जैसा हो जाता है.

हे मुनीश्वर ! यह तो अस्थि, मांस, रुधिरका पिंजरा है, सो अग्निमें भस्म होजायगा; अथवा; पशु पक्षीको खानेका आहार होयगा. जिनको देखकर पुरुष प्रसन्न होता है, तिसके प्राण आकाशमें लीन होजाते हैं; ताते इस स्त्रीकी इच्छा करनी सो मूर्खताहै; जैसे अग्निकी ज्वालाके ऊपर श्यामता है, तैसे स्त्रीके शीश ऊपर श्या-

म केशहैं. जैसे अग्निके स्पर्श कियेते जलता है;तैसे स्त्रीके स्पर्श कियेते पुरुष जलताहै. ताते जलना दोनोंमें तुल्य है. हे मुनीश्वर ! इसको नाश करनहारी स्त्रीरूपी अग्नि है; जो स्त्रीकी इच्छा करते हैं सो महामूर्ख अज्ञानी हैं; सो अपने नाशके निमित्त इच्छा करते हैं; जैसे पतंग अपने नाशके निमित्तदीपककी इच्छा करते हैं;तैसे कामी पुरुष अपने नाशके निमित्त स्त्रीकी इच्छा करता है.

हे मुनीश्वर ! स्त्रीरूपी विषकी बेलि है; अरु हस्त पाँवके अग्र तिसके पत्र हैं; अरु भुजा डारी हैं; और अस्थिरूप गुंछे हैं नेत्रादिक इंद्रिय तिसके फूल हैं; अरु कामी पुरुष रूपी भौंरे आय बैठते हैं; अरु काम रूपी धीवरने स्त्रीरूपी जाल पसारी है; तिसपर कामीपुरुषरूपी पक्षी, आय फँसते हैं कामरूपी धीवर तिसको फँसायकर परमकष्ट प्राप्त करता है. ऐसे दुःखके देनहारी स्त्रीकी जो वांछा करते हैं, सो महामूर्ख हैं.

हे मुनीश्वर ! स्त्रीरूपी सर्पनी है; जब तिसका फुंकारा निकसता है, तब तिसके निकट कमल फूल सब जल जाते हैं; ऐसी स्त्रीरूपी सर्पनी है, तिसका इच्छारू-

हे मुनीश्वर ! जैसे व्याध छलकर मच्छीको फँसावता है, तैसे कामी पुरुष मच्छीवत, सुंदर स्त्रीरूपी जाल देखके फँसता है; और; स्नेहरूपी तागेसों कामी पुरुष बंधन पाय खैंचाया चला जाता है; फिर तृष्णारूपी छुरीसों काम मार डारता है. हे मुनीश्वर ! ऐसे दुःखके देनहारी स्त्रीकी मुझको इच्छा नहीं. अरु कामरूपी पारधीहै, तिसते रागरूपी इंद्रियसों जाल विछाय कामी पुरुषरूपी मृगको आशक्त कर डारता है. अरु स्त्रीतो स्नेहरूपी डोरी है; तिसकर कामी पुरुषरूप बेलसों बँधा है. अरु स्त्रीका मुखरूपी जो चंद्रमाहै तिसको देखकर कामी पुरुषरूपी कमलनी खिलि आती है; जैसे चंद्रमुखी कमल चंद्रमाको देखकर प्रसन्न होते हैं; और सूर्यमुखी नहीं होते, तैसे यह कामी पुरुष भोगहू कर प्रसन्न होते हैं; अरु ज्ञानवान प्रसन्न नहीं होते हैं. जैसे नकुल सर्पको बिलमेंते निकासके मारता है; तैसे कामी पुरुषको स्त्री, आत्मानंदमेंते निकालके मार डारती है.जब स्त्रीके निकट जाता , तब उसको भस्म करडारती है.जैसे सूखे तृण अरु घृतको अग्नि भस्म कर डारती है;तैसे कामीपुरुषको स्त्रीरूपी नागनी भस्म कर डारतीहै

हे मुनीश्वर ! स्त्रीरूपी जो रात्रि है, तिसका स्नेहरूपी अंधकार है; तिसमें काम क्रोधादिक उलूक अरु पिशाच हैं. हे मुनीश्वर ! जो स्त्रीरूपी खड्गके प्रहारते यु-

वारूपी संग्रामते बचा है; सो पुरुष धन्य है! तिसको मेरा नमस्कार है. स्त्रीका संयोग परम दुःखका कारण है, ताते मुझको इसकी इच्छा नहीं. हे मुनीश्वर! जो रोग होता है, तिसके अनुसार ओषधि करता है, तब रोग निवृत्त होता है अरु कोऊ कुपथ्य दिये, वाका प्रबल होता है, रोग बढ जाता है; ताते मेरे रोगके अनुसार ओषधि करो; सो.

मेरा रोग सुनिये-जरा अरु मृत्यु मुझको बडा रोग है; तिसके नाशकी ओषधि मुझको दीजिये और स्त्रियादिक जो भोग हैं, सो सब इस रोगके वृद्धि कर्त्ता हैं. जैसे अग्निमें घृत डारिये, तब बढ जाती है; तैसे भोग. सों जरा मृत्यु आदिरोग सो बढता है; ताते इसरोगकी निवृत्तिका औषध करो, नहीं तो सबका त्याग कर वनमें जाय रहूंगा.

हे मुनीश्वर! जिसको स्त्री है तिसको भोगकी इच्छा भी होती है, और जिसको स्त्री नहीं तिसको स्त्रीकी इच्छा भी नहीं. जिसने स्त्रीका त्याग किया है, तिसने संसारकाभी त्याग किया है; सोई सुखी है; संसारका बीज स्त्री है, ताते मुझको स्त्रीकी इच्छा नहीं, मुझको सोई ओषधि दीजे, जिसते जरा मृत्यु आदि रोगकी निवृत्ति होइ.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे स्त्रीदुराशा वर्णनं नाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥

सप्तदशः सर्गः १७ ।

अथ जरा अवस्था वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! बालक अवस्थातो महा जड है, अरु अशक्त है; और जब युवावस्था आती है, तब बालावस्थाको ग्रहण कर लेती है. तिसके अनंतर. वृद्धावस्था आतीहै, तब शरीर जर्जरीभूत होजाता है अरु बुद्धि क्षीण होजातीहै; बहुरि मृत्युको पाताहै. हे मुनीश्वर! इस प्रकार अज्ञानीका जीवना व्यर्थहै, कछु अर्थकी सिद्धि नहीं होतीहै. जैसे नदीके तटपर वृक्ष होतेहैं सो जलके प्रवाहकर जर्जरीभूत होजातेहैं; तैसे वृद्धावस्थामें शरीर जर्जरीभूत होजाताहै; जैसे पवनसों पत्र उडजाताहै, तैसे वृद्धावस्थामें शरीर नाश पाताहै. जेते कछु रोगहैं, सो सब वृद्धावस्थामें आय प्राप्त होतेहैं; अरु शरीर कृश होय जाताहै; अरु स्त्री पुत्रादिक सब वृद्धका त्याग करदेतेहैं; जैसे पक्के फलको वृक्ष त्याग देताहै, तैसे वृद्धको कुटुंब त्याग देताहै, अरु देख हँसते हैं जैसे बावरेको देखते हँसके बोलतेहैं; कि इनकी बुद्धि सब जात रही. जैसे कमल फूलनके ऊपर बरफ पडता है, अरु कमल जर्जरी भूत होजाताहै, तैसे जरा अवस्थामें पुरुष जर्जरी भावको प्राप्त होताहै, अरु शरीर कुबरा होजाताहै; केश श्वेत होजातेहैं; शक्ति क्षीण होजा-

तीहै. जैसे चिरकालका बडा वृक्ष होताहै, तिसमें घुन होताहै; तैसे शक्ति कछु रहत नहीं.

हे मुनीश्वर! औरहू सब कृति क्षीण होजातीहै, परंतु एक आशक्ति मात्र रहतीहै. जैसे बडे वृक्षपै उलूक आय रहतेहैं; तैसे इसमें क्रोध शक्ति आय रहतीहै, और शक्ति सब क्षीण होजातीहै. हे मुनीश्वर! जरा अवस्था दुःखका घरहै. जब जरा अवस्था आतीहै, तब सब दुःख इकट्ठे होतेहैं तिनकर महादीन होजातेहैं. अरु युवावस्थाका जो कामका बल रहताहै, सो जरामें क्षीण होजाताहै; अरु इंद्रियकी आशक्ति घट जातीहै, तिनते चपलताका अभाव होजाताहै. जैसे पिताके निर्धन हुवे पुत्र दीन होजाताहै; तैसे शरीर निर्बल हुवे इंद्रियाहू निर्बल हो जातीहैं; और एक तृष्णा उन्मत्त हो बढ जातीहै.

हे मुनीश्वर! जब जरारूपी रात्रि आतीहै, तब खांसीरूपी गिदडी आय शब्द करतीहै; अरु आधिव्याधि रूपी उलूक आय निवास करते हैं. हे मुनीश्वर! ऐसी जो नीच वृद्धावस्थाहै, तिसकी मुझको इच्छा नहीं. यह देह जरा आयेते कूबरी होय जातीहै; जैसे पक्के फलसों कर वृक्ष झुक जाताहै, तैसे जराके आयेते देह कुबरी होजातीहै. जो युवावस्थामें स्त्री पुत्रादिक चाहतेथे, अरु टहल करते थे, सो सब उसको त्याग देतेहैं. जैसे वृद्ध बैलको बैलवारा त्याग देताहै; तैसे इसको बंधु

त्याग देतेहैं; और देखके हँसतेहैं; अरु अपमान करते हैं. तिनको ऊंटकी नाईं भासताहै. हेमुनीश्वर! ऐसी जो नीच अवस्थाहै तिसकी मुझको इच्छा नहीं. अब जो कछु कर्तव्य मुझको कहो सो मैं करों.

इस शरीरकी तीनों अवस्थामें कोऊ सुखदाई नहीं है; क्योंकि बाळावस्था महा मूढ है अरु युवावस्था महा विकारवानहै; अरु जरा अवस्था महादुःखका पात्रहै बालावस्थाको युवा अवस्था गृहण कर लेतीहै अरु युवाअवस्थाको जरा अवस्था गृहण कर लेतीहै अरु जरा अवस्थाका मृत्यु गृहण कर लेताहै. यह अवस्था सब अल्पकालकीहै; इनके आश्रय करके मेरेको कहा सुख होनाहै; ताते मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर इस दुःखसे मुक्त होजाऊं.

हेमुनीश्वर! जब जरा अवस्था आतीहै तब मरना भी निकट आताहै. जैसे संध्याके आये रात्रि तत्काल आय जातीहै; और जो संध्याके आये दिनकी इच्छा करतेहैं, सो महा मूर्खहैं; तैसे जराके आये जीवनेकी आशा रखनी सो महामूर्खताहै. हे मुनीश्वर! जैसे बिल्ली चितौनी करतीहै, जो चूहा आवे तो पकर लेउँ तैसे मृत्यु चितवत है, कि जरा अवस्था आवे तो मैं इसका गृहण कर लेऊँ अरु जरा अवस्था मानो कालकी सखी है. रोगरूपी मशालेकर शरीररूपी मांसको सुखाती है, तब

काल जो इसका स्वामी है, सो आयकर भोजन कर लेता है. अरु शरीररूपी घर है, तिसका स्वामी काल है-जब काल घरमें आवे, तब तिसके आगे तीन पटरानी आती हैं; पहिली अशक्तता, दूसरी अंगमें पीडा, तीसरी खांसी, सो शीघ्र श्वासको चलावती है; अरु श्वेत केश होते हैं, सो चमरकी नाईं झुलते हैं. ऐसी जो कालकी सहेली हैं सो प्रथमही आइ प्रवेश करती हैं; अरु जरा रूपी कलँगी शरीरको बनावती है, तब जो वाका स्वामी काल है, सो आय प्रवेश करता है.

हे मुनीश्वर! जो परम नीच अवस्था है, सो जराही है; सो जब आती है तब शरीर जर्जरी भूत कर देती है; कँपनेको लगती है; अरु शरीरको निर्बल कर देती है अरु क्रूर कर देती है. जैसे कमलपर बरफकी बर्षा होवे, अरु जर्जरी भूत होय जाय तैसे शरीरको जर्जरी भूत कर डारती है. जैसे बनमें बाघिन आयके शब्द करती है, अरु मृगका नाश करती है, तैसे खांसी रूपी बाघिन आय मृगरूपी बलका नाश करती है.

हे मुनीश्वर! जब जरा आवत है, तब मृत्यु प्रसन्न होता है. जैसे चंद्रमाके उदयते कमलनी खिल आती है, तैसे मृत्यु प्रसन्न होता है. अरु यह जरा अवस्था बडी दुष्टहै; बडे बडे योद्धे हुए हैं तिसको भी दीन कर दिये हैं. यद्यपि बडे शूर मैंने संग्राममें शत्रुको जीते हैं,

रूपी डब्बेमें दुःख रूपी अनेक रत्न रहते हैं. अरु जरा-
रूपी वसंतऋतु है, तिस करके शरीररूपी वृक्ष दुःख-
रूपी रस करके पूर्ण होता है. जैसे हस्ती सांकरसों बं-
धा हुआ दीन होजाता है; तैसे जरारूपी सांकर करके
बँधा पुरुष दीन होजाता है; अरु अंग सब शिथिल हो
जाता है; बल क्षीण होजाता है, अरु इंद्रियां भी निर्ब-
ल हो जाती हैं; अरु शरीर जर्जरी भावको प्राप्त होता है;
परंतु तृष्णा नहीं घटती है; नित्य बढती चली जाती है
जैसे रात्रि आती है तब सूर्य वंशी कमल सब मुंद जात
हैं; तब पिशाचनी आय विचरने लगती हैं, अरु प्रसन्न
होती हैं; तैसे जरारूपी रात्रिके आयेते सब श-
क्तिरूपी कमल मूंद जाते हैं, अरु तृष्णारूपी पिशा-
चनी प्रसन्न होती हैं.

हे मुनीश्वर! जैसे गंगाके तटपर वृक्ष रहते हैं, सो

गंगाजलके वेगसों जर्जरीभूत होजाते हैं, तैसे जो आयुरूपी प्रवाह चलता है, तिसके वेगकर शरीर जर्जरी भूत हो जाता है. जैसे मांसके टुकडेको देख आकाशते उडती चील नीचे आय ले जाती है; तैसे जरा अवस्थामें शरीररूपी मांसको काल ले जाता है. हे मुनीश्वर! यह तो कालका ग्रास बना हुआ है. जैसे सुंदर वृक्षको हस्ती खाय जाता है, तैसे जरा अवस्था वारा शरीरको, काल देखके भोजन कर जाता है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे जरा अवस्था निरूपणं नाम सप्तदशःसर्गः॥१७॥

अष्टादशः सर्गः १८।

अथ काल वृत्तांत वर्णनं.

रामोवाच, हे मुनीश्वर! संसाररूपी गर्तहै, तिसमें अज्ञानी गिराहै सो संसाररूपी गर्त अल्पहै; अरु अज्ञानी तो बडा होगयाहै. संकल्प विकल्पकी आधिक्यताते बढेहैं अरु जो ज्ञानवान पुरुषहैं सो संसारको मिथ्या जानतेहैं, फिर संसाररूपी जालमें फँसते नहींहैं. अरु जो अज्ञानी पुरुषहै सो संसारको सत्य जानकर संसारकी आस्थारूपी जालमें फँसताहै. अरु संसारके भोगकी वांछा करतेहैं सो ऐसेहैं-जैसे दर्पणमें प्रतिबिंब देखकर

बालक पकरनेकी इच्छा करताहै; तैसे अज्ञानी संसार को सत्य जानकर जगत्‌के पदार्थकी वांछा करताहै. यह मेरेको होवे; यह मेरेको नाहिं होवे अरु यह जो सुखहै सो नाशात्मकहै, अभिप्राय यह जो आवतेहैं अरु जाते हैं, सो स्थिर नहीं रहतेहैं; इनका काल गृहण करताहै. जैसे पक्के अनारको चूहा खाय जाताहै, तैसे सब पदारथको काल खाताहै.

हे मुनीश्वर! जेते कछु पदारथहैं, सो काल ग्रासितहैं, बडे बडे बली सुमेरु जैसे गंभीर बलवारे पुरुषोंको ग्रास कालने कियेहैं जैसे सर्पको नकुल भक्षण करजाताहै, तैसे बडे बलीका ग्रास काल करजाताहै. अरु जगत् रूपी एक गूलरका फलहै, तिसमें जो मज्जाहै सो ब्रह्मादिक है, सो फलका जो वृक्षहै तिनका जो वनहै, सो ब्रह्मरूपहै, तिस ब्रह्मरूप वनमें जेते कछु वनहैं. सो सब इसका आहारहैं, सबका भक्षण काल करजाताहै.

बलिष्टहै;

औरकी

कहा कहनीहै. और हमारे जो बडे ब्रह्मादिक तिनका भी काल ग्रास करजाताहै; जैसे मृगका ग्रास सिंह कर लेता है, और काल किसी करके जाना नहीं जाता. छिन, घरी, प्रहर, दिन, मास, और वर्षादिक कर जानिये सो कालहै; और कालकी मूर्त्ति प्रगट नहीं है, ऐसा अप्रग-

ट रूपहै; अरु किसीकी स्थिति होने नहीं देता. अरु एक बेलि कालने पसारीहै, तिनकी त्वचा रात्रिहै; अरु फूल तिसका दिनहै; और जीवरूपी भौंरे तिसपर आय बैठते हैं.

हे मुनीश्वर! जगत्‌रूपी गूलरका फूलहै, तिसमें जीवरूपी मच्छर बहुत रहतेहैं, तिस फूलका भक्षण काल कर जाताहै. जैसे अनारका भक्षण तोता करता है, तैसे काल भक्षण करताहै. अरु जगत्‌रूपी वृक्षहै, अरु जीवरूपी तिसके पत्र हैं, तिसका कालरूपी हस्ती भक्षण करजाताहै. अरु शुभ अशुभरूपी भैशानको कालरूपी सिंह छेद छेदके खाताहै.

हे मुनीश्वर! यह काल महाक्रूरहै, सो किसी पर दया नहीं करता; सबका भोजन कर जाताहै. जैसे मृग सब फूलनको खाय जाताहै, तिसते कोऊ रहता नहीं है, परंतु एक कमल उसते बचे हैं, सो कमल कैसाहै? शांति अरु मैत्री तिसके अंकुरहैं, अरु चेतनता मात्र प्रकाश है, इस कारणते वह बचाहै, सो कालरूपी मृग इसको पहुँच नहीं सकता. इससे प्राप्तहुवा कालभी लीन होजाताहै; और.

जेता कछु प्रपंचहै, सो सब कालके मुखमेंहै. ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, कुबेर, आदिकर सब मूर्त्ति कालकी धरी हुईहैं, फिर तिनको भी अंतर्ध्यान करदेताहै. हेमुनीश्वर! उ-

त्पत्ति, स्थिति, अरु प्रलय;सब कालते होतेहैं. अनेक बेर महाकल्प काहू ग्रहण करलेताहै, अरु अनेक बेर करेगा. अरु कालको भोजन कियेते तृप्ति कदाचित् नहीं होती; अरु कदाचित् होनहारीहू नाहीं. जैसे अग्नि घृतकी आहुतीसों तृप्त नहीं होता,तैसे जगत् अरु सब ब्रह्मांडका भोजन करतेहू काल तृप्त नहीं होता; अरु इसका ऐसा स्वभाव है, जो इंद्रको दरिद्री कर देता है, अरु दरिद्रीको इंद्र कर देता है; और सुमेरुको राई बनाता है, अरु राईका सुमेरु करता है; सबते बडे ऐश्वर्यवारेको नीच करडारता है;सबते नीचको ऊंच कर डारता है.अरु बुंदका समुद्र कर डारता है, अरु समुद्रका बुंद करता है ऐसी शक्ति कालमें है.अरु जीवरूपी जो मच्छ है; तिनको शुभाशुभ कर्मरूपी छुरे सों छेदत रहता है; फिर कैसा है? जो काल कूपका चक्र है; जीवरूपी टंटको शुभ अशुभ कर्मरूपी रसरीसों बांधकर ले फिरता है. फिर कैसा है? जीवरूपी वृक्षको रात्रि अरु दिनरूपी कुहारा कर छेदता है.-

हे मुनीश्वर! जेता कछु जगत् बिलास भासता है, सो सबका गृहण काल कर लेवेगा अरु जीवरूपी रत्नका काल डब्बा है; सो अपने उदरमें डारता जाता है, और खेल करता है. अरु चंद्र सूर्यरूपी गेंदको कबहूं अर्द्ध उछालता है; कबहूं नीचे डारता है. अरु जो म-

हापुरुष है सो उत्पत्ति प्रलयमें जो पदार्थ हैं, तिनमें स्ने-
ह किसीके साथ नहीं करते; तिसका नाश करनेको का-
ल समर्थ नाहीं. जैसे मुंडकी माला महादेवजी गरेमें ध-
रते हैं, तैसे यह भी जीवकी माला गरेमें डारता है.

हे मुनीश्वर! जो बडे बडे बलिष्ट हैं, तिनका भी का-
ल ग्रहण कर लेता है. जैसे समुद्र बडा है, तिनका बड-
वाग्नि पान करलेता है; और जैसे पवन भोजपत्रको उ-
डाता है, तैसा कालका बल है. किसीकी सामर्थ्य नाहीं,
जो इसके आगे स्थित रहे.

हे मुनीश्वर! शांति गुण प्राधान्य जो देवता हैं, अरु
रजोगुण प्राधान्य जो बडे राजा हैं; अरु तमोगुण प्रा-
धान्य जो दैत्य राक्षस हैं, तिनमें कोऊ समर्थ नहीं, जो
इसके आगे स्थित होवे. जैसे टोकनीमें अन्न अरु जल
धरके अग्निपर चढाय दियेते फिर उछलते हैं, सो अन्न-
के दाने कडछी कर कबहूं ऊर्ध्व और कबहूं नीचे जाते
हैं, तैसे जीवरूपी अनेक दाने जगत् रूपी टोकनीमें प-
रे हुए राग द्वेष रूपी अग्निपै चढे हैं, अरु कर्मरूपी कड-
छीकर कबहूं ऊर्ध्व जाता है, कबहूं नीचे जाता है. हे मु-
नीश्वर! यह काल किसीको स्थिर होने नहीं देता, म-
हा कठोर है, दया किसी पर नहीं धरता इसका भय मु-

झको रहता है, ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर मैं कालते निर्भय होजाऊं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे काल वृत्तांत निरूपणं नाम अष्टादशः सर्गः॥१८॥

एकोनविंशतिमः सर्गः १९।

अथ काल विलास वर्णनं.

श्रीरामोवाच. हे मुनीश्वर! यह काल बडा बलिष्ठ है. जैसे राजाके पुत्र शिकार खेलने जाते हैं, तब बनमें बडे पशु पक्षी देखते हैं, फिर मारते हैं; तैसे यह संसाररूपी बनहै, तिसमें प्राणी मात्र पशु पक्षी हैं; जब कालरूपी राजपुत्र तिसमें शिकार खेलने आता है, तब सब जीव भयको पाते हैं, फिर तिसकोई मारता है.

हे मुनीश्वर! यह काल महा भैरव है, सबका ग्रास कर लेता है. प्रलयमें सबका प्रलय कर डारता है. अरु इसकी जो चंडिका शक्ति है, तिसका बडा उदर है; अरु कालिका सबका ग्रास करती है, पाछे, नृत्य करती है. जैसे वनके मृगको सिंह अरु सिंहनी भोजन करते हैं, और नृत्य करते हैं, तैसे जगत् रूपी बनमें जीव रूपी मृगका भोजन करके काल अरु कालिका नृत्य करते हैं. बहुरि इनते जगत्का प्रादुर्भा-

व होता है. नाना प्रकारके पदार्थनको रचते हैं. पृथ्वी, बगीचे, बावरी, आदि सब पदारथ इनही ते उत्पन्न होते हैं; अरु सुंदर जीवकी हू उत्पत्ति इनते होती है; और एक समयमें उनका नाशभी कर देती है. सुंदर समुद्र रचके फिर वामें अग्नि लगाय देती है अरु सुंदर कमलको बनायके फिर वाके ऊपर बरफकी बरखा करती है; इत्यादि नाना पदार्थनको रचिके तिनका नाश करती है. जहां बडे स्थान बसते हैं तिनको ऊजड कर डारती है; फिर उजाडमें बस्ती कर धरती है; अरु नाश भी करती है; स्थिर रहने किसीको नहीं देती. जैसे बागमें बानर आयके वृक्षको ठहरने नहीं देता तैसे कालरूपी बानर किसी पदारथको स्थिर रहने नहीं देता.

हे मुनीश्वर इस प्रकारसों सब पदारथ कालसों कर जर्जरी भूत होते हैं, तिसका मैं आश्रय किस रीतसों करों? मुझको तो नाशरूप भासता है; ताते अब मुझको किसी जगत्के पदारथकी इच्छा नहीं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे कालविलास वर्णनं नाम एकोनविंशतितमः सर्गः॥१९॥

विंशतिमः सर्गः २०।

अथ कालकालिका वर्णनं.

रामोवाच, हेमुनीश्वर! इस कालका महा पराक्रम है; इसके तेजके सन्मुख रहनेको कोऊ समर्थ नहीं क्षणमें ऊंचको नीच कर डारता है, अरु नीचको ऊंच कर डारता है, तिसका निवारण कोऊ कर नहीं सकता;सब इसीके भयसे परे कंपते हैं. यह महा भैरव है, सब विश्वका ग्रास कर लेता है. अरु इसकी चंडिकारूप शक्ति है सो बलवान् है, सो नदीरूप है, तिसका उल्लंघन कोऊ नहीं कर सकता है; अरु महाकालरूप काली है, तिसका बडा भयानक आकार है,अरु कालरूप जो रुद्र है, तिसते अभिन्नरूपी कालिका है; सो सबका पान कर लेती है;पाछे भैरव अरु भैरवनी नृत्य करते हैं.सो.

काल कालिका कैसी है ? बडा जिसका आकाशमें शीश है, अरु जिसके पातालमें चरण हैं, दशोदिशा जिसकी भुजा हैं; सप्त समुद्र जिसके हाथमें कंकन हैं, संपूर्ण पृथ्वीरूप तिसके हाथमें पात्र हैं, तिसके ऊपर जीव है सो भोजन योग्य है. हिमालय अरु सुमेरु पर्वत दोनों कानमें बडे रत्न हैं; चंद्रमा सूर्य जिसके लोचन हैं; अरु सब तारागण वाके मस्तकमें बिंदु हैं; अरु हाथमें त्रिशूल अरु मुशल आदि शस्त्र हैं; अरु जिसके हा-

थमें तंद्रा फांसा है, तिसकर जीवको मारता है. ऐसी जो कालिका देवी है, सो सब जीवका ग्रास करके महाभैरव जो रुद्र है, तिसके आगे नृत्य करती है. अरु अट्ट, अट्ट, ऐसा शब्द करती है; अरु जीवका भोजन करके उनकी रुंडमाला गरेमें धारण करती है; सो भैरवके आगे नृत्य करती है. अरु भैरव कैसा है? कि जिसके सन्मुख रहनेकी शक्ति कोऊमें नहीं है; अरु जहां उजार है तहां छिनमें बस्ती करडारते हैं; अरु जहां बस्ती होवे तहां छिनमें उजार करते हैं. इसीते तिनका नाम देव कहते हैं, अरु तिसको कृतांत भी कहते हैं. काहेसेकि बडे २ पदारथ होते हैं अरु तिसका नाश भी करता है, अरु स्थिर किसीको रहने नहीं देता; तिसते इसका नाम कृतांत है; अरु नित्यरूपीहू यही है. जो इस आदि धरा है सोई कर्त्ता अरु कर्म रूप है; काहेते कि परिणाम जिसका अनित्यरूप है, इसीते इसका कर्म नाम है; सो कैसे नाश करता है? जब अभावरूपी धनुष हाथमें धरता है, तिसकर राग दोषरूपी बाण चलाता है, तिस बाणते जर्जरीभूत करके नाश करता है; अरु उत्पत्ति नाशमें उसको यत्न भी कछु करना नहीं पडता है; इसको तो खेल जैसा है; जैसे बालक मृत्तिकाकी सेना बनाता है. फिर उठाय कर नाशभी करदेताहै, तैसे कालको उपजावने अरु नाश करने

में यत्न करना नहीं पडता है. हे मुनीश्वर! कालरूपी धीवरहै, तिसने क्रियारूपी जाल पसारीहै, तिसविषे जीवरूपी पक्षी पडे फँसतेहैं, सो फँसे हुए शांतिको नहीं प्राप्त होतेहैं. हे मुनीश्वर! यह तो सब नाशरूप पदार्थहैं इनमें आश्रय किसका करना, जिसकर सुखी होवे! तो स्थावर जंगम जगत् सब कालके मुखमेंहै;यह सब नाश-रूप मुझको दृष्टिमें आवेहैं, ताते जो निर्भय पद होय सो मुझसे कहो.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे काल बिलास वर्णनं नाम विंशतितमः सर्गः ॥२०॥

एकविंशतितमः सर्गः २१।

अथ काल विलास वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर जेते कछु पदारथ भासते हैं सो सब नाशरूपहैं,ताते किसकी इच्छा करों? और कौनको आश्रय करों? इनकी इच्छा करनी सो मूर्खता है. अरु जेती कछु चेष्टा अज्ञानी करताहै सो सब दुःखके निमित्तहै. अरु जीवनेमें अर्थकी सिद्धि कछु नहींहै; काहेते जो बालक अवस्था होतीहै, तब मूढता रहतीहै, विचार कछु नहीं रहता. अरु जब युवा अवस्था आतीहै, तब मूर्खता करके विषयको सेवतेहैं; अरु मान मोहादि

विकारसों मोहेई जातेहैं; तामें भी विचार कछु नहीं होता अरु स्थिरभी नहीं रहते, फिर दीनका दीन रहिके विषयकी तृष्णा करताहै; शांतिको नहीं पाताहै.

हे मुनीश्वर! आयुष्य जो है सो महाचंचलहै; अरु मृत्यु तो निकटहै, वाको अन्यथा भाव नहीं होतहै. हेमुनीश्वर! जेते कछु भोगहैं सो रोगहैं; अरु जिसको संपदा जानतेहैं; सो आपदाहै; अरु जिसको सत्य कहतेहैं सो असत्यरूपहै; अरु जिस स्त्री पुत्रादिकको मित्र जानते हैं, सो सब बंधनका करताहै अरु इंद्रिय जोहैं सो महा शत्रुरूपहैं. सो सब मृग तृष्णाके जलवत्‌है अरु यह देह है सो विकाररूपहै; अरु मन महाचंचलहै; और सदा अशांतरूपहै; अरु अहंकार जोहै सो महानीच है. इसनेही दीनताको प्राप्त कियाहै इसकर जेते कछु पदारथ इसको सुखदायक भासतेहैं; सो सब दुःखके देनहारेहैं तिसकर इसको कदाचित् शांति नहीं होती, ताते मुझको इनकी इच्छा नहीं. यद्यपि देखने मात्र सुंदर भासते हैं, तो भी इनमें सुख कछु नहीं; सो पदारथ स्थिर रहनेका नहीं. जैसे समुद्रमें नानाप्रकारके तरंग भासतेहैं, सो सब वडवाग्निकर नाश होतेहैं तैसे यह पदारथभी नाशको पातेहैं. मैं अपनी आयु विषे कैसे आस्था करों.

हे मुनीश्वर! बडे समुद्र जो दृष्टि आतेहैं अरु सुमेरु आदि बडे पदार्थहैं, सो सब नाशको पातेहैं; तब हम

सारिखेकी कहा वार्ताहै और बडे बडे दैत्य राक्षसहू होयके नाश पाय गयेहैं, तो हम सारिखेकी कहा वार्ताहै ! अरु देवता, सिद्ध, गंधर्व, हुयेहैं सो सब नाशको पातेहैं. तिनकी नाम संज्ञाभी नहीं रहती तब हम सारिखेकी कहा वार्ता! पृथ्वी, जल, अरु अग्नि जो दाहक शक्ति धरनेहारे अरु पवन जोहै सो वीर्य सहित सब नाश होय जायँगे, कछु इनकी सत्ताभी नरहेगी, तो हम सारिखेकी कहा वार्ता ! अरु यम, कुबेर, वरण, इंद्र, बडे तेजवारेहैं सो सब नाश पावेंगे तो हम सारिखेकी कहा कहनीहै ! और तारा मंडल जो दृष्टि आतेहैं, सो सब गिर पडेंगे; जैसे सूखे पात वृक्षते वायुसों गिरजातेहैं, तैसे तारे गिरतेहैं तब हम सरीखेकी कहा वार्ता! हे मुनीश्वर ! ध्रुव, जो स्थिर भासताहै, सो भी स्थिर होय जायगा, अरु चंद्रमा अमृत मय मंडलका दृष्टिमें आता है, और सूर्य अखंड मंडल है जिसका, ऐसा जो प्रकाश संयुक्त दृष्टि आता है, सो सब नाश हो जावहिंगे, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता है ! औरकीहू कहा वार्त्ता है ! यह जो बडे ईश्वर जगत्‌के अधिष्ठाता हैं तिनका भी अभाव होय जाता है. परमेष्ठी जो ब्रह्मा है, तिसका भी अभाव होय जाता है; हरि जो विष्णु सो भी हरे जायँगे महा भैरव रूप जो रुद्र, सो भी शून्य हो जायँगे, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता करनी ? अरु काल जो सबका भक्षण करने हारा है, सो भी टूक टूक होयके नाशको प्रा-

प्त होवेगा; अरु कालकी स्त्री जो नेती है, सोहू अनेतताको प्राप्त होवेगी. अरु सबका आधार जो आकाश है, सो भी नाश होजायगा, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता? अरु जेता कछु जगत् अर्थ कर सिद्ध होता है, सो सब नाश हो जावेगा. कोऊहू स्थिर रहनेका नहीं तब हम किसकी आस्था करें, अरु किसका आश्रय करें! यह जगत् सब भ्रममात्र है; अज्ञानीकी इसमें आस्था होती है, और हमारी नहीं है. कि जगत् भ्रम कैसे उत्पत्ति भया है, अरु मैं इतना जानता हों कि संसारमें इतने दुःखी होते हैं, सो अहंकारने किया है.

हे मुनीश्वर! इसका जो परम शत्रु अहंकार है, इस करके भटकता फिरता है. जैसे जेवरीमें बाँधे हुए पतंग कबहूं ऊर्ध्व कबहूं नीचे जाता है, स्थिर कबहूं नहीं रहता, तैसे जीवहू अहंकार करकै कबहूं ऊर्ध्व कबहूं अध जाता है, स्थिर कबहूं नहीं होता. जैसे अश्वते आरूढ रथ तिनके ऊपर बैठके सूर्य आकाश मार्गमें भ्रमता है, तैसे यह जीव भ्रमता है, स्थिर कदाचित् नहीं होता. हे मुनीश्वर! यह जीव परमारथ सत्य स्वरूपते भूलाहुआ भटकता है; अरु अज्ञान करके संसारमें आस्था करता है; अरु भोगहूको सुखरूप जानकार तिसमें तृष्णा करता है. और जिसको सुखरूप जानता है, सो रोग समान है; और विषकर पूर्ण सर्प जैसे है, सो जीवका ना-

श करनहारे हैं. और जिनको सत्य जानता है, सो असत्य है. सब कालके मुखमें ग्रसे हुए हैं.

हे मुनीश्वर! विचार विना अपना नाश आपही करता है; काहेते कि इसका कल्याण करने हारा बोध है. जो सत्य विचार बोधके शरण जाय तो कल्याण होवे, और जेते पदारथ हैं, सो स्थिर कोऊ नहीं; इनको सत्य जानना दुःखके निमित्त है. हे मुनीश्वर! जब तृष्णा आती है, तब आनंद अरु धैर्यको नाश करदेती है; जैसे वायु मेघका नाश कर डारता है, तैसे तृष्णा नाश कर डारती है. ताते मुझको सोई उपाय कहो, जिसकर जगत्का भ्रम मिट जावे, अरु अविनाशी पदकी प्राप्ति होवे. इस भ्रमरूप जगत्की आस्था मैं नहीं देखता; ताते इच्छा चाहे तैसी करो, परंतु सुख दुःख इसीको होने हैं सो होइँगे, मिटनेके नहीं भावे पहारकी कंदरामें बैठो, भावे कोटमें बैठो, परंतु जो होनेका सो मिथ्या नहीं होवे है, इस निमित्त यत्न करना मूर्खता है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे काल विलास वर्णनं नाम एकविंशतितमःसर्गः॥२१॥

द्वाविंशतितमः सर्गः २२।

अथ सर्व पदार्थो भाव वर्णनं.

रामोवाच, हे मुनीश्वर! यह जो नाना प्रकारके सुंदर पदारथ भासते हैं, सो सब नाशरूप हैं, इसकी आस्था मूर्ख करते हैं, यह तो मनकी कल्पना करके रचे हुए हैं. तिसमें किसकी आस्था करों!

हे मुनीश्वर! अज्ञानी जीवका जीवना व्यर्थ है; काहेते जो जीवनेते उनका अर्थ सिद्धि कछु नहीं होता. जब कुमार अवस्था होती है, तब मूढ बुद्धि होती है, तिसमें विचार कछु नहीं होता. जब युवावस्था आती, तब काम क्रोधादिक विकार उत्पन्न होते हैं, तिसकर सदा ढांपे रहते हैं. जैसे जालमें पक्षी बंध जाता है, अरु आकाश मार्गको देख नहीं सकता है, तैसे काम क्रोधादिक करि ढपा हुआ विचार मार्गको देख नहीं सकता. जब वृद्धावस्था आती है, तब शरीर जर्जरीभूत होजाता है, अरु महादीन होता है. बहुरि शरीरको भी त्याग देता है. जैसे कमलके ऊपर बरफ पडता है, तब तिसका भौंरा त्याग करता है, तैसे जब शरीररूपी कमलको जराका स्पर्श होता है, तब जीवरूपी भौंरा त्याग कर देता है.

हे मुनीश्वर! यह शरीर तबलग सुंदर है, जबलग

वृद्धावस्था प्राप्त नहीं होती; जैसे चंद्रमाका प्रकाश राहुदैत्यने आवरन नहीं किया तबलग रहता है, जब राहु दैत्य आवरन करता है, तब प्रकाश नहीं रहता है, तैसे जरा अवस्थाके आये युवा अवस्थाकी सुंदरता जाती रहती है. हे मुनीश्वर! जराके आयेते शरीर कृश होजाता है, अरु तृष्णा बढ जाती है; जैसे वर्षाकालमें नदी बढ जाती है; तैसे जरा अवस्थामें तृष्णा बढ जाती है; अरु जो पदारथकी तृष्णा करता है, सो पदारथ भी दुःखरूप है; तृष्णा करके आपही दुःख पाता है.

हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी समुद्र है, तिसमें चित्तरूपी बेडा परा है; राग दोषरूपी मच्छ कबहूं ऊर्ध्व जाते हैं, कबहूं नीचे आते हैं. स्थिर कदाचित् नहीं रहते. हे मुनीश्वर! कामरूपी वृक्ष है, सो वृक्षमें तृष्णारूपी लता लगती हैं, तिसमें विषयरूपी फूल हैं; जब जीवरूपी भौंरा तिसके ऊपर बैठता है, तब विषयरूपी बेलिसों मृतक हो जाता है. हे मुनीश्वर! तृष्णारूपी एक बडी नदी है, तिसमें राग दोषादिक बडे मच्छ रहते हैं; तिस नदीमें परे हुए जीव दुःख पाते हैं; अरु जो संसारकी इच्छा करता है, सो नाशरूप है.

हे मुनीश्वर! उन्मत्त हस्ती अरु तुरंगके समूह ऐसा जो रणरूपी समुद्र तिसको तर जाते हैं; तिसको भी मैं शूर नहीं मानता परंतु जो इंद्रियरूपी समुद्र, तिसमें म-

नोवृत्तिरूपी तरंग उठते हैं, ऐसे समुद्रको जो तरजाता है, तिसको शूर मानता हों. जिसके परिणाममें दुःख होवे, तैसी क्रिया अज्ञानी जीव आरंभ करते हैं; और जिसके परिणाममें सुख है, तिसका आरंभ नहीं करता है. और कामके अर्थकी धारना करता है, ऐसे आरंभ कियेते शरीरकी शांति औ सुखकी प्राप्ति नहीं होती. ऐसेई कामना करके सदा जलते रहते हैं; अनात्म पदारथकी तृष्णा करते हैं, सो शांतिको कैसे प्राप्त होवें!

हे मुनीश्वर! यह तृष्णारूपी नदी है, तिसमें बडा प्रवाह है, तिसके किनारे वैराग्य अरु संतोष दोनों वृक्ष खडे हैं, सो तृष्णा नदीके प्रवाहते वे दोनोंका नाश होता है. हे मुनीश्वर! तृष्णा बडी चंचल है, किसीको स्थिर होने नहीं देती. अरु मोहरूपी एक वृक्ष है, तिसके चहुँफेर स्त्रीरूपी बेलि है, सो विषकरके पूर्ण है, तिसपर चित्तरूपी भौंरा आय बैठता है, तब स्पर्श मात्रते नाश पाता है. जैसे मोरका पुच्छ हिलता रहता है तैसे अज्ञानीका चित्त चंचल चलता है, सो मनुष्य पशु समान है; जैसे पशु दिनको जंगलमें जाय आहार करते चलते फिरते हैं, अरु रात्रिको आय घरमें खूंटासों बंधन पातेहैं तैसे मूर्ख मनुष्यहू दिनको घर छोडके व्यवहारमें फिरते हैं अरु रात्रिको आय अपने घरमें स्थिर होतेहैं, ताते परमा-

र्थकी सिद्धि कछु नहीं होती जीवना वृथा गमावतेहैं.

बालक अवस्थामें शून्य रहतेहैं; अरु युवा अवस्थामें काम करि उन्मत्त होतेहैं सो काम करके चित्तरूपी उन्मत्त हस्ति स्त्रीरूपी कंदरामें जाय स्थित होतेहैं; सोभी क्षण भंगुरहै. बहुरि वृद्धावस्था होतीहै, तिसकर शरीर कृश होजाताहै; जैसे बर्फते कमल जर्जरी भावको प्राप्त होताहै, तैसे जरा करके शरीर जर्जरी भावको प्राप्त होता है; अरु सब अंग क्षीण होजाता है; अरु एक तृष्णा बढजाती है.

हे मुनीश्वर! यह पुरुष महा पशुहै, सो आकाशके फूल लेनेकी इच्छा करताहै. जैसे बडे पर्वतपर चढ कर आकाशका फूल लेनेकी इच्छा करताहै, सो फिर बडी कंदरा अरु वृक्षमें गिर पडताहै, तैसे यह जीव मनुष्यरूपी पर्वतपर आय रहाहै, अरु आकाशके फूलरूपी, जगत्के पदारथकी इच्छा करताहै, सो नीचेको गिर पडनेकोहै सो राग दोषरूपी कंटक वृक्षमें जाय पडेगा- हेमुनीश्वर! जेते कछु जगत्के पदार्थहैं सो सब आकाशके फूलकी नाईं नाशवानहैं. इनमें आस्था करनी सो मूर्खता है; यह तो शब्दमात्र जैसाहै, तिसते अर्थ सिद्धि कछु नहीं होती. अरु.

जो ज्ञानवान पुरुषहैं, तिनको विषय भोगकी इच्छा नहीं रहती; काहेते जो आत्माके प्रकाशकर इनको

मिथ्या जानतेहैं. हेमुनीश्वर! ऐसे ज्ञानवान पुरुष सो दुर्विज्ञेयहैं. हमको तो स्वप्नेमेंभी नहीं भासतेहैं. और यह विरक्तात्मा दुर्लभहै; जिनको भोगकी इच्छा नहींहै, सर्वदा ब्रह्मकी स्थितिकर भासतेहैं; ऐसे पुरुषको संसारकी इच्छा कछु नहीं रहती; काहेते जो यह पदारथ सब नाशरूपहैं हेमुनीश्वर! पर्वतको जिस ओर देखिये तहां पत्थरकर पूर्ण दृष्टि आताहै; अरु पृथ्वी पूर्ण मृत्तिका करि दृष्टि आतीहै, अरु वृक्ष काष्ठकरि पूर्ण दृष्टि आताहै; समुद्र जलकर पूर्ण दृष्टि आताहै तैसे शरीर अस्थि, मांसकर पूर्ण भासताहै ये सब पदार्थ पांचतत्त्व करिपूर्णहैं, और नाशरूपहैं. ऐसा रूप ज्ञानी जानके किसीकी इच्छा नहीं करता.

हेमुनीश्वर! यह जगत् सब नाशरूपहै, देखते देखते नाशको पाताहै; तिसमें मैं किसका आश्रय करके सुख पाऊं. जब युगकी सहस्र चौकरी होतीहैं, तब ब्रह्माका एक दिन होताहै, तिस दिनके क्षय हुएते सब जगत्का प्रलय होताहै; बहुरि ब्रह्माहू कालकर नाश होजाताहै; अरु ब्रह्माहू जितने होगयेहैं, तिनकी संख्या नहीं होती; असंख्य ब्रह्मा नाश होगयेहैं तो हम सारिखेकी कहा वार्ता करनीहै? हम कोऊ भोगकी वासना नहीं करते, क्यों जो सब चलरूपहै, कछु स्थिर रहनेका नहीं. सब नाशरूपहै, इनकी आस्था मूर्ख करतेहैं. ति-

सके साथ हमको कछु प्रयोजननहीं जैसे मृग मरुथल-
को देख जल पान करनेको दौरता है अरु शांतिको
नहीं पाता, तैसे मूर्ख जीव जगत्के पदारथको सत्य
मानकर तृष्णा करताहै, परंतु शांतिको नहीं पाता,
काहेते कि सब असाररूपहै; अरु.

जो स्त्री, पुत्र, कलत्र भासतेहैं; सो जबलग शरीर
नष्ट नहीं हुआ तबलग भासतेहैं, जब शरीर नष्ट हो
जायगा तब जानिवेमेंभी न आवेगा कि कहां गया अरु
कहांते आया था? जैसे तेल अरु वत्तीकर दीपक प्रकाश-
ताहै तब बडा प्रकाशवान दृष्ट आताहै, पाछे जब बुझ
जाताहै; तब जाना नहीं जाता कि कहां गया, तैसे वत्ती-
रूप बांधवहैं, और तिसविषे स्नेहरूपी तेलहै, तिसकर
जो शरीर भासताहै सो प्रकाशहै जब शरीररूपी दीपकका
प्रकाश बुझ जाताहै तब जाना नहीं जाता कि कहां गया.
हे मुनीश्वर! यह बंधुका मिलाप है; सो जैसे तीर्थ या-
त्राका संग चलाजाता होवे, सो सब एक क्षणमें वृक्ष-
की छाया नीचे बैठते हैं; फिर न्यारे न्यारे होय जाते हैं,
तैसा बांधवका मिलाप है　　उस यात्रामें स्नेह करना
मूर्खता है, तैसे इनमेंई स्नेह करना मूर्खता है.

हे मुनीश्वर! अहंममताकी जेवरीके साथ बांधे हुए
घटीयंत्रकी नाईं सब भ्रमते फिरते हैं, तिनको शांति
कदाचित् नहीं होती. यह देखने मात्र तो चेतन दृष्ट

आवता है, परंतु पशु अरु बंदर इनते श्रेष्ठ हैं; जिनकी संमति देह इंद्रियनके साथ बांधी हुई है, अरु आगमा पाई है; इसमें आस्था रखनी सो महामूर्खता है; उनको आत्मपदकी प्राप्ति होनी कठिन है. जैसे पवनकर वृक्षके पात टूटके उड जाते हैं, फिर उनको वृक्षके साथ लगना कठिन है, तैसे जो देहादिक साथ बांधे हुए हैं, तिसको आत्मपद पाना कठिन है.

हे मुनीश्वर! जब आत्मपदते विमुख होता है तब जगत्के भ्रमको देखता है; अरु जब आत्मपदकी ओर आता है, तब संसार इसको बडा बिरस लगता है; और ऐसा पदारथ जगत्में कोऊ नहीं कि स्थिर रहेगा. जो कछु पदारथ हैं सो नाशको प्राप्त होते हैं, ताते मैं किसकी आस्था करों ? और किसका आश्रय करों? सब नाशवंत भासते हैं, वह पदारथ मुझको जिसका नाश न होवे.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे सर्व पदार्थाभाव वर्णनं नाम द्वाविंशतितमः सर्गः ॥२२॥

त्रयोविंशतितमः सर्गः २३

अथ जगद्विपर्यय वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! जेता कछु स्थावर जंगम

जगत् दीसता है, सो सब नाशरूप है, कुछ भी स्थिर रहनेका नहीं. जो खाईथी सो जलकर पूर्ण होगईहै, अरु जो बडे जलकर समुद्र पूर्ण दिखते थे; सो खाई रूप है गये; अरु जो सुंदर बडे बगीचे थे, सो आकाशकी नांई शून्य होगये, अरु जो शून्य स्थान थे; सो सुंदर वृक्ष हुए बनकर दृष्ट आते हैं. जहां बस्ती थी तहां उजार हो गई है; अरु जहां उजारथी तहां बस्ती हो गई है; अरु जहां गढेले थे, तहां पर्वत हो गये हैं; अरु जहां बडे पर्वत थे, तहां समान पृथ्वी हो गई है. हे मुनीश्वर! इस प्रकार पदार्थ देखत विपर्यय हो जाते हैं स्थिर नहीं रहते, बहुरि मैं किसका आश्रय करों? अरु किस पावनेका यत्न करों? यह पदारथ तो सब नाशरूप है. अरु जो बडे बडे ऐश्वर्यकर संपन्न थे; अरु जो बडे कर्त्तव्य करते थे, और बडे वीर्यवान, बडे तेजवान हुए थे, सो भी मरन मात्र हो गये हैं, तब हम सारिखेकी कहा वार्ता है! सब नाश होते हैं, तब हमारे भी घडी पलमें चल जाना है, रहना किसीको नहीं.

हे मुनीश्वर! यह पदार्थ चंचलरूप है, सो एकरस कदाचित्हू नहीं रहता; एक क्षणमें कछु होजाताहै; दूसरे क्षणमें कछु हो जाता है! एक क्षणमें दरिद्री हो जाते हैं, दूसरे क्षणमें संपदावान हो जाते हैं! एक क्षणमें जीवते दृष्ट आते हैं, दूसरे क्षणमें मरजाते हैं, एक क्षण-

में मुवे भी जी उठते हैं. इस संसारकी स्थिरता कबहुं नहीं होती. ज्ञानवान इसकी आस्था नहीं करते. एक क्षणमें समुद्रके प्रवाहके ठिकाने मरुथल होयजाते हैं, अरु मरुथलमें जलके प्रवाह हो जाते हैं. हे मुनीश्वर! इस जगत्‌का आभास स्थिर नहीं रहता; जैसे बालकका चित्त स्थिर नहीं रहता, तैसे जगत्‌का पदारथ एक भी स्थिर नहीं रहता जैसे नट स्वांगको धरता है, सो कबहू कैसा; कबहूं कैसा सो एक स्वांगमें नहीं रहता; तैसे जगत्‌के पदारथ अरु लक्ष्मी एकरस नहीं रहते; कबहू पुरुष स्त्री होजाता है, कबहूं स्त्री पुरुष हो जाती है; अरु मनुष्य पशु हो जाता है, पशु मनुष्य हो जाता है; और स्थावरका जंगम, अरु जंगमका स्थावर हो जाता है; मनुष्य देवता हो जाता है, और देवताका मनुष्य हो जाता है. इस प्रकार घटी यंत्रकी नाईं जगत्‌की लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती कबहूं ऊर्ध्वको जाती है, कबहूं अधको जाती है, स्थिर कबहूं नहीं रहती, सदा भटकत रहती है.

हे मुनीश्वर! जेते कछु पदार्थ दृष्टिमें आते हैं, सो सब नष्ट हो जानेके हैं. कैसेहू स्थिर रहनेका नहीं ए सब नदियां हैं सो सब बडवाग्निमें लय होय जायँगी; तैसे जेते कछु पदारथ हैं सो सब अभावरूप बडवाग्निको प्राप्त होवेंगे. अरु बडे बलिष्टहू मेरे देखते लीन होगये हैं; अरु जो बडे सुंदर स्थान सो शून्य हो गये हैं; अरु जो

सुंदर ताल, अरु बगीचे, मनुष्य करि संपूर्ण, ऐसे स्थान सो शून्य हो गये हैं; अरु जो मरुथलकी भूमिका सो सुंदरताको प्राप्त भई है, अरु घट पट हो गये हैं; वरके सांप हो जाते हैं; सांपके वर हो जाते हैं. इस प्रकार, हे विप्र! जो जगत् दृष्टिमें आता है, सो कबहूं संपदा, कबहूं आपदा दृष्टिमें आवती है; अरु महा चपल दृष्टि आवते हैं. हे मुनीश्वर! ऐसे सब अस्थिररूप पदारथ हैं. तिसका विचार बिना मैं कैसे आश्रय करों, अरु किसकी इच्छा करों? सब नाशरूप हैं; और.

जो यह सूर्य प्रकाश कर दृष्टिमें आता है, सो भी अंधकाररूप हो जायगा; अरु अमृतकर पूर्ण जो चंद्रमा दृष्टिमें आता है, सोभी शून्य हो जायगा; अरु सुमेरु आदिक जो पर्वत दृष्टि आते हैं, सो सब नाश होंयगे, और सब लोक नाश हो जांयगे; ताते हे मुनीश्वर! और किसीकी क्या कहनी है ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जो जगत्के ईश्वर हैं, सोभी शून्य होजाँयगे, तो हम सारिखेकी कहा वार्त्ता कहनी है! जेता कछु जगत् दृष्टि आता है, सो स्त्री, पुत्र, बांधव, ऐश्वर्य, वीर्य, तेज, करिके नाना प्रकारके जीव जो भासते हैं, सो सब नाशरूप हैं; बहुरि मैं किस पदारथका आश्रय करों, और किसकी इच्छा करों!

हे मुनीश्वर! जो पुरुष दीर्घदर्शी है, तिनको तो सब पदारथ विरस हो गये हैं; किसी पदारथकी इच्छा नहीं

करते, काहेते कि सब पदारथ नाशरूप भासते हैं; और अपनी आयुष्यको बिजुरीके चमत्कारवत् देखते हैं;जैसे बिजुरीका चमत्कार होता है, तैसी शरीरकी आयुष्य है. जिसको अपनी आयुष्यकी अप्रतीति होती है, सो किसीकी इच्छा करते नहीं जैसे किसीको बलिदान अर्थ पालते हैं. तब वह खाने, पीने, भुगतनेकी इच्छा नहीं करता; तैसे जिसको अपना मरना सन्मुख भासता है, तिसको भी किसी पदारथकी इच्छा नहीं रहती; यह सब पदारथ आपही नाशरूप हैं; तो हम किसका आश्रयकर सुखी होवें? जैसे कोऊ पुरुष समुद्रमें मच्छके आश्रय करके कहे कि मैं इसपर बैठके समुद्रके पार जाऊंगा, अरु सुखी होऊंगा, सो मूर्खता करके डूबही मरेगा; तैसे जिस पुरुषने इस पदारथका आश्रय लिया है; अरु अपने सुखके निमित्त जानता है सो नाशको प्राप्त होवेगा.

हेमुनीश्वर! जो पुरुष जगत्को विचारता रहताहै, तिनको यह जगत् रमणीय भासताहै, अरु रमणीय जानके नानाप्रकारके कर्म करताहै अरु जो नानाप्रकारके संकल्प करके जगत्में भटकतेहैं; कबहूं ऊपर, कबहूं नीचे आतेहैं, अरु स्थिर नहीं रहते; तैसे यह जीव भटकते फिरतेहैं, स्थिर कबहूं नहीं रहते; अरु जिस पदारथकी इच्छा करतेहैं, सो सब कालका ग्रास रूप

होगयेहैं; जैसे बनमें अग्नि लगतीहै, तब सब इंधनादिकको जारतीहै,तैसे जेते कछु पदारथहैं, सो सब इंधनरूपी जगत् बनहै; तिसको कालरूपी अग्नि लगीहै, तिसने सबको ग्रास लियाहै; बहुरि जो इस पदारथकी इच्छा करतेहैं सो महामूरखहैं; अरु.

जिनको आत्मविचारकी प्राप्तिहै, तिनको यह जगत् भ्रम रूप भासताहै;अरु जिसको आत्मविचारकी प्राप्ति नहींहै,तिनको यह जगत् रमणीय भासताहै;अरु जगत्को देखते नाश हो जातेहैं स्वप्न पुरीकी नाईं संसारकी मैं कैसे इच्छा करों? यह तो दुःखके निमित्तहै. जैसे मिठाईमें विष मिलायाहै, तिसका भोजन करने वाले मृत्युको प्राप्त होतेहैं तैसे विषय भुगतनेवारे नाशको प्राप्त होतेहैं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे जगद्विपर्यय वर्णनं नाम त्रयोविंशतितमःसर्गः॥२३॥

चतुर्विंशतितमः सर्गः २४

अथ सर्वांत प्रतिपादन वर्णनं.

रामोवाच, हेमुनीश्वर! इस संसारमें भोगरूपी अग्नि लगीहै तिसकर सब जलतेहैं;जैसे तालमें हाथीके पाँवसों कचर कमलका चूरण होजाताहै, तैसे भोगसों कर मनुष्य दीन होजातेहैं. तैसे काम क्रोध दुराचारसों शुभ गुण

नष्ट होजातेहैं जैसे कंटारीके पत्तेमें अरु फलमें कांटे हो जातेहैं, तैसे विषयकी बासनारूपी कंटक आय लगतेहैं.

हे मुनीश्वर! यह जगत् सब नाशरूपहै; किसी पदारथका स्थिर रहना नहींहै. वासनारूपी जाल, अरु इंद्रियारूपी गांठीहै, तिसमें पुरुष कालसों आय फँसाहै सो बडे दुःखको प्राप्त होवेगा हे मुनीश्वर! बासनारूपी सूतमें जीवरूपी मोती परोये हुएहैं; अरु मनरूपी नट आय परोयकर चैतन्यरूपी आत्माके गरेमें डारताहै. जब बासनारूपी तागा टूट परा तब यह भ्रम भी निवृत्त होयगा. हे मुनीश्वर! इसको भोगकी इच्छाहै सो बंधनका कारणहै, भोगकी इच्छाकर भटकताहै, शांतिको प्राप्त नहीं होताहै, ताते मुझको किसी भोगकी इच्छा नहीं. नराज्यकी इच्छाहै, न घरकी, न बनकी इच्छाहै, न मरनेकर दुःख मानता हों, न जीनेकर सुख मानताहों. किसी पदारथका सुख नहीं सुख जो होना सो आत्मज्ञानकर होनाहै अन्यथा किसी पदारथकर होता नहीं. जैसे सूर्यके उदयहुए बिना अंधकारका नाश नहीं होता, तैसे आत्मज्ञान विना संसारके दुःखका नाश नहीं होता; ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर मोहका नाश होवे, और मैं सुखी होऊं.

हे मुनीश्वर! भोगको भुगतनहारा जो अहंकारहै, सो मैंने त्याग दियाहै; फिर भोगकी इच्छा कैसी होवे. हे मुनीश्वर! यह विषयरूप सर्पने जिसका स्पर्शकिया

है, तिसका नाश होजाताहै. अरु सर्प जिसको काटता है, सो एकबेर इसको मार डारताहै; अरु विषयरूपी सर्प जिनको काटतेहैं, सो अनेकजन्म पर्यंत मारतेई चले जातेहैं, ताते परम दुःखका कारण विषय भोगहै; याते विषयरूपी परम विषहै. अरु वज्र करके शरीरका चूरण होना सो भी मैं सहूंगा परंतु विषयका भुगतना मेरेसों कैसेहू सहा नहीं जाता. यह मुझको दुःखदायक दृष्टिमें आताहै; ताते सोई उपाय मुझको कहो, जिसकर मेरे हृदयते अज्ञानरूपी अंधकारका नाश होवे; अरु जो न कहोगे तो मैं अपनी छातीपर धीरजरूपी शिला धरके बैठा रहोंगा, परंतु भोगकी इच्छा न करोंगा.

हे मुनीश्वर ! जेते कछु पदारथ हैं, सो सब नाश रूप हैं; जैसे बिजुरीका चमत्कार होय छिप जाता है, अरु अंजलीमें जल नहीं ठहरता, तैसे विषय भोग अरु आयुष्य नाश हुइ जाते हैं, ठहरते नहीं. जैसे कंढीकर मच्छी दुःख पावती है, तैसे भोगकी तृष्णा कर जीव दुःख पावते हैं, ताते मुझको किसी पदारथकी इच्छा नहीं- जैसे किसीने मरीचिकाके जलको सत्य जान जलपानकी इच्छा करी, औ दौऱ्या सो जल पावत नहीं. ताते मैं किसी पदारथकी इच्छा नहीं करता.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे सर्वांत प्रतिपादनं नाम चतुर्विंशातितमः सर्गः ॥ २४ ॥

पंचविंशतितमः सर्गः २५

अथ वैराग्य प्रयोजन वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! संसाररूपी गढेलेमें अरु मोहरूपी कीचमें मूर्खका मन गिर जाता है, तिसकर परा दुःख पाता है, शांतवान कबहुं नहीं होता जब जरा अवस्था आती है, तब सर्व शरीर जर्जरीभूत होकर कांपने लगते हैं; जैसे पुरातन वृक्षके पत्र पवनकर हिलते हैं, तैसे जरा अवस्था कर अंग हिलते हैं, अरु तृष्णाकी वृद्धि हो जाती है; जैसे नीमका वृक्ष ज्यों ज्यों वृद्ध होता है त्यों त्यों कटुता बढती है, तैसे तृष्णा बढती है.

हे मुनीश्वर! जिस पुरुषने देह, इंद्रियादिकनका आश्रय अपने सुख निमित्त लिया है, सो मूर्ख संसार रूपी अंधकूपमें गिरता है, निकस नहीं सकता; अरु अज्ञानीका चित्त भोगका त्याग कदाचित् नहीं करता है. हे मुनीश्वर! जगत्के पदारथमें मेरी बुद्धि मलीन हो गई है. जैसे वर्षाकालमें नदी मलीन होती है; जैसे मार्गशीर्ष मासमें मंजरी सूखि जाती है; तैसे जगत् की शोभा देखत देखत बिरस होजाती है. जैसे जगत्का पदारथ मूर्खको रमणीय भासता है; जैसे पानीका गढेला तृणकरि आच्छादित होता है, अरु मृगके बालक तिस तृणको रमणीय जानकर खाने जाते हैं, फिर गि-

र जाते हैं; तैसे यह मूर्ख भोगको रमणीय जानि भुगतके गिर परे हैं, फिर महा दुःख पाते हैं. जैसे मृग मृगतृष्णाकर उडता है, सो सुखी नहीं होता, तैसे यह मृग तृष्णारूप संसारके पदारथनके ऊपर मनरूपी मृग उड नहारा कैसे सुखी होवे.

हे मुनीश्वर! जगत्के पदारथसों कर मेरी बुद्धि चंचल हो गई है; ताते सोई उपाय कहो, जिसकर पर्वतकी नाईं मेरी बुद्धि निश्चल होवे. सो पद कैसा है? कि परमानंदके यत्नमें रहते हैं, अरु निर्भय, निराकार पद, जिसके पायेते संसार कछु भी नहीं रहता है, बहुरि पावना कछु नहीं रहता है; तैसे संपूर्ण जगत्की नाना प्रकारकी रचना सब दब जाती है; तिस पद पानेका उपाय मुझको कहो. हे मुनीश्वर! ऐसे पदते मेरी बुद्धि शून्य है, ताते मैं शांतिवान नहीं होता. यह संसार अरु संसारके कर्म मोहरूप हैं; इसमें पडे हुए शांतिको प्राप्त नहीं होते. अरु.

जनकादिक संसारमें रहे हुये कमलकी नाईं निर्लेप रहते हैं, तैसे शांतिवान संसारमें निर्लेप रहते हैं. सो जैसे कोऊ कीचसों पूर्ण होय, अरु कहे कि मुझको कीचका परश नहीं हुआ, तैसे राजाके विक्षेपरूपी कीचमें परे हुए शांतिवान कैसे निर्लेप रहे हैं, तिसकी समुझ कहा है, सो कृपा कर कहो. अरु तुम जैसे जो संतजन हैं सो वि-

षयको भुगतते दृष्टि आवते हैं, अरु जगत्‌की चेष्टा सब करते हैं; सो निर्लेप कैसे रहते हैं, सो युक्ति कहो जैसे तुम जल कमलवत् रहते हो सो कहो. यह बुद्धि तो मोह करि मोही जाती है. जैसे तालमें हस्ती प्रवेश करता है, और पानी मलीन हो जाता है, तैसे मोह करि बुद्धि मलीन होय जाती है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर बुद्धि निर्मल होवे. यह संतोषमें बुद्धि स्थिर कबहूं नहीं रहती. जैसे मूलसों कुहारे कर काटा वृक्ष स्थिर नहीं होता, तैसे वासनासों कटी बुद्धि स्थिर नहीं रहती. हे मुनीश्वर! संसाररूपी विशूचिका मुझको लगी है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर दृश्यका नाश होवे, इसने मुझको बडा दुःख दिया है. अरु आत्मज्ञान कब प्रकाश होय, जिसके उदय हुए मोहरूपी अंधकारका नाश होवे. हे मुनीश्वर! जैसे बादरसों चंद्रमा आच्छादित होय जाता है, तैसे बुद्धिकी मलीनताकर मैं आच्छादित हुआहों, ताते सोई उपाय कहो जिसकर आवरण दूर होवे. अरु,

जो आत्मानंद सो नित्य है, जिसके पायेते बहुरि पावना कछु नहीं रहता, इसते संपूर्ण दुःख नष्ट हो जाते हैं. अरु अंतर शीतल हो जाताहै, ऐसा जो पद है, तिसकी प्राप्तिका उपाय मुझसे कहो. हे मुनीश्वर! आत्मज्ञानरूपी चंद्रमाकी मुझको इच्छा है, जिसके प्रकाशकर

बुद्धिरूपी कमलनी खिल आती है, अरु जिसकी अमृत-रूपी किरनकर तृप्त वृत्ति होती है सो कहो. हे मुनीश्वर! अब मुझको गृहमें रहनेकी इच्छा नहीं, अरु वन विषे जानेकी भी इच्छा नहीं; मुझको तो इसी पदकी इच्छा है, जिसके पाये ते भीतर शांति होय जाय.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे वैराग्य प्रयोजन-वर्णनं नाम पंचविंशतितमः सर्गः ॥ २५ ॥

: २६

अथ अनन्य त्याग वर्णनं.

श्रीरामोवाच, हे मुनीश्वर! जो जीवनेकी आस्था करते हैं, सो मूर्ख हैं; जैसे पत्रपर जलकी बूंद ठहरती नहीं तैसे आयुष्यहू क्षणभंगुर है. जैसे वर्षाकालमें दर्दुर बोलते हैं, तब उनका कंठ चंचल सदा फरकता रहता है, तैसे आयुर्दा छिन छिनमें चंचल हो जाती है. जैसे शिवजीके कपालमें चंद्रमाकी रेखा कछुसी है, तैसा यह शरीर है. हे मुनीश्वर! जिसको इनमें आस्था है, सो महामूर्ख हैं; यह तो कालका ग्रास है. जैसे बिल्ली चूहेको पकर लेती है, तैसे सबको काल पकर लेता जैसे बिल्ली चूहेको संभाल करने नहीं देती,तैसे सबको काल अचानक गृहण कर लेता है,अरु किसीको भासता नहीं.

हे मुनीश्वर! जब अज्ञानरूपी मेघ आय गर्जता है, तब लोभरूपी मोर प्रसन्न होयके नृत्य करता है; जब अज्ञानरूपी मेघ वर्षा करता है, तब दुःखरूपी मंजरी बढने लगती है;अरु लोभरूपी बिजुरी छिन छिनमें होय होय नष्ट हो जाती है,अरु तृष्णारूपी जालमें फँसे हुए जीवरूपी पक्षी परे दुःख पाते हैं; शांतिकी प्राप्ति नहीं होती.

हे मुनीश्वर! यह जगत्‌रूपी बडा रोग लगा है तिसके निवारण करनेका कौनसा पदारथ है, जो पाने योग्य है, जिसकर भ्रमरूपी रोग निवृत्त होवे, सोई उपाय कहो. यह जगत् मूर्खको रमणीय दिखता है, ऐसे पदारथ पृथ्वीपर, अरु आकाशमें, अरु देवलोकमें, अरु पातालमें कोऊ नहीं जो ज्ञानवानको रमणीय दिखे. ज्ञानवान्‌को सब भ्रमरूप भासता है; अरु अज्ञानी जगत्‌में आस्था करता है. हे मुनीश्वर! चंद्रमामें जो कलंक है,तिसकर शोभा सुंदर नहीं लगती, जब कलंक दूर होय जाय, तब सुंदर लगे; तैसे मेरे चित्तरूपी चंद्रमामें कामरूपी कलंक लगा है, तिसकर उज्ज्वल नहीं भासता-ताते सोई उपाय कहो; जिसकर कलंक दूर होजाय.

हे मुनीश्वर!यह चित् बहुत चंचलहै, स्थिर कदाचित् नहीं होता. जैसे अग्निमें डारदिया पारा उडजाताहै, तैसे चित्तभी स्थिर नहीं होता; विषयकी तरफ सदा धावता है, ताते सोई उपाय कहो, जिसकर चित्त स्थिर होवे.

संसाररूपी वनमें भोगरूपी सर्प रहतेहैं, सो जीवका दंश करतेहैं, तिससों बचनेका उपाय कहो; अरु जेती कछु क्रियाहै, सो राग द्वेषके साथ मिली हुईहै, ताते सोई उपाय कहो जिसकर राग दोषका प्रवेश नहोय, तैसे यह संसारमें परेहैं तिसको तृष्णारूपी जलका परश न होय, ऐसा उपाय कहो; जिसकर इसको राग दोषका परश नहोय; अरु मनमें जो मननरूपी सत्ताहै, सो युक्तिसों कर दूर होतीहै अन्यथा दूर नहीं होती. सो निवृत्तिके अर्थ आप मेरेको युक्ति कहो; और आगे जिसको जिस प्रकार निवृत्ति हुईहै, सो कहो; अरु जिसप्रकार तुम्हारे अंतरमें शीतलता हुईहै, सो कहो. हे मुनीश्वर! जैसे तुम जानते हो सो कहो; अरु जो तुम्हारे विद्यमान वह युक्ति नहीं पाई, तब मैं तो कछु नहीं जानता. तो मैं सब त्यागकर निर अहंकार होय रहोंगा जबलग वह युक्ति मुझको न प्राप्त होवेगी तबलग मैं भोजन नहीं करूंगा, अरु जलपानभी नहीं करूंगा. अरु स्नानादिक क्रियाभी नहीं करोंगा. संपदाका कार्यभी नहीं करूंगा, और आपदाका कार्यभी नहीं करूंगा निर अहंकार होऊंगा. और ये न मेरी देहहै, और नमैं देहहीं सब त्याग करके बैठि रहोंगा. जैसे कागजके ऊपर मूर्त्ति चित्रित होतीहै, तैसे होय रहोंगा. श्वास आते जाते आपही क्षीण होय जां-

यगे. जैसे तेल विना दीपक बुझताहै, तैसे अर्थ बिन देह निर्वान होय जायगा, तब महाशांतिको प्राप्त होऊंगा.

वाल्मीकोवाच, हे भारद्वाज! ऐसे कहि करि रामजी चुप होय रहे. जैसे बडे मेघको देखके मोर शब्द करके चुप होजाताहै.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्यप्रकरणे अनन्य त्याग दर्शनं नाम षड् विंशतितमः सर्गः ॥ २६ ॥

सप्तविंशतितमः सर्गः २७

अथ देवसमाज वर्णनं.

वाल्मीकोवाच, हे पुत्र! जब इस प्रकार रघुवंशरूपी आकाशके रामचंद्ररूपी चंद्रमा बोले, तब सबही मौन होगये; अरु सबके रोम खडे होआये; मानो रोमहू खडे होकर रामजीके वचन सुनतेहैं, अरु जेते कछु सभामें बैठेथे; सो सब निर्वासनारूपी अमृतके समुद्रमें मग्न होगये. वशिष्ठ, वामदेव, विश्वामित्र, आदि जो मुनीश्वरथे; और जेते दृष्टि आदिक जो मंत्रीथे,और राजा दशरथ अरु जेते मंडलेश्वरथे, और जेते चाकर नौकरथे और माता कौशल्या आदिक सब मौन होगये. अर्थ यह तो अचल होगये अरु पिंजरेमें पक्षी जोथे सोभी मौन होगये; अरु बगीचेमें पशु आदिथे, सोभी मौन होगये अरु चारा तृण खात रहिगये; अरु जो पक्षी आलयमें बैठेथे, सोभी

सुनकर मौन होगये; अरु आकाशके पक्षी जो निकटथे, सोभी स्थिर होगये; अरु आकाशमें देव, सिद्ध, गंधर्व, विद्याधर, किन्नरथे; सोभी आय सुनने लगे; अरु फूलोंकी वर्षा करनेलगे; सब धन्य धन्य शब्द करनेलगे. और फूलकी वर्षाभई सो मानो बर्फकी बर्षा होतीहै; अरु क्षीर समुद्रके तरंग उछलते आवते होंय. अरु मोतीकी मालाकी वृष्टि आवत होय; और जैसे माखनके पिंड उडते होंय, इस प्रकार आधी घडी पर्यंत फूलनकी बर्षा भई; अरु बडी सुगंध आय पसरी; अरु फूलोंपर भौंरे फिरने लगे और बडा विलास तिस कालमें होरहा अरु नमोनमः शब्द करने लगे.

देवोवाच; हे कमलनयन रघुवंशी आकाशमें चंद्रमारूप आप रामजी! तुम धन्य हो! तुमने बडे श्रेष्ठ स्थान देखे हैं, अरु बहुत प्रकारके वचन सुनेहैं; याते जैसे आप वचन कहे हैं, ऐसे वचन कबहूं नहीं सुने. इस वचन सुनके हमारा जो देवताका अभिमान था, सो सब निवृत्त भया ह. अमृतरूपी वचन सुनकर हमारी बुद्धि पूर्ण होगई है! हे रामजी! जैसे वचन तुमने कहे हैं, ऐसे वचन बृहस्पतिहू कहनेको समर्थ नहीं; तुम्हारे वचन परमानंदके करनहारे हैं, ताते तुम धन्य हो.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे देव समाज वर्णनं नाम सप्तविंशतितमः सर्गः ॥ २७ ॥

अष्टाविंशतितमः सर्गः २८

अथ मुनि समाज वर्णनं.

वाल्मीको वाच, हे भारद्वाज! ऐसे वचन देवता कहके विचार करत भये. रघुवंशका कुल पूजबे योग्य है; तिसमें रामजीने बडे उदार वचन मुनीश्वरके विद्यमान कहे हैं; अब जो मुनीश्वरका उत्तर होयगा, सो भी श्रवण किया चाहिये. जैसे फूलके ऊपर भौंरा स्थिर होते हैं, तैसे व्यास, नारद, पुलह, पुलस्त्य, आदि सब साधु सभामें आय स्थित भये; तब वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि मुनीश्वर उठके खडे हुये, अरु तिनकी पूजा करने लगे. प्रथम पूजा राजा दशरथने करी, फिर नाना प्रकारसों सबने वाकी पूजा करी; और यथायोग्य आसनके ऊपर बैठे, सो कैसे हैं? जो नारद बहुत सुंदर मूर्त्तिवारे हाथमें वीणा लेयके बैठे, अरु श्याममूर्त्ति व्यासजी आय बैठे; और नाना प्रकारके रंगसों रंजित वस्त्र पहिरे हुए, मानो तारामें महा श्याम घटा आई है. ऐसे अरु दुर्वासा, वामदेव, पुलह, पुलस्त्य, अरु बृहस्पतिके पिता अंगिरा, अरु भृगु, और मैंहूं तहां था; और ब्रह्मर्षि, राजर्षि, देवर्षि, देवता, मुनीश्वर सब आयके सभामें स्थित हुए. किसीके बडीजटा हैं; कोईने मुकुट पहरे हैं; किसीने रुद्राक्षकी माला पहरी हैं, किसीने मोतीकी माला पहरी हैं; किसी-

के कंठमें रत्नकी माला हैं; और हाथमें कमंडलु, मृगछा-
ला; किसीके महा सुंदर वस्त्र; ऐसे बडे तपस्वी आयके
बैठे. तामें कोऊ राजसी स्वभावके, कोऊ सात्विक स्वभा-
वके, ऐसे बडे बडे आये; अरु सब विद्वत् वेद पढनहारे
प्राप्त हुए. और किसीका सूर्यवत्, किसीका चंद्रमावत्,
किसीका तारावत्, ऐसे बडे प्रकाशवारे पुरुषार्थ पर
यत्न करनेहारे, सो यथायोग्य आसन पै स्थिर भये;
और मोहनी मूर्त्ति रामजी अरु दीन स्वभाववारे हाथ
जोरके सभामें बैठे, तिसकी सब पूजा करत भये. कहते
हैं कि हे रामजी! तुम धन्य हो! और.

नारद सबके विद्यमान कहत भये- कि हे रामजी!
तुमने बडे विवेक अरु वैराग्यके वचन कहे, सो सबको
प्यारे लगे; सबके कल्याण करनेहारे हैं; और परम बो-
धके कारण हैं. हे रामजी! तुम बडे बुद्धिवान उदारा-
त्मा दृष्टि आवते हो; अरु महा वाक्यका अर्थ तुमते प्रग-
ट होता है; ऐसा उज्ज्वल पात्र साधुमें और अनंत तप-
स्वीमें कोऊक होते हैं; अरु जेते कछु मनुष्य हैं, सो स-
ब पशु जैसे दृष्टिमें आवते हैं; क्योंकि जिसको संसार
समुद्रके पार होनेकी इच्छा है; और जो पुरुषार्थ पर य-
त्न करते हैं, सोई मनुष्य हैं. हे साधो! वृक्ष तो बहुत
होते हैं, परंतु चंदनका वृक्ष कोऊ होता है; तैसे शरी-
रधारी बहुत हैं, परंतु ऐसा कोऊ होता है; और सब अ-

स्थ मांसके पुतरे साथ मिले हुये भटकते फिरते हैं; सो जैसी जंत्रीकी पुतरी होती अज्ञानी जीव हैं; और हस्ति तो बहुत हैं; परंतु जिसके मस्तकमेंते मोती निकसता है, सो बिरला है. तैसे मनुष्य तो बहुत हैं, परंतु पुरुषार्थपर यत्न करने हारे कोऊ होते हैं ऐसे पात्रको थोरे अर्थ कहा भी बहुत हो जाता है; जैसे तेलकी बुंद थोरी जलमें डारी विस्तारको पाती है; तैसे थोरे वचन सों आपके हियेमें बहुत होते हैं; आप, की बुद्धि बहुत विशेष है; अरु दीपक जैसी प्रकाशवारी है; अरु बोधका परमपात्र है, और कहने मात्रते आपको शीघ्र ज्ञान होवेगा. अरु हमारे विद्यमान आपको ज्ञान होवेगा, ऐसा निश्चय करि जानना.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे मुनि समाजवर्णनं नाम अष्टा विंशतितमः सर्गः ॥ २८ ॥

समाप्तमिदं योगवाशिष्ठे वैराग्य प्रकरणे ॥ १ ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास.
" श्रीवेङ्कटेश्वर " यन्त्रालय (मुंबई.)

ॐ३म्

परमात्मनेनमः ।

अथ श्रीयोगवाशिष्ठ

मुमुक्षु प्रकरण प्रारंभः ।



प्रथमः सर्गः १

अथ शुक निर्वाण वर्णनं ।

वाल्मीकोवाच, हे साधो! यह जो वचन हैं सो परमानंदरूप हैं; अरु कल्याणको कर्ता हैं. इसमें श्रवणकी प्रीति तब उपजती है; जब अनेक जन्मके बडे पुण्य आय इकट्ठे होते हैं; जैसे कल्पवृक्षके फलको बडे पुण्यसों पाते हैं; तैसे जिसके बडे पुण्य कर्म इकट्ठे आय होते हैं, तिसकी प्रीति यह वचनके श्रवणमें होतीहै;अन्यथा प्राप्ति नहीं होती यह वचन परम बोधका कारण हैं. हे भारद्वाज! इस प्रकार जब नारदजीने कहा तब विश्वामित्रजी बोले

विश्वामित्रोवाच, हे ज्ञानवानमें श्रेष्ठ रामजी! जेता कछु जानने योग्यथा सो तैंने जाना है, इसते जानना और नहीं रहा. अरु तिसमें विश्राम पावने निमित्त कछुक मार्जन करना है. जैसे अशुद्ध आदर्शकी मलिनता दूर करी होय, तब मुख स्पष्ट भासता है; तैसे कछु उ-

पदेशकी तुझको अपेक्षा है. हे रामजी! तेरे जैसा भगवा-न् व्यासजीका पुत्र शुकदेवजी भया है, सो भी बडा बु-द्धिवान था; तिसने जो जानने योग्यथा सो जाना है, अ-रु विश्रामके निमित्त तिसको भी अपेच्छा थी सो विश्रा-मको पाय शांतिवान भये हैं.

रामोवाच, हे भगवन्! शुकजी कैसा बुद्धिवान अरु ज्ञानवान था; अरु कैसी विश्रामकी अपेच्छा थी; फिर कैसे विश्रामको पावत भया? सो कृपा करिके कहो.

विश्वामित्रोवाच, हे रामजी! अंजनके पर्वतकी नाईं जिसका आकार है, ऐसे जो भगवान व्यासजी ये स्वर्ण के सिंहासन पर राजा दशरथके पास बैठा है, अरु सूर्यकी नांई प्रकाशवान जिसकी कांति है; तिसका पुत्र शुक-जी सो सब शास्त्रका वेत्ताथा; सत्यको सत्य जानताथा असत्यको असत्य जानता था; सो शांतिरूप, और पर-मानंदरूप, आत्मामें विश्राम न पावत भया तब उस-को विकल्प उठा कि जिसको मैं जाना है, सो न होवे-गा; काहेते कि मुझको आनंद नहीं भासता है, सो सं-शयको धरके एक कालमें व्यासजी सुमेरु पर्वतकी कं-दरामें बैठेथे, तिनके निकट आयकर कहत भये- हे भ-गवन्! यह संसार सब भ्रमात्मक कहांसे भया है; वाकी निवृत्ति कैसे होयगी; और आगे कोईको इसकी निवृ-त्ति भई है? सो कहो.

हे रामजी ! इस प्रकार जब शुकजीने कहा, तब विद्वत् वेद शिरोमणि जो वेदव्यासजी हैं, सो तत्काल उपदेश करत भये. तब शुकजीने कहा- हे भगवन्, जो कछु तुम कहो हो, सो तो मैं आगेसों जानता हों, इसकर मुझको शांति प्राप्त नहीं होती.

हे रामजी ! जब इस प्रकार शुकजीने कहा तब सर्वज्ञ जो वेदव्यासजीहैं, सो विचार करतभये, कि मेरे वचनकर इसको शांति प्राप्त नहोवेगी, क्योंकि अब पिता पुत्रका संबंध भासताहै; ऐसे विचार करके व्यासजी कहत भये-हे पुत्र ! मैं सर्व तत्वज्ञ नहीं तू राजा जनकके निकट जा, वे सर्व तत्वज्ञहैं, अरु शान्तात्माहैं, उनसों तेरा मोह निवृत्त होवेगा.

हे रामजी ! जब इसप्रकार व्यासजीने कहा तब शुकदेवजी उहां सों चले; तब जो मिथिला नगरी राजा जनककी थी, तिसमें आयकर राजा जनकके द्वारपै स्थित भया. तब ज्येष्टीने जायकर राजा जनकको कहा, कि व्यासजीके पुत्र शुकजी आय खडे हैं; तब राजाने जाना, कि इसको जिज्ञासाहै, तब कहा खडा रहो; तब खडेई रहे. इसी प्रकार ज्येष्टी जाय कहा, तब सात दिन खडे रहत बीत गये, तब राजाने फेर पूंछा शुकजी खडे हैं, कि चलते रहेहैं ? तब ज्येष्टी कहा खडेहैं. तब राजाने कहा आगे ले आओ, तब आगे ले आये;उस दरवज्जेपै

भी सात दिन खडे रहे. बहुरि राजाने पूंछा, कि शुकजी हैं? तब ज्येष्टीने कहा कि खडाहै. तब राजाने कहा अंतःपुरमें लेआओ; उसको नानाप्रकारके भोग भुगताओ. तब अंतःपुरमें लेगये, वहां स्त्रियनके पास सात दिन खडेरहे. तब राजाने ज्येष्टीसे पूछा, कि तिसकी दशा कैसीहै, और आगे कहा दशाथी? तब ज्येष्टीने कहा जो आगे निरादर करके न शोकवान हुआथा, अरु अब भोगकर न प्रसन्न हुआ है; इष्ट अनिष्टमें समानहै. जैसे मंद पवनकरके मेरु चलायमान नहीं होवे, तैसे यह बडे भोगका निरादरकर चलायमान नहीं भये. जैसे पपैयेको मेघके जल विना, नदी, ताल, आदिके जलकी इच्छा नहीं होती, तैसे उसको किसी पदारथकी इच्छा नहीं. तब राजाने कहा इहां ले आओ; तब सो लेआए.

जब शुकजी आये, तब राजा जनक उठके खडे होय प्रणाम किया, फिर दोऊ बैठ गये. तब राजाने कहा कि हे मुनीश्वर! तुम किस निमित्त आये हो; तुमको कहा बांछाहै? सो कहो, किसकी प्राप्ति मैं करदेऊं.

श्रीशुकोवाच, हे गुरु! यह संसारका आडंबर कैसे उत्पन्न हुआहै; फिर कैसे शांत होवेगा, सो तुम कहो.

विश्वामित्रोवाच, हेरामजी! जब इस प्रकार शुकदेवजीने कहा तब राजा जनकने यथाशास्त्र उपदेश जो कछु ब्यासजीने कहा था, सोई कहा. बहुरि शुकजीने

कहा-हेभगवन्, जो कछु तुम कहोहो, सोई मेरा पिता-जी कहताथा, अरु सोई शास्त्र कहताहै, और विचारसों मैंहूं ऐसा जानताहों; कि यह संसार अपने चित्तमें उत्पन्न होताहै अरु चित्तका निर्वेद हुए भ्रमकी निवृत्ति होतीहै, फिर विश्राम मुझको नहीं प्राप्त होताहै.

जनकोवाच, हेमुनीश्वर! जो कछु मैंने कहा है, अरु जो तुम जानतेहो, इसते और उपाय कछुहै ऐसा जानना नहीं, अरु कहनाभी नहीं यह संसार चित्तके संवेदनकर हुआहै. जब चित्त फुरनेते रहित होताहै, तब भ्रमनिवृत्त होजाताहै; अरु आत्मतत्त्व नित्य शुद्धहै, अरु परमानंद स्वरूपहै केवल चैतन्यहै तिसका अभ्यास करैगा तब तू विश्रामको पावेगा; अरु तू मुक्ति स्वरूपहै. काहेते कि तेरा यत्न आत्माकी ओरहै, दृश्यकी ओर नहीं, ताते तू बड़ा उदारात्माहै. हेमुनीश्वर! तू मोको व्यासते अधिक जान मेरे पास आयाहै; और तू मेरे तेभी अधिकहै; काहेते कि हमारी चेष्टा बाहिरते दृष्ट आवतीहै, और तुम्हारी चेष्टा बाहरते कछुभी नहीं अरु अंतरते हमारी कछुभी नहीं.

विश्वामित्रोवाच, हे रामजी! जब इस प्रकार राजा जनकने कहा, तब शुकजी निःसंग, निःप्रयत्न निर्भय होकर चले. सुमेरु पर्वतकी कंदरामें जाय निर्विकल्प समाधि दश सहस्र वर्ष ताईं करी. बहुरि निर्वाण हो ग-

ये. जैसे तेल बिना दीपक निर्वाण होजाता है, तैसे निर्वाण होगये, जैसे समुद्रमें बुंद लीन होजाती है जैसे सूर्यका प्रकाश संध्याकालमें सूर्यके पास लीन हो जाता है; तैसे कलनारूप कलंकको त्यागकर ब्रह्मपदको प्राप्त भये.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे शुक निर्वाण वर्णनं नाम प्रथमः सर्गः ॥१॥

द्वितीयःसर्गः २

अथ विश्वामित्रोपदेशवर्णनं.

विश्वामित्रोवाच, हे राजा दशरथ। जैसे शुकजी शुद्ध बुद्धिवारे थे, तैसे रामजी भी हैं. जैसे शांतिके निमित्त उसको कछुक मार्जन कर्त्तव्यथा, तैसे रामजीको विश्रामके निमित्त कछुक मार्जन चाहिये; काहे ते कि आवरण करनहारे भोग हैं; सो इच्छा तिनते निवृत्ति भई है; अरु जो कछु जानवे योग्य था सो जाना है; अब हमको कछुक युक्ति करनी है, तिस करके उसको विश्राम होवेगा. जैसे शुकजीको थोडेसे मार्जन करके शांतिकी प्राप्ति भई थी, तैसे इनको भी होवेगी.

हे राजन्! अब रामजीको भोगकी इच्छा स्पर्श नहीं करती. जैसे ज्ञानवानको अध्यात्मक आदि दुःख स्प-

र्श नहीं करता, तैसे रामजीको भोगकी इच्छा स्पर्श नहीं करती. भोगकी इच्छा सबको दीन करती है, इसकाही नाम बंधन है; अब भोगकी वासनाका क्षय करना इसकाही नाम मोक्ष है. ज्यों ज्यों भोगकी इच्छा करता है, त्यों त्यों लघु हो जाता है; अरु ज्यों ज्यों भोगकी वासना क्षय होती है, त्यों त्यों गरिष्ट होता है. जब लग इसको आत्मानंद प्रकाश नहीं होता, तब लग विषयकी वासना दूर नहीं होती; जब आत्मानंद प्राप्त होता है, तब विषय वासना कोऊ नहीं रहती. जैसे मरुथलमें लताकी उत्पत्ति नहीं होती, तैसे ज्ञानवानको विषय वासनाकी उत्पत्ति नहीं होती.

हेसाध ! ज्ञानवान जो विषय भोगका त्याग करता है, सो किसी फलकी इच्छा करके नहीं करता; स्वभाव तेई ज्ञानवानकी विषय वासना उठजाती है. जैसे सूर्यके उदय हुए अंधकारका अभाव हो जाता है; तैसे रामजीको अब किसी भोग पदारथकी इच्छा रही नहीं; अब विदित् वेद हुआहै; अब आप विश्रामकी इच्छा चाहता है, ताते जो कहो, सोई करो; जिसकर विश्रामवान होय.

हे राजन् ! यह जो भगवान वशिष्ठजी हैं, इनकी युक्ति करके शांत होवेगा; अरु आगे भी सोई रघुवंश कुलके गुरु हैं; इनके उपदेश द्वारा आगे भी रघुवंशी ज्ञा-

नवान भये हैं. जो सर्वज्ञ हैं, अरु साक्षिरूप हैं, और त्रिकालज्ञ हैं, और ज्ञानके सूर्य हैं, इनके उपदेशकर रामजी आत्मपदको प्राप्त होवेगा.

हे वशिष्ठजी! वह ब्रह्माका उपदेश तुम्हारे स्मर्णमें है, क्योंकि जब तुम्हारा हमारा विरोध हुआथा, तब उपदेश किया. और जो सब ऋषीश्वर अरु वृक्ष करि पूर्ण है, ऐसा जो मंदराचल पर्वतमें आयकर ब्रह्माजीने संसार वासनाके नाश निमित्त उपदेश किया था, अरु तुम्हारा हमारा विरोध था, तिसके निमित्त अरु और जीवके कल्याण निमित्त जो उपदेश किया था; अब यही उपदेश तुम रामजीको करो; यह भी निर्मल ज्ञानपात्र हैं. अरु ज्ञानभी वही है; अरु विज्ञान भी वही है, अरु निर्मल युक्ति वही है, कि शुद्ध पात्रमें अर्पण होवे; अरु पात्र बिना उपदेश नहीं सुहात है, अरु जिसमें शिष्यभाव न होवे, अरु विरक्तता न होवे, ऐसा जो अपात्र मूर्ख होवे, तिनको उपदेश करना व्यर्थ है. अरु जो विरक्त होवे, अरु शिष्य भावना न होवे, तऊभी उपदेश नहीं करना, अरु दोनों करि संपन्न होवे तब करना. पात्र विना उपदेश व्यर्थ होता है; अर्थ यह कि अपवित्र हो जाता है. जैसे गौका दूध महापवित्र है, परन्तु श्वानकी त्वचामें डारिये, तब वह अपवित्र हो जाता है तैसे अपात्रको उपदेश करना व्यर्थ है. हे मुनीश्वर! जो शिष्य वैराग्य करि संपन्न होता है, अरु उदार आ-

त्मा है, सो तुम्हारे उपदेशके योग्य है; तुम कैसे हो; कि-वीतराग हो, भय अरु क्रोधते रहित हो; परम शांतिरू-प हो सो तुम्हारे उपदेशका पात्र रामजी है॰

वाल्मीकोवाच, इस प्रकार जब विश्वामित्रने कहा, तब नारद अरु व्यासादिकनने साधो, साधो, करके क-हा. अर्थ यह कि भला, भला, कहा; ऐसेई यथार्थ है. तब राजा दशरथके पास बडे प्रकारके साधु बैठे हुए थे॰

वशिष्ठोवाच, ब्रह्माजीके पुत्र वशिष्ठजीने तिनसे क-हा कि- हे मुनीश्वर! जो कछु तुमने आज्ञा करी है, सो हमने मानी है, ऐसा समर्थ कोऊ नहीं, जो संतकी आ-ज्ञा निवारन करे. हे साधो! जेते कछु राजा दशरथके पु-त्र हैं, तिन सबके हृदयमें जो अज्ञानरूपी तम है; सो मैं ज्ञानरूपी सूर्यकर निवारन करोंगा; जैसे सूर्यके प्रका-शकर अंधकार दूर होता है. हे मुनीश्वर! जो कछु ब्रह्मा-जीने उपदेश किया था, सो मुझको अखंड स्मर्ण है, सोई उपदेश करोंगा, जिसकर रामजी निःसंशय पद-को प्राप्त होवेगा.

वाल्मीकोवाच, इस प्रकार वशिष्ठजीने विश्वामित्रसे कहा, ताके अनंतर मोक्षका उपाय सब रामजीको कहत भया.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षुप्रकरणे विश्वामित्रो-पदेशो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

तृतीयः सर्गः ३

अथ असंख्य सृष्टि प्रतिपादन वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी, जो कछु कमलज जो ब्रह्मा-जी, तिसने मुझको जीवके कल्याण निमित्त उपदेश किया है, सो भले प्रकार मेरे सुमरणमें आता है, सो, अब तुझको कहता हौं.

श्रीरामोवाच, हे भगवन्! कछुक प्रश्न करनेका अवसर आया है; अब एक संशयको दूर करो. मोक्ष उपाय जो कहते हो, सो सब तुम कहोगे, परंतु यह जो तुमने कहा, कि शुकदेवजी विदेहमुक्त होगये; तो भगवान व्यासजी जो सर्वज्ञ हैं, सो विदेहमुक्त क्यों न हुये?

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! जैसे सूर्य किरन सों तृसरेणु उडत देख परती हैं, तिनकी संख्या कछु नहीं होती, तैसे परम सूर्यके संवेदन रूपी किरनमें त्रिलोकी रूपी तृसरेणु हैं; सो असंख्य हैं; और अनंत होकर मिट जाते हैं; अरु और अनंत होते हैं; और अनंत त्रिलोकी ब्रह्म समुद्रमें होवेंगे; तिसकी संख्या कछु नहीं.

श्रीरामोवाच, हे भगवन्, जो आगे व्यतीत होगये हैं, और आगे जो होवेंगे, तिनकी संख्या केती है? अरु वर्त्तमानको तो जानता हौं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! अनंत कोटि त्रिलोकीके ग-

ण उपजे हैं, अरु मिट गये हैं, अरु कैई हैं, अरु
कछु काहेते कि
जीव असंख्य हैं, अरु जीव जीव प्रति अपनी अपनी
सृष्टि है. जब यह जीव मृतक हो जाते हैं तब उसी
स्थानमें अपने अंतवाहक संकलपरूपी पूरविषे इसका
बांधव भास आता है. अरु इसी स्थानमें परलोक भा-
स आताहै. पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, पंचभूत
भासताहै; अरु नाना प्रकारकी वासनाके अनुसार अप-
नी अपनी सृष्टि भास आतीहै. बहुरि जब उहांते मृतक
होताहै, तब वही सृष्टि भास आतीहै; नाम रूप संयुक्त
वही जाग्रत सत्य होकर भास आतीहै. बहुरि जब वहां-
ते मरताहै, तब इस पंचभूत सृष्टिका अभाव होजाताहै
और अवर भासतीहै. अरु तहांके जो जीव होतेहैं, ति-
नको भी इसी प्रकार अनुभव होताहै. इसी प्रकार एक
एक जीवकी सृष्टि होतीहै, अरु मिट जातीहै, तिसकी
संख्या कछु नहीं; तब ब्रह्माकी सृष्टिकी संख्या कैसे होवे.

जैसे पुरुष फेर लेताहै, अरु तिसको सब पदारथ भ्रम-
ते दृष्टि आवतेहैं; अरु जैसे नौकामें बैठे हुए नदी तटके वृ-
क्ष चलते दृष्टि आतेहैं; जैसे नेत्रके दोषकर आकाशमें मो-
तीकी माला दृष्टि आतीहै. जैसे स्वप्नेमें सृष्टि भासतीहै;
तैसे जीवको भ्रम करके यह लोक परलोक भासताहै;
वास्तवते जगत् कछु उपजाई नहीं; एक अद्वैत परमा-

त्मतत्त्व अपने आपविषे ...तसविषे
विद्या करके भासताहै. जैसे बालकको अपने परछैयामें
वैताल भासताहै, अरु भयको पाताहै, तैसे अज्ञानी-
को अपनी कल्पना जगत्रूप होय भासतीहै.

हे रामजी! यह व्यासदेव बत्तीस बेर मेरे देखनेमें
आयाहै, तिसमें दशतो एक आकार रूपहै; अरु एकही
जैसी क्रिया, अरु एकही जैसे निश्चयहुआहै; अरु
अवर दश समानहीं सम हुवेहैं; अरु बारे विलक्षण
आकार, विलक्षण क्रिया चेष्टावारे हुयेहैं जैसे समुद्रमें
तरंग होतेहैं, तामें केई सम अरु केई विलक्षण उपजते
हैं, तैसे व्यास हुवेहैं; अरु सम जो दश हुयेहैं तिनमें दश
व्यास यहीहैं; अरु आगे भी अष्टबेर यही होवेगा; बहुरि
महाभारत कहेगा. बहुरि नौमी बेर ब्रह्मा होकर विदेह-
मुक्त होवेगा; अरु हमभी होवेंगे अरु वाल्मीकिभी होवे-
गा अरु भृगुभी होवेगा, अरु बृहस्पतिका पिता अंगिरा
भी होवेगा; इत्यादिक और भी होवेंगे.

हे रामजी! एक सम होतेहैं, एक विलक्षण होतेहैं;
अरु मनुष्य, देवता, तिर्यगादिक जीव केई बेर समान
...हैं; केई बेर विलक्षण होतेहैं; केई जीव समान आ-
कार आगे जैसे कुल क्रिया सहित होतेहैं; अरु केई सं-
कल्प कर उडते फिरतेहैं; आवना, जावना, जीवना, म-
रना, स्वप्न भ्रमकी नाईं दिखताहै. अरु वास्तवते कोऊ

आताहै; न जाताहै; न जन्मताहै. न मरताहै. यह भ्रम अज्ञानसों कर भासताहै, विचार कियेते कछु निकसता नहीं जैसे कदलीका थंभ देखनेमें बडा पुष्ट आताहै, फिर खोल देखो तो सार कछु नहीं निकसता; तैसे जगत् भ्रम अविचार करके सिद्धहै; विचार कियेते कछु भासता नहीं.

हे रामजी ! जो पुरुष आत्मसत्तामें जागाहै, तिस को द्वैत भ्रम नहीं भासताहै; वह आत्मदर्शी, सदा शांत आत्मा परमानंद स्वरूपहै; अरु सब कलनाते रहितहै. ऐसे जीवनन्मुक्तको कोई चलाय नहीं सकता ऐसे जो व्यासदेवजीहैं, तिसको सदेह मुक्ति, अरु विदेह मुक्ति की कोऊ कलना नहीं. सदा अद्वैत रूपहै. हे रामजी ! जीवन्मुक्तको सब सर्वात्मा पूर्ण भासताहै; अरु स्वस्वरूप भासताहै. स्वरूपसार शांतिरूप अमृत करि पूर्ण है; अरु निर्वाणमें स्थितहै.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे असंख्य सृष्टि प्रतिपादनं नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

चतुर्थः सर्गः ४

अथ पुरुषार्थोपक्रम वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी ! जीवन्मुक्ति अरु विदेह मुक्तिमें भेद कछु नहीं. जैसे स्थिर जल है, तोभी जल

है; अरु तरंग फिरते हैं, तौ भी जल है, तैसे जीवन्मुक्ति अरु विदेह मुक्तिमें भेद कछु नाहीं. हे रामजी! जीवन्मुक्ति अरु विदेहमुक्तिका अनुभव तुझको प्रत्यक्ष नहीं भासता, काहेते जो स्वसंवेद्य है; अरु तिनमें जो भेद भासता है, सो असम्यग्दर्शीको भासता है; ज्ञानवानको भेद कछु नहीं भासता है; जेते वायुस्पंद रूप होता है तौ भी वायु है; अरु निष्पंदरूप होता है तौ भी वायु है; उसके वायेते निश्चय विषे भेद कछु नहीं; पर अवर जीवको स्पंद होती है, तो भासती है, अरु निष्पंद होती है, तो नहीं भासती है; तैसे ज्ञानवान पुरुषको जीवन्मुक्ति अरु विदेह मुक्तिमें भेद कछु नहीं. वह सदा अद्वैत कलनाते रहित है. जब जीवको उसका शरीर भासता है, तब जीवन्मुक्त कहते हैं; जब शरीर अदृश्य होता है, तब विदेहमुक्त कहते हैं. अरु उसको दोई तुल्य हैं.

हे रामजी! अब प्रकृत प्रसंगको सुन, जो श्रवणका भूषण है–जो कछु सिद्ध होता है, सो अपने पुरुषार्थ कर सिद्ध होता है; पुरुषार्थ बिन सिद्ध कछु नहीं होता. और कहते हैं जो दैव करैगा सो होवेगा सो मूर्खता है. यह चंद्रमा हृदयको शीतल अरु उल्लासकर्त्ता भासता है; सो इसमें शीतलता पुरुषार्थ कर हुई है. हे रामजी! जिस अर्थकी प्रार्थना करे, अरु यत्न करे, अरु तिसमें फिरे नहीं तो अवश्य कर जरूर पाता है, और

पुरुष प्रयत्न किसका नाम है, सो श्रवण कर. संत-जन अरु सत्य शास्त्रके उपदेश रूप उपाय कर तिस-के अनुसार चित्तका विचरना होय सो पुरुषमें यत्न है, तिसते इतर जो चेष्टा करता है, तिसका नाम उन्मत्त चेष्टा है; अरु जिस निमित्त यत्न करता है सोई पावता है. एक जीव था, सो पुरुषार्थ पर यत्न करते अपुन इंद्र-की पदवी पाई, त्रिलोकीका पतिहोय सिंहासन पर आरूढ हुवा.

हे रामचंद्र! आत्मतत्त्वमें जो चैतन्य स्पंद, इस स्पं-दरूप होकर स्फूर्ति है, सो अपने पुरुषार्थ कर ब्रह्माके पदको प्राप्त भई है; ताते देख, जिसको कछु सिद्धता प्रा-प्त हुई सो अपने पुरुषार्थ कर हुई है. केवळ चैतन्य जो आत्मतत्त्व है, तिसमें चित्त संवेदन, यही स्पंद रूप है यह चैतन्य संवेदन अपने पुरुषार्थ करके गरुडपर आ-रूढ होय विष्णुरूप होता है; अरु यह चैतन्य संवेदन अपने पुरुषार्थ करके रुद्ररूप भया है, अरु अर्द्धांगमें पा-र्वतीको धर रहा है, अरु मस्तकमें चंद्रमाको धरा है, अ-रु नीलकंठ परम शांतरूप है; ताते जो कछु सिद्ध होता है सो पुरुषार्थ कर होता है.

हे रामजी! पुरुषार्थ करके सुमेरुका चूरण किया चाहे, तौभी कर सकता है. जैसे पूर्व दिनमें दुष्कृत कि-या होय, अरु अगले दिनमें सुकृत करे, तब दुष्कृत दू-

र हो जाता है. जो अपने हाथ द्वारा चरणामृत भी ले नहीं सकता, अरु पुरुषार्थ करे तो वही पृथ्वी खंड खंड करनेको समर्थ होता है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थो पक्रमो नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

पंचमः सर्गः ५

अथ पुरुषार्थ वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! जो चित्त कछु वांछा करता है, अरु शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ नहीं करता सो सुखको न पावेगा; उसकी उन्मत्त चेष्टा है, अरु पुरुषार्थ भी दो प्रकारका है- एक शास्त्र अनुसार है, एक शास्त्र विरुद्ध है. जो शास्त्रको त्याग करि अपनी इच्छाके अनुसार विचरता है, सो सिद्धताको न पावेगा; अरु जो शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ करता है, सो सिद्धताको प्राप्त होवेगा; अरु दुःख भी न होवेगा. अनुभवते स्मर्ण होता है, अरु स्मर्णते अनुभव होता है, सो दोनों इसहीते होते हैं देव तो कछु न हुवा.

हे रामजी, और देव कोऊ नहीं, इसका किया इसको प्राप्त होता है. परंतु जो बलिष्ट होता है, सो तिसके अनुसार विचरता है. जो पूर्वके संस्कार बली होते हैं,

तो उसकी जय होती है. अरु जो विद्यमान पुरुषार्थ बली होता है, तब उसको जीति लेते हैं. जैसे एक पुरुषके दो घेटे हैं अरु जो तिनको लडावता है, तो दोनों विषे जो बली होता है, तिसकी जय होती है; परंतु दोनों उसके हैं; तैसे दोनों कर्म इसके हैं, जो पूर्वका संस्कार बली होता है तोई इसकी जय होती है.

हे रामजी ! यह जो सत्संग करता है, अरु सत शास्त्रहूका विचार करता है, बहुरि पक्षीकी नांई संसार वृक्षहूकी ओर उडता है,तो पूर्वका संस्कार बली है, तिस करि स्थिर हो नहीं सकता, ऐसे जान कर तैंने पुरुष प्रयत्नका त्याग नहीं करना; जो पूर्वके संस्कारते अन्यथा नहीं होता! पूर्वका संस्कार बलीभी होवे,परंतु जब सत्संग करे, अरु सत शास्त्रहूका दृढ अभ्यास होवे, तो पूर्वके संस्कारको पुरुष प्रयत्न जीत लेता है; जैसे पूर्वके संस्कारमें दुष्कृत कियाहै, आगे सुकृत किया है तो अगलेका अभाव हो जाता है; सो पुरुष प्रयत्न होता है.सो पुरुषार्थ क्या है? अरु तिसकर सिद्ध क्या होता है !सो श्रवण करके ज्ञानवान जो संत हैं अरु सतशास्त्र जो ब्रह्मविद्या है; तिसके अनुसार प्रयत्न करना; तिसका नाम पुरुषार्थ है. अरु पुरुषार्थ करके पावने योग्य आत्मा है, जिसकरि संसार समुद्रते पार होवे.

हे रामजी ! जो कछु सिद्ध होता है, सो अपने पुरु-

षार्थ करि होता है; अवर देव कोऊ नहीं. अरु जो शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थको त्याग करि कहता है, जो जो कछु करना है, सो देव करैगा, सो मनुष्यमें गर्दभ है; तिसका संग न करना, उसकी संगति करनी सो दुःखका कारण है. इस पुरुषको प्रथम तो यह कर्त्तव्य है-कि अपने वर्णाश्रम विषे शुभ आचारको गृहण करना, अरु अशुभका त्याग करना; बहुरि संतका संग, अरु सतशास्त्रका विचारना; और तिसके विचार कर अपने गुण दोषहूका विचार करना; कि दिन अरु रात्रिमें शुभ क्या करता हों अरु अशुभ क्या करता हों. आगे गुण अरु दोषहूका साक्षीभूत होकर जो संतोष, धीरज, वैराग्य, विचार; अरु अभ्यास गुण हैं, तिसको बढावना; अरु जो दोष विपरीत हैं, तिसका त्याग करना. जब ऐसे पुरुषार्थको अंगीकार करैगा, तब परमानंदरूप आत्मतत्त्वको प्राप्त होवेगा. ताते

हे रामजी ! बनके घायल हुए मृगकी नांई नहीं होना. जो घास, तृण, पातको रसीला जानके परा चुगता है; तैसे स्त्री, पुत्र, बांधव, धनादिक विषे मग्न हो रहना, सो नहीं होना; इनते विरक्त होना. दंतहू साथ दंतहूको चबाय करि संसार समुद्रको पार होनेका यत्न करना; अरु बलते बंधनको तोड करि निकस जाना. जैसे केसरी सिंह बल करके पिंजरेमेंते निकस जाताहै तैसे निकस जाना, सोई पुरुषार्थहै.

हे रामजी! जिसको कछु सिद्धताकी प्राप्ति हुईहै, सो अपना पुरुषार्थकर हुईहै; पुरुषार्थ बिना नहीं होती. जैसे प्रकाश बिन पदार्थका ज्ञान नहीं होता जिस पुरुषने अपना पुरुषार्थ त्याग दियाहै; अरु देवके आश्रय हुयेहैं; कि हमारा देव कल्याण करेगा, सो नहोवेगा. जैसे पत्थरसों तेल निकासाचाहे, सो नहीं निकसता; तैसे उनका कल्याण नहोवेगा. हे रामजी! तुम तो दैवका आश्रय त्याग कर अपने पुरुषार्थका आश्रय करो.

जिसने अपना पुरुषार्थ त्यागाहै, तिसको सुंदर कांति लक्ष्मी त्याग जातीहै; जैसे वसंतऋतुकी मंजरी वसंतऋतुके गयेते बिरस होजातीहै, तैसे उनकी कांति लघु होजातीहै, जिस पुरुषने ऐसा निश्चय कियाहै, कि हमारा पालनेहारा दैवहै, सो पुरुष ऐसाहै, जैसे कोऊ अपनी भुजाको सर्प जानके भय पायके दौरतेहैं, और जानते नहीं कि अपनी भुजाहै; तैसे अपने पुरुषार्थको त्यागके देवका आश्रय लेताहै; अरु भयको पाताहै.

पुरुषार्थ नाम इसकाहै- कि संतहूका संग अरु सतशास्त्रोंका विचार करके तिनके अनुसार विचरना अरु जो तिनको त्यागके अपनी इच्छाके अनुसार विचरतेहैं, सो सुखको नहीं पावेंगे; न सिद्धताको पावेंगे. अरु जो शास्त्रके अनुसार विचरतेहैं; सो इहांभी सुख पावेंगे, अरु आगेभी सुख पावेंगे, तैसेई सिद्धताको पावेंगे. ताते

संसाररूपी जाल विषे नहीं गिरना, सो पुरुषार्थहै. संतजनहूके संग अरु सत शास्त्रके अर्थ हृदयरूपी पत्रपै लिखना; बोधरूपी कानी करनी अरु विचाररूपी स्याही करनी. जब ऐसे पुरुषार्थ करि लिखेगा, तब संसाररूपी जालमें न गिरेगा.

हे रामजी जैसे यह आदिनेति हुईहै, जो पटहै सो पटहीहै, जो घटहै सो घटहीहै; घटहै सो पट नहीं, और पटहै सो घट नहीं; तैसे यहभी नेति हुईहै-अपने पुरुषार्थ विना परमपदकी प्राप्ति नहीं होती.

हे रामजी! जो संतहूकी संगति करताहै, अरु सतशास्त्र भी विचारताहै; अरु उनके अर्थमें पुरुषार्थ नहीं करता, तिसकरि सिद्धता प्राप्त नहीं होती. जैसे अमृतके निकटई बैठा होवे, अरु पान किये बिना अमर नहीं होता, तैसे अभ्यास किये बिना सिद्धता प्राप्त नहीं होती.

हे रामजी! अज्ञानी जीव अपना जन्म व्यर्थ खोवतेहैं. जब बालक होतेहैं, तब मूढ अवस्थामें लीन रहतेहैं, अरु युवा अवस्थामें विकारहूको सेवतेहैं; अरु जरामें जर्जरी भूत होतेहैं, इसी प्रकार जीवना व्यर्थ खोवतेहैं. अरु जो अपना पुरुषार्थ त्याग करके दैवका आश्रय लेता है, सो अपने हंता होतेहैं, सुखको नहीं पावेंगे हे रामजी! जो पुरुष व्यवहार विषे अरु परमार्थविषे आलसी हुयेहैं अरु परमार्थको त्यागके मूढ होरहेहैं, सो दीन

हुएहैं. मानो पशुहैं; अरु दुःखको प्राप्त हुवेहैं; यह मैं विचार करके देखाहै; ताते पुरुषार्थका आश्रय करो. सत संग अरु सत शास्त्ररूपी आदर्श करके, अपने गुण करके दोषको देखके, दोषका त्याग करो; अरु शास्त्रका सिद्धांत जोहै तिसका अभ्यास करो. जब दृढ अभ्यास करोगे, तब शीघ्रही आनंदवान होहुगे.

वाल्मीकोवाच, जब इस प्रकार वशिष्ठजीने कहा, तब सायंकालका समय हुआ; सब स्नानके निमित्त उठके खडे भये और परस्पर नमस्कार करके अपने २ घरको गये बहुरि सूर्यकी किरनहू साथ आय स्थित भये.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थ वर्णनं नाम पंचमः सर्गः ॥ ५ ॥

षष्ठः सर्गः ६

अथ परम पुरुषार्थ वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! इसका जो पूर्वका किया पुरुषार्थ है, तिसका नाम दैव है, और दैव कोऊ नहीं. जब यह सतसंग अरु सतशास्त्रका विचार पुरुषार्थ करे, तब पूर्वके संस्कारको जीत लेता है. जिस पुरुष इष्ट पावनेका यह शास्त्रद्वारा यत्न करैगा, तिसको अवश्यमेव अपने पुरुषार्थते पावेगा; अन्यथा कछु नहीं होती, न हु-

ई है, न होवेगी. पूर्व जो कोऊ पाप किया होता है, तिसका फल जब दुःख पावता है, तब मूर्ख कहता है कि हाय दैव. हाय दैव, हाय कष्ट, हाय कष्ट !

हे रामजी! इसका जो पुरुषार्थ पूर्वका है, तिसका नाम दैव है, और दैव कोऊ नहीं. और जो कोऊ दैव कल्पते हैं, सो मूर्ख हैं. अरु जो पूर्वके जन्म सुकृत करके आया होता है; वही सुकृत सुख होयके देखाई देता है. जो पूर्वका सुकृत बली होता है तो उसहीकी जय होती है. जो पूर्वका दुष्कृत बली होता है, अरु शुभका पुरुषार्थ करता है; सतसंग अरु सत शास्त्रहूका विचार श्रवण करता है, तो पूर्वके संस्कारको जीत लेता है. जैसे प्रथम दिन पाप किया होवे, दूसरे दिन बडा पुण्य करे, तो पूर्वका पाप निवृत्त हो जाता है; तैसे जब इहां दृढ पुरुषार्थ करे, तो पूर्वके संस्कारको जीत लेता है. ताते जो कछु सिद्ध होता है, सो इसको पुरुषार्थ करके सिद्ध होता है. कि एकत्र भाव करि प्रयत्न करना, इसीका नाम पुरुषार्थ है. जिसका यत्न एकत्र भाव होयके करेगा तिसको अवश्यमेव प्राप्त होवेगा. जो पुरुष अवर दैवको जानके अपना पुरुषार्थ त्याग बैठा है, सो दुःखको पावेगा; शांतिवान कबहूं न होवेगा.

हे रामजी! मिथ्या दैवके अर्थको त्यागके तुम अपने पुरुषार्थका अंगीकार करो. जो संतजन अरु सतशा-

स्त्रहूके वचन अरु युक्ति साथ, यत्न करके आत्मपदको अभ्यास करके प्राप्त होना, इसीका नाम पुरुषार्थ है. प्रकाश करकै जैसे पदार्थहूका ज्ञान होता है, तैसे पुरुषार्थ कर आत्मपदकी प्राप्ति होती है. जो पूर्वके कियेसे बडा पापी होता है; अरु इहां दृढ पुरुषार्थ कियेते उसको जीत लेता है. जैसे बडा मेघ होता है, अरु तिसका पवन नाश करता है; अरु जैसे वर्ष दिन हूका क्षेत्र पक्का होता है, अरु बर्फ तिसका नाश कर देता है; तैसे पूर्वका संस्कार पुरुष प्रयत्न करके नाश होता है.

हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुष सोई है, जाने सतसंग अरु सतशास्त्र द्वारा बुद्धिको तीक्ष्ण करके संसार समुद्र तरनेका पुरुषार्थ किया है. अरु जिनहू सतसंग अरु सतशास्त्रद्वारा बुद्धि तीक्ष्ण नहीं करी, अरु पुरुषार्थको त्याग बैठे हैं, सो पुरुष नीचते नीच गतिको पावेंगे. अरु जो श्रेष्ठ पुरुष हैं, सो अपने पुरुषार्थ करके परमानंद पदको पावेंगे, जिसके पायेते बहुरि दुःख नहीं होता. अरु जो देखने करि दीन होते हैं; अरु सतसंगति अरु सतशास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ करते हैं, सो उत्तम पदवीको प्राप्त होते दृष्टि आवते हैं. हे रामजी! जिन पुरुषने पुरुष प्रयत्न किया है, तिसको सब संपदा आय प्राप्त होती हैं, अरु परमानंद करि पूर्ण हो रहते हैं. जैसे रत्नहूकरि समुद्र पूर्ण है, तैसे उह परमानंद करके पूर्ण हुए हैं. ताते

जो श्रेष्ठ पुरुष हैं, सो अपने पुरुषार्थ द्वारा संसारके बंधन ते निकस जाते हैं. जैसे केसरी सिंह अपने बलसों पिंजरते निकस जाता है, तैसे उह अपने पुरुषार्थ करि संसार बंधनते निकस जाता है.

हे रामजी! यह पुरुष और कछु न करे तब यह करे- कि अपने वर्णाश्रमके अनुसार विचरे, अरु सार पुरुषार्थ करे; जो संतहू अरु शास्त्रहूका आश्रय होवे तिसके अनुसार पुरुषार्थ करे, तब सब बंधनते मुक्त होवेगा अरु जो अपने पुरुषार्थका त्याग किया है; किसी और देवको मानके कहता है; कि वह मेरा कल्याण करेगा; सो जन्म मरणको प्राप्त होवेगा. हे रामजी! इस जीवको संसाररूपी विशूचिका रोग है, तिसको दूर करनेका उपाय मैं कहता हौं. संत जन अरु सतशास्त्र हूके अर्थ विषे दृढ भावना करनी; जो कछु तिनहूते सुना है, तिसका वारंवार अभ्यास करना; अवर सब कल्पना त्यागके एकांत होयके तिसका चिंतन करना, तब इसको परमपदकी प्राप्ति होवेगी; अरु द्वैत भ्रम निवृत्त हो जावेगा. अद्वैतरूप पडा भासेगा; इसकाई नाम पुरुषार्थ है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे परम पुरुषार्थ वर्णनं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

सप्तमः सर्गः ७

अथ पुरुषार्थ उपमा वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी ! अन्य पुरुषार्थ करके इसको अध्यात्मक आदि ताप आय प्राप्त होते हैं; तिसकरि शांतिको नहीं पाता. तुम रोगी नहीं होवना; अपने पुरुषार्थ द्वारा जन्म मरनके बंधनते मुक्त होहु. और कोई दैव मुक्ति नहीं करनेका; अपने पुरुषार्थ द्वारा संसार बंधनते मुक्त होना है. जिस पुरुषने अपने पुरुषार्थका त्याग किया है, अरु किसी और दैवको मानि करि तिस परायण हुये हैं; तिसका धर्म, अर्थ, काम नष्ट हो जावेगा. अरु नीचते नीच गतिको प्राप्त होवेगा.

हे रामजी ! शुद्ध चैतन्य जो इसका अपना आप है, अरु वास्तवरूप है, तिसके आश्रय जो आदिचित्त संवेदन स्फूर्ति है; जो अहंमम संवेदन होयके फुरने लगती है, बहुरि इंद्रिय अहं स्फूर्ति है. जब यह स्फूर्नी संत अरु शास्त्रके अनुसार होवे, तब वह पुरुष परम शुद्धताको प्राप्त होता है. अरु जो संत औ शास्त्रके अनुसार न होवे, तब बासनाके अनुसार भाव अभाव रूप जो भ्रम जाल है, तिसविषे परा घटी यंत्रकी नाईं भटकता है, शांतिवान कबहूं नहीं होता.

हे रामजी ! जिस किसीको सिद्धता प्राप्त हुई है,सो

अपने पुरुषार्थकर हुई है, बिन पुरुषार्थ सिद्धताको प्राप्त न होवेगा. जब किसी पदारथको ग्रहण करना होता है; तब भुजा पसारिये तो ग्रहण करना होता है; अरु जो किसी देशको प्राप्त होना होवे, सो जब चले तब जाय पहुंचिए; अन्यथा नहीं होता; ताते पुरुषार्थ बिना सिद्ध कछु नहीं होता. जो कोऊ कहता है, दैव करैगा सो होवेगा, सो मूर्ख है. हे रामजी! और दैव कोऊ नहीं, इस पुरुषार्थका नाम दैव है. यह दैव शब्द मूर्ख हूका परचावा है; जो किसी कष्ट साथ दुःख पाया; तिसको कहते हैं, दैवका किया है;सो और तो दैव कोऊ नहीं.

हे रामचंद्र जो अपना पुरुषार्थ त्यागके दैवके आश्रय हो रहेगा, सो सिद्धताको प्राप्त न होवेगा; काहेते कि अपने पुरुषार्थ बिना सिद्धता किसीको प्राप्त नहीं होती. अरु वृहस्पति जो दृढ पुरुषार्थ किया है तब सब देवता हूका राजा इंद्रका गुरु हुआ है; अरु शुक्रजी अपने पुरुषार्थ द्वारा सर्व दैत्य हूका गुरु हुआ है; अरु अवर जो समान जीव हैं तिस विषे जिस पुरुषने प्रयत्न किया है सो पुरुष उत्तम हुवा है. जिसको जाते सिद्धता प्राप्त भई है, सो अपने पुरुषार्थ करि भई है. अरु जिस पुरुषने संत अरु शास्त्रहूके अनुसार पुरुषार्थ नहीं किया, सो मेरे देखते देखते बडे राज, अरु प्रजा, अरु धनते, और विभूतिते क्षीण हो गये हैं; अरु नर-

कहू विषे परे जलते हैं जिस करके कछु अर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम पुरुषार्थहै, अरु जिस करके अनर्थ सिद्धि होवे, तिसका नाम अपुरुषार्थहै.

हे रामजी! इस पुरुषको कर्तव्य यहीहै; कि सतशास्त्र अरु संतहूका संगकरि बुद्धि तीक्ष्णकरे, अरु शुभगुणको पुष्टकरे; दया, धीरज, संतोष, वैराग्यके अभ्यास करके बुद्धि तीक्ष्ण करे; अरु तीक्ष्ण बुद्धि करकै इनको पुष्टकरे. जैसे बडे तालते मेघ पुष्ट होताहै, बहुरि वर्षा करकै मेघ तालको पुष्ट करताहै; तैसे शुभ गुण करके बुद्धि पुष्ट होतीहै; अरु पुष्ट बुद्धि करि शुभगुण पुष्ट होतेहैं.

हे रामजी! जो बालक अवस्थाते लेकरि अभ्यास किया होताहै, उसको शुद्धता प्राप्त होतीहै. अर्थ यह जो दृढ अभ्यास विना शुद्धता प्राप्त नहीं होतीहै. जो किसी देश अथवा तीर्थ जाना होवे. तब मार्गविषे निरआलस होयके चला जावे, तो जाय पहुंचैगा. अरु जब भोजन करैगा तब क्षुधा निवृत्त होवैगी, अन्यथा नहीं होवैगी. अरु जब मुख विषे जिह्वा शुद्ध होवेगी तब पाठ स्पष्ट होवेगा; गुंगासों पाठ नहीं होता. ताते जो कछु कार्य सिद्ध होताहै, सो अपने पुरुषार्थकर सिद्ध होताहै, तूष्णीहो रहनेते कोऊ कार्य सिद्ध नहीं होता. अरु सबही गुरु बैठेहैं, इनहूते पूंछ देखो, आगे जो तेरी इच्छा हो सोकर. अरु जो मुझसों पूछे तो सब शास्त्रका सिद्धांत कहताहों, जिसकरि सिद्धताको प्राप्त होवेगा.

हे रामजी! संत जोहैं, ज्ञानवान पुरुष, अरु सतशास्त्र जोहै, ब्रह्मविद्या, तिनके अनुसार संवेदन अरु मन अरु इंद्रियोंका विचारना होवे; अरु इसते विरुद्ध होवे तिसते बर्ज्य रखना; तिसकरके तुझको संसारका राग दोष स्पर्श नहीं करैगा; सबते निर्लेप रहैगा जैसे जलते कमल निर्लेप रहताहै, तैसे तू निर्लेप रहैगा. हे रामजी! जिस पुरुषहूते शांति प्राप्तहोवे, तिसकी भली प्रकार सेवा करिये, काहेते कि उनका बडा उपकारहै; जो संसार समुद्रते निकासिलेतेहैं. हे रामजी! संत जन भी वहीहैं, अरु सत शास्त्रभी वहीहैं; जिसके विचार करि अरु संगति करि संसारते चित्त उपरती होवे, मोक्षका उपाय उहीहै; ताते अवर सब कल्पनाको त्यागके अपने पुरुषार्थको अंगीकार करहु, तब जन्म मरनका भय निवृत्त होजावे.

हे रामजी! जब यह वांछा करताहै, अरु तिसके निमित्त दृढ पुरुषार्थ करताहै, तब अवश्यमेव तिसको पावे; अरु जो बडे तेज अरु विभूति करके संपन्न तुझको दृष्टि आवतेहैं, अरु सुनताहै; सो अपने पुरुषार्थ करि भयेहैं. अरु जो महानिष्ठ सर्प कीट आदिक तुझको दृष्टि आवतेहैं, तिनने अपने पुरुषार्थका त्याग कियाहै; तब ऐसे हुवेहैं;

हे रामजी! अपने पुरुषार्थको आश्रयकर; नहीं तो सर्प कीटादिक नीच योनिको प्राप्त होवेगा. जिन पुरुषने

अपना पुरुषार्थ त्यागाहै, और किसी दैवका आश्रय धराहै, सो महा मूर्खहै, काहेते कि यह वार्त्ता व्यवहारमें भी प्रसिद्धहै; कि अपने उद्यम किये विना किसी पदारथकी प्राप्ति नहीं होती; तो परमार्थकी प्राप्ति कैसे होवे? ताते दैवको त्याग करि संतजन अरु सतशास्त्रोंके अनुसार यत्न करहु; परमपद पानेके निमित्त जो दुःखहीते मुक्त होवहिं. हे रामजी जो जनार्दन विष्णुजीहैं. सो अवतार धर कर दैत्यहूको मारताहै, अरु अवर चेष्टा भी करताहै परंतु पापका स्पर्श उसको नहीं होता; जो अपने पुरुषार्थ करके अक्षय पदको प्राप्त हुवाहै. तुम भी पुरुषार्थका आश्रय करो, अरु संसार समुद्रको तरि जावहु.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थ उपमा वर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

अष्टमः सर्गः ८

अथ परम पुरुषार्थ वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! यह जो दैव शब्द है सो मूर्खोंने कल्पा है, जो दैव हमारी रक्षा करैगा. हमको दैवका आकार कोऊ दृष्टि नहीं आवता; नकोऊ दैवका काल है, न दैव कछु करताही है; मूर्ख लोग दैव दैव

परे कहते हैं. अवर दैव कोऊ नहीं. इसका पूर्वका कर्म ही दैव है.

हे रामजी! जिन पुरुषने अपने पुरुषार्थका त्याग किया है; अरु दैव परायण हुये हैं; कि दैव हमारा कल्याण करेगा सो मूर्ख हैं; काहेते जो अग्नि विषे यह जाय पडे, अरु दैव इसको निकासि लेवे, तब जानिये कि कोऊ दैव भी है, सो तो नहीं. अरु जो दैव करता है, तो इह स्नान, दान, भोजन, आदिहूका त्याग करि तूष्णी होय बैठे; आपेई दैव कर जावैगा; सो भी इसको किये विना नहीं होता; ताते और दैव कोऊ नहीं. अपना पुरुषार्थ ही कल्याण कर्त्ता है.

हे रामजी! जो इसका किया कछु नहीं होता, अरु दैवही करने हारा होता; तो शास्त्र अरु गुरुका उपदेशभी नहीं होता. सो सतशास्त्रके उपदेश करके अपने पुरुषार्थद्वारा इसको वांछित पदवी प्राप्त होती है; ताते और जो कोऊ दैव शब्द है, सो व्यर्थ है; इस भ्रमको त्याग करके संत अरु शास्त्रहूके अनुसार पुरुषार्थ करे, तब दुःखहूते मुक्त होवैगा. हे रामजी! और दैव कोऊ नहीं; इसका पुरुषार्थ जो है स्पंद, सोई दैव है.

हे रामजी! जो कोऊ अवर दैव करन हारा होता, तो जब इस शरीरको त्यागता है, अरु शरीर जब नाश होजाता है; क्रिया शरीरसों कछु नहीं होती; काहेते जो

चेष्टा करनेहारा त्याग जाता है; तब दैव होता तौ सभी शरीरसों चेष्टा करावता; सो तो चेष्टा कछु नहीं होती; ताते जानना कि दैव शब्द व्यर्थ है. हे रामजी! पुरुषार्थकी वार्त्ता है, सो अज्ञानी जीवोंको भी प्रत्यक्ष है, जो अपने पुरुषार्थ बिना कछु होता नहीं. गोपाल भी जानता है जो मैं गौवोंको चराऊं नहीं तो भूखी ही रहेंगी; ताते और दैवके आश्रय बैठि नहीं रहता, आपही चराय ले आवता है.

हे रामजी! और दैवकी कल्पना भ्रम करके परे करते हैं; अवर दैव तो हमको कोऊ दृष्टि नहीं आवता. हस्त, पाद, शरीर, दैवका कोऊ दृष्टि नहीं आवता. अपने पुरुषार्थ करि सिद्धता दृष्टि आती है. अरु जो कोऊ आकारते रहित दैव कल्पिये तो नहीं बनता; काहेते कि निराकार अरु साकारका संयोग कैसे होवे? हे रामजी! और दैव कोऊ नहीं, अपना पुरुषार्थ दैवरूप है. जो राजा ऋद्धि, सिद्धि, संयुक्त भासता है, सो भी अपने पुरुषार्थ करि हुए हैं.

हे रामजी! यह जो विश्वामित्र है, याने दैव शब्द दूरहीते त्याग किया है; सो भी अपने पुरुषार्थ करके क्षत्रियते ब्राह्मण हुवे हैं; अरु अवर जो बडे विभूतिवान हुवे हैं, सो भी अपने पुरुषार्थ करि दृष्टि आवते हैं. हे रामजी! जो दैव पढे विना पंडित करे तो जानिये-

दैवने किया, सो तो पढे बिना पंडित कहूं नहीं होता; अरु जो अज्ञानीते ज्ञानवान होते हैं, सोभी अपने पुरुषार्थ करि होते हैं, ताते अवर दैव कोऊ नहीं. मिथ्या भ्रमको त्याग करि, संतजन अरु सतशास्त्रहूके अनुसार संसार समुद्र तरनेका प्रयत्न करहु; तेरे पुरुषार्थ बिना अवर दैव कोऊ नहीं. जो अवर दैव होता तो बहुत बेर क्रिया बलभी, अपनी क्रियाको त्यागके सोई रहता, आपे दैवही पडा करैगा, सो ऐसे तो कोऊ नहीं करता; ताते अपने पुरुषार्थ बिना कछु सिद्ध नहीं होता. अरु जो इसका किया कछु न होता, तो पाप करनेहारे नरक न जाते, अरु पुण्य करनेहारे स्वर्ग न जाते; परंतु पाप करने हारे नरकमें जाते हैं; अरु पुण्य करने हारे स्वर्गमें जाते हैं, ताते जो कछु प्राप्त होता है, सो अपने पुरुषार्थ करि होता है.

हे रामजी ! जो कोऊ अवर दैव करता है, ऐसा कहे तिसका शिर काटिए; अरु दैवके आश्रय जीवता रहे तो जानिये कि कोऊ दैव है, सो तो जीवता कोऊ रहे नहीं, ताते दैव शब्दको मिथ्या भ्रम जानके संतजन अरु सतशास्त्रहूके अनुसार अपने पुरुषार्थ करि, आत्मपद विषे स्थित होउ.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे परम पुरुषार्थ वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

नवमः सर्गः ९

अथ परम पुरुषार्थ वर्णनं.

रामोवाच, हे भगवान्, सर्व धर्महूके वेत्ता! तुम कहते हो कि और दैव कोई नहीं, परंतु ब्राह्मण भी दैव है ऐसा कहते हैं; और दैवका किया सब कछु होता है, अरु सुख दुःखके देने हारे दैव हैं, यह लोकविषे प्रसिद्ध है.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! मैं तुझको ऐसे कहता हों, जो तेरा भ्रम निवृत्त होजावे, इसहीका कर्म किया हुवा है, शुभ अथवा अशुभ तिसका फल अवश्यमेव भोगना है, सो दैव कहो, पुरुषार्थ कहो; अवर दैव कोऊ नहीं, अरु कर्त्ता, क्रिया, कर्म आदि कहू विषे तो दैव कोऊ नहीं; और कोऊ दैवका स्थान नहीं रूप नहीं, तो अवर दैव क्या कहिये. हे रामजी! मूर्खहूके परचावने निमित्त दैव शब्द कहा है. जैसे आकाश शून्य है, तैसे दैवभी शून्य है.

रामोवाच, हे भगवन्; सर्व धर्महूके वेत्ता! तुम कहतेहो कि अवर दैव कोऊ नहीं, सो आकाशकी नाईं शून्य है, सो तुम्हारे कहने कर भी दैव सिद्ध होता है तुम कहते हो कि इसके पुरुषार्थका नाम दैव है, अरु जगत् विषे भी दैव शब्द प्रसिद्ध है.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! मैं ऐसे तुझको कहता हों, जिस करि दैव शब्द तेरे हृदयसों उठि जावे; अर्थ यह

कि शून्य होजावे. दैव नाम अपने पुरुषार्थका है, अरु पुरुषार्थ नाम कर्मका अरु कर्म नाम वासनाका है, वासना मनते होती है. अरु मनरूपी पुरुष है. जिसकी वासना करता है, सोई इसको प्राप्त होता है. जो गांवको प्राप्ति होनेकी वासना करता है, सो गांवको प्राप्त होता है; जो पत्तनकी वासना करता है, सो पत्तनको प्राप्त होता है; ताते अवर दैव कोऊ नहीं पूर्वका जो शुभ अथवा अशुभ दृढ पुरुषार्थ किया तिसका परिणाम सुख दुःख अवश्य होता है और तिसी काई नाम दैव है.

हे रामजी! तुम विचारकर देखो कि अपना पुरुषार्थ कर्महूते भिन्न नहीं तो सुख दुःख देनहारा अरु लेनहारा दैव कोऊ नहीं हुआ क्योंकि यह जो पापकी वासना करताहै अरु शास्त्र विरुद्ध कर्म करताहै, सो किसकरि करताहै? पूर्वका जो इसका दृढ पुरुषार्थ कर्म; तिसकरि यह पाप करताहै; अरु जो पूर्वका पुण्य कर्म किया होताहै; तो यह शुभ मार्ग विषे विचरताहै.

रामोवाच, हे भगवन्! जो पूर्वकी दृढ वासनाके अनुसार यह विचारताहै, कि मैं क्या करों? मुझको पूर्वकी वासनाने दीन कियाहै; अब मुझको क्या कर्तव्यहै?

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! जो कुछ इसकी पूर्वकी वासना दृढ होरहीहै, तिसके अनुसार यह विचरना होताहै; अरु जो श्रेष्ठ मनुष्य है, सो अपने पुरुषार्थ करके पूर्वके

मलीन संस्कारको शुद्ध करतेहैं;तिसके मल दूर हो जाते हैं. सतशास्त्र अरु ज्ञानहूके वचन अनुसार दृढ पुरुषार्थ करो, तब मलीन वासना दूर हो जावेगी.

हे रामजी! पूर्वके मलीन कर्म कैसे जानिये, अरु शुभ कर्म कैसे जानिये, सो श्रवण करहु- जो चित्त विषयकी ओर धावे, अरु शास्त्र विरुद्ध मार्गकी ओर जावे अरु शुभकी ओर नधावे, तो जानिये कि पूर्वका कर्म कोऊ मलीनहै; अरु जो संतजनहु अरु सतशास्त्रहूके अनुसार चेष्टाकरे, अरु संसार मार्गते विरक्त होवे, तब जानिये कि पूर्वका कर्म शुद्धहै. ताते, हे रामजी! तुझको दोनों करके सिद्धताहै; जो पूर्वका संस्कार शुद्धहै, ताते तेरा चित्त शीघ्रही सत्संग अरु सत शास्त्रहूके वचनको ग्रहण करिलेवेगा, अरु शीघ्रही तुझको आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी अरु जो तेरा चित्त इस शुभमार्ग विषे स्थिर नहीं होसके, तो दृढ पुरुषार्थ करि संसार समुद्रते पार होवहु.

हे रामजी तू चेतनहै, जड तो नहीं अपने पुरुषार्थका आश्रय करहु मेरा भी यही आशीर्वादहै जो तुम्हारा चित्त शीघ्रही शुभ आचरण विषे स्थित होवे अरु ब्रह्मविद्याका जो सिद्धांत सारहै, तिसविषे स्थित होवे. हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुषभी वहीहै, जिसका पूर्वका संस्कार यद्यपि मलीनभीथा, परंतु संत अरु सतशास्त्रके अनुसार दृढ पु-

रुषार्थ कियाहै, सो सिद्धताको प्राप्त भयाहै. अरु जो मूर्ख जीवहैं तिनहूने अपना पुरुषार्थ त्याग कियाहै, ताते संसारते मुक्त नहीं होता; पूर्वका जो कोऊ पाप कर्म किया होताहै तिसके मलीनता करके पापमें धावताहै, अपना पुरुषार्थ त्यागनेते अंध होजाताहै, अरु विशेषकरि धावताहै.

जो श्रेष्ठ पुरुषहै तिनको यह कर्तव्यहै-प्रथम तो पांचो इंद्रियां वश करनी; शास्त्र अनुसार तिनको वर्त्तावनी; शुभ वासना दृढ करनी; अशुभका त्याग करना; यद्यपि त्यागनी दोनों वासनाहैं. प्रथम शुभ वासनाको इकट्ठी करनी; अरु अशुभका त्याग करना जब शुद्ध वासना करके कषाय परिपक्क होवेंगे; अर्थ यह जो अंतःकरण जब शुद्ध होवेगा, तिस हृदय बिषे संत अरु सत शास्त्रका जो सिद्धांतहै, तिसका विचार उत्पन्न होवेगा, और ताते तुझको आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवेगी. तिस ज्ञानद्वारा आत्माका साक्षात्कार होवेगा; बहुरि क्रिया ज्ञानका भी त्याग होजावेगा. केवल शुद्ध अद्वैतरूप अपना आप शेष भासेगा. ताते हे रामजी! और सब कल्पनाका त्याग करि संतजन अरु सतशास्त्रहूके अनुसार पुरुषार्थ

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षुप्रकरणे परम पुरुषार्थ वर्णनं नाम नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

दशमः सर्गः १

अथ वशिष्ठोत्पत्ति तथा वशिष्ठोपदेशागमन वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! मेरे वचनको गृहण करो; सो वचन बांधव जैसे हैं; बांधव कहिये जो तेरे परम मित्र होवहिंगे, अरु दुःखहूते तेरी रक्षा करैंगे. हे रामजी! यह जो मोक्ष उपाय तुझको कहता हों, तिसके अनुसार तू पुरुषार्थ करैगा, तब तेरा परम अर्थ सिद्ध होवेगा अरु यह चित्त जो संसारके भोगकी ओर धावता है, तिस भोगरूपी खाड विषे चित्तको गिरने मत देहु. भोगको विरस जानिके त्याग देहु; उह त्याग तेरा परममित्र होवेगा. अरु त्याग भी ऐसा करहु जो बहुरि भोगहूका गृहण न होय.

हे रामजी! यह मोक्ष उपाय संहिता है. चित्तको एकाग्र करकै इसको श्रवण कर तिसकारि परमानंदकी प्राप्ति होवेगी. प्रथम शम अरु दमको धारि, अर्थ यह जो संपूर्ण संसारकी वासनाका त्याग करहु, अरु उदारता करकै तृप्त रहना, इसका नाम शम है. अरु दम अर्थ यह जो बाह्य इंद्रियको वश करना. जब इसको प्रथम धारेगा तब परम तत्त्वका विचार आय उत्पन्न होवेगा. तिस विचारते विवेकद्वारा परमपदकी प्राप्ति होवेगी, जिस पदको पाय करि बहुरि दुःख कदाचित् न होवेगा;

अविनाशी सुख तुझको आय प्राप्त होवेगा. ताते जो कछु मोक्ष उपाय यह संहिता है, तिसके अनुसार पुरुषार्थ करहु, तब आत्मपदको प्राप्त होवहिगा. पूर्व जो कछु ब्रह्माजी हमको उपदेश किया है, सो मैं तुझको कहताहूं.

रामोवाच, हे मुनीश्वर! तुझको जो ब्रह्माजी उपदेश कियाथा, सो किस कारण किया था, अरु कैसे तुमने धारा सो कहो.

वशिष्ठोवाच, हे रामचंद्र! शुद्ध चिदाकाश एक है, अरु अनंत है, अविनाशी है, परमानंदरूप है, चिदानंद स्वरूप है, ब्रह्म है, तिस विषे संवेदन स्पंदरूप होइ है, सो विष्णु होइ करि स्थित भई है, सो विष्णुजी कैसा है? जो स्पंद अरु निस्पंद विषे एक रस है. कदाचित् अन्यथा भावको नहीं प्राप्त हुवा जैसे समुद्र विषे तरंग उपजते हैं, तैसे शुद्ध चिदाकाशते स्पंद करके विष्णु उत्पन्न हुआ है; तिस विष्णुजीके स्वर्णवत् कीर्न नाभि कमलतें ब्रह्माजी प्रगट भया है. तिस ब्रह्माजीने ऋषि, मुनीश्वर सहित स्थावर जंगम प्रजा उत्पन्न करी, तिस मनोराज करि ब्रह्माजीने जगत्को उत्पन्न किया; तिस—

जगत्की कोन विषे जो जंबूद्वीप, भरतखंड है, तिस विषे मनुष्यको दुःखकारि आतुर देखि करि ब्रह्माजीको करुणा उपजी, जैसे पुत्रको देखि पिताको करुणा उपजती है. तब तिसके सुख निमित्त ब्रह्माजी तप

उत्पन्न किया, कि सुखी होवहिं; अरु आज्ञा करी कि तप करो; तब तप करत भये; तिस तप करि स्वर्गादिकहूको जाय प्राप्त होने लगे; तिन सुखहूको भोगि करि बहुरि गिरहिं, तब दुःखी रहे. ऐसे ब्रह्माजी देखि करि सत्यवाक् धर्मको प्रतिपादन करत भये; तिनके सुखके निमित्त आज्ञा करी; तिस धर्मकी प्रतिपादना करी लोकहूको सुख प्राप्त होने लगे; तहां केताक काल सुख भोग करि बहुरि गिरहिं, तब दुःखीके दुःखी रहे; बहुरि ब्रह्माजीने दान तीर्थादिक पुण्यक्रिया उत्पन्न करके, उनको आज्ञा करी कि इनके सेवने करि तुम सुखी होहुगे- जब वह जीव उनको सेवने लगे. तब बडे पुण्य लोकहूको प्राप्त भये; अरु तिनके सुख भोगने लगे. बहुरि केताक काल अपने कर्मके अनुसार भोग भोगि गिरे; तब तृष्णाकरि बहुत सुख दुःखके अनुभव करते भये; अरु दुःखकरि आतुर हुवे, तब ब्रह्माजी देखत भया, जो जन्म अरु मरणके दुःख करि महादीन होते हैं, ताते सोई उपाय करिये, जिसकरि उनका दुःख निवृत्त होवे-

हे रामचंद्र ! ब्रह्माजी विचारत भया, कि इसका दुःख आत्मज्ञान विना निवृत्त नहीं होनेका; ताते आत्मज्ञानको उत्पन्न करिये,जो यह सुखी होवहि, इस प्रकारविचार करि आत्मतत्त्वका ध्यान करत भया आत्मतत्त्वके ध्यानते संकल्प किया; तिस ध्यानके करनेतें जो

शुद्ध तत्त्वज्ञान है, तिसकी मूर्त्ति होकरि मैं प्रगट भया; सो मैं केसा हों? ब्रह्माजीके समान हों जैसे उनके हाथ विषे कमंडलु है, तैसे मेरे हाथ विषे कमंडलु है; जैसे उनके कंठ विषे रुद्राक्षकी माला हैं, तैसे मेरे कंठमें भी रुद्राक्षकी माला हैं; जैसे उनके ऊपर मृगछाला है, तैसे मेरे ऊपर मृगछाला है; इस प्रकार ब्रह्माजीका अरु मेरा समान आकार है, अरु मेरा शुद्धज्ञान स्वरूप है, मुझे जगत् कछु नहीं भासता; सुषुप्तिकी नांई जगत् मुझको भासता है, तब ब्रह्माजी विचार किया कि इसको मैं जीवहूके कल्याण निमित्त उत्पन्न किया है; अरु यह तो शुद्धज्ञान स्वरूप है; अरु अज्ञान मार्गको उपदेश तब होवे, जब कछु प्रश्न उत्तर होवे; अरु तब मिथ्याका विचार होवे.

हे रामजी! जीवहूके कल्याण निमित्त मुझको ब्रह्माजीने गोदमें बिठाया, अरु शीशपै हाथ फेरा, तिस करि मैं शीतल होगया. जैसे चंद्रमाकी किर्णहू करि शीतलता होती है, तैसे मैं शीतल भया. तब ब्रह्माजी मुझको जैसे हंसको हंस कहे, यों कहा- हे पुत्र! जीवहूके कल्याण निमित्त एक मुहूर्त्त पर्यंत तू अज्ञानको अंगीकार करहु. श्रेष्ठ पुरुष जोहै सो अवरहूके निमित्तभी अंगीकार करते आये हैं. जैसे चंद्रमा बहुत निर्मल है, परंतु श्यामताको अंगीकार किया है, तैसे तू भी एक मुहूर्त्त अज्ञानको अंगीकार करहु.

हे रामजी ! इस प्रकार मुझको कहि करि ब्रह्माजीने शाप दिया, " कि तू अज्ञानी होवेगा " तब मैं ब्रह्माजीकी आज्ञा मानि शापको अंगीकार किया. तब मेरा जो शुद्ध आत्मतत्त्व अपना आपथा, तिसते मैं अन्यकी नांई होत भया, मेरी स्वभावसत्ता मुझको विस्मरण हो गई, अरु मेरा मन जागि आया; भाव अभाव रूप जगत् मुझको भासने लगा. अरु आपको मैं वशिष्ठ जानत भया, अरु ब्रह्माजीका पुत्र, यों जानत भया अरु नाना प्रकारके पदार्थ सहित जगत् जानत भया अरु तिनकी ओर चंचल होत भया; तब मैं संसार जालको दुःख रूप जानि करि ब्रह्माजीते पूछत भया- हे भगवन् ! यह संसार कैसे उत्पन्न भया अरु कैसे लीन होता है? हे रामजी! जब इस प्रकार पिता ब्रह्माजीसों प्रश्न किया, तब भली प्रकार मुझको उपदेश करत भया, तिसकरि मेरा अज्ञान नष्ट होगया. जैसे सूर्य उदय हुवे, तम निवृत्त होजाता है, तैसे मेरा अज्ञान निवृत्त होगया; अरु मैं शुद्धताको प्राप्त भया. जैसे आदर्शको मार्जन करता है, अरु शुद्ध हो आवता है; तैसे मैं शुद्ध हुवा.

हे रामजी ! मैं ब्रह्माजीसे भी अधिक होत भया, तब मुझको परमेष्टी ब्रह्माजी आज्ञा करी- हे पुत्र ! जंबूद्वीप भरतखंडमें जा. तुझको सृष्टि प्रयंतविषे अधिकार है; तहां जाइकरि जीवहुको उपदेश करहु; जिसको संसार

के सुखकी इच्छा होवे, तिसको कर्ममार्गका उपदेश करना; तिसकारि स्वर्गादिक सुख भोगेंगे. अरु संसारते विरक्त होवे, औ जिनको आत्मपदकी इच्छा होवे, तिसको ज्ञान उपदेश करना; ताते तुम अब भुवलोक विषे जाहु. हे रामजी! इस प्रकार मेरा उपदेश अरु उपजना हुवा है, अरु इस प्रकार मेरा आवना हुवा है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे वशिष्ठोत्पत्ति तथा वशिष्ठोपदेशागमनं नाम दशमः सर्गः ॥ १० ॥

एकादशः सर्गः ११

अथ वशिष्ठोपदेश वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! इस प्रकार पृथ्वी विषे मेरा आना भया. मैं कैसाहों? जाको आत्मज्ञानकी वांछा होवे सो पूर्ण करिवेके लिये ब्रह्माजी मुझको उत्पन्न करतभये.

रामोवाच, हे मुनीश्वर ! तिस ज्ञानकी उत्पत्तिते अनंतर जीवनकी शुद्धि कैसे भई ? सो कहो.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! जो शुद्ध आत्मतत्त्वहै, तिसका स्वभाव रूप संवेदन स्फूर्तिहै; सो ब्रह्माजीरूप होकर स्थित भईहै. जैसे समुद्र अपनी द्रवता करके तरंग रूप होताहै; तैसे ब्रह्माजी भयाहै. बहुरि संपूर्ण जगत्को उत्पन्न किया, अरु तीनों काल उत्पन्न किये, तब

केता काल व्यतीतहुवा; अरु कलियुग आया; तिसकरि जीवहूकी बुद्धि मलीन होगई; अरु पापविषे विचरनेलगे; शास्त्र वेदकी आज्ञा माननेते रहगये. इस प्रकार धर्मकी मर्यादा छिपगई, अरु पाप प्रगट भया; जेती कछु राज धर्मकी मर्यादा थी, सो सब नष्ट होगई; अरु अपनी इच्छाके अनुसार जीव विचरने लगे, ताते कष्ट पावनेलगे. तिनको देखि करि ब्रह्माजीको करुणा उपजी, तिस दयाको धारि करि भूलोक विषे मुझको भेजा, अरु कहा-हेपुत्र! जायकारि तुम धर्मकी मर्यादा स्थापन करो; अरु जीवनको शुद्ध उपदेश करो. जिसको भोगहूकी इच्छा होवे, तिसको कर्मकांडका उपदेश करना; और जप, तप, स्नान, संध्या, यज्ञादिकका उपदेश करना; अरु जो संसारते विरक्तहुवेहैं, अर [illegible] जाको परमपद पानेकी इच्छाहै; तिसको ब्रह्[illegible] उपदेश करना.

हे रामचंद्र! जिस प्रकार ब्रह्माजी मुझको आज्ञाकारि भूमिलोक विषे भेजते भये, तैसेई सनत्कुमार, नारदकोहू कहतेभये; तब हम सब ऋषीश्वर इकट्ठे होकर विचारत भये-कि जगत्की मर्यादा किस प्रकार होवे; अरु जीव शुभमार्ग विषे कैसे विचरहि। तब हमने यह विचार किया, कि प्रथम राज्यहूका स्थापन करना जो जीव तिनकी आज्ञा अनुसार विचरहिं प्रथम दण्डकर्ता

राज्य स्थापन किया, सो कैसा राजा! जो बडा वीर्यवान्, अरु तेजवान, बडा उदार आत्मा भया, तिन राजहूको हम अध्यात्मक विद्या उपदेश करी; तिसकरि परमपदको प्राप्त भये. जो परमानंदरूप अविनाशी पदहै, तिस ब्रह्मविद्याका उपदेश तिसको भया, तब सुखी भये. इसकारणते ब्रह्मविद्याका नाम राजविद्याहै. तब हमहूने वेद, शास्त्र, श्रुति, पुराणकरि धर्मकी मर्यादा स्थापनकरी; सो जप, तप, यज्ञ, दान, स्नान, आदिक क्रियाको प्रगट कीनी. अरे जीव! तुम इसके सेवने करि सुखी होउगे; तब सब फलको धारि करि तिनको सेवने लगे; तामें कोऊ विरला निरहंकार हृदय शुद्धताके निमित्त कर्म करतेथे.

हे रामजी! जो मूर्खहैं सो कामनाके निमित्त मनमें फूलके कर्म करतेहैं, सो घटी यंत्रकी नाईं भटकते फिरतेहैं सो कबहूं ऊर्ध्व अरु कबहूं नीचे आतेहैं, और जो निष्काम करतेहैं, तिसका हृदय शुद्ध होताहै, फिर सो ब्रह्मविद्याके अधिकारी होतेहैं; ताके उपदेश द्वारा आत्मपदकी प्राप्ति होतीहै. इस प्रकार सों जीवन्मुक्त हुवेहैं; कई राजा प्रसिद्ध हुवेहैं; सो राजको परंपरा चलावता हमारे उपदेश द्वारा ज्ञानको प्राप्त भयेहैं, और राजा दशरथहू ज्ञानवान भयाहै; और तूभी इसी दशाको आयके प्राप्त हुवाहै, सो तू सबते श्रेष्ठ हुवाहै; जैसे तू विरक्त आत्मा हुआहै, तैसे आगेहू स्वभाविक विरक्त आत्मा भ-

येहैं. सो स्वभावकर देह शुद्धि कर हुवेहैं; इसीकारणते तू श्रेष्ठहै. जो कोऊ अनिष्ट दुःख प्राप्त होताहै, तिस कर विरक्तता उपजतीहै; सो तुझको नहीं भई; तुझको सब इंद्रियके विषय विद्यमानहैं; तैसे होते तेरेको वैराग्य हुआहै. ताते तू श्रेष्ठहै.

हे रामजी! जो मशान आदिक कष्टके स्थान कहे, ता ठिकाने सबको वैराग्य उपजता है. "जो कछु नहीं! मरजाना है!" तिनमें जो कोऊ श्रेष्ठ पुरुष होता है, सो वैराग्यको दृढ कर रखता है; और जो मूर्ख है सो फिर विषयमें आसक्त होजाता है,ताते जिनको अकारण वैराग्य उपजता है, सो श्रेष्ठ हैं; हे रामजी! जो श्रेष्ठ पुरुष हैं, सो अपने वैराग्य अरु अभ्यासके बल करके संसार बंधनते मुक्त होजाते हैं. जैसे हस्ति बंधनको तोरके अपने बलसों निकस जाता है, तब सुखी होता है; तैसे वैराग्य अभ्यासके बलकर बंधनते ज्ञानी मुक्त होत है.

हे रामजी! यह संसार बडा अनर्थरूप है; जिस पुरुषने अपने पुरुषार्थ करके बंधनको नहीं तोरा, तिनको राग दोष रूपी अग्नि जरावत है;अरु जिन पुरुषने अपने पुरुषार्थ करके शास्त्र और गुरुको प्रमाण करके ज्ञान साधा है, सो उस पदको प्राप्त भये हैं. तिनको अध्यात्मक, अधिदैविक, अधि भौतिक, ताप जलाय सकता नहीं; जैसे वर्षाकालमें बहुत वर्षाके होते बनको दावा-

नल जलाय नहीं सकता, तैसे ज्ञानीको अध्यात्मक आदि ताप कष्टको नहीं देते.

हे रामजी! जिन श्रेष्ठ पुरुषने संसारको विरस जानकर त्याग किया है, तिनको संसारका पदार्थ गिराय नहीं सकता. अरु जो मूर्ख हैं तिनको गिराय देते हैं; जैसे अंध्यारी चलत पवनके वेगसों वृक्ष गिर जाते हैं; परंतु कल्पवृक्ष गिरता नहीं. तैसे हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुष वही जिसको संसार विरस होगयाहै; सो केवल आत्मतत्त्वकी इच्छा करके तिस परायण भये हैं, तिनकोई ब्रह्मविद्याका अधिकार है; सोई उत्तम पुरुष हैं. हे रामजी! तूभी तैसा उज्ज्वल पात्र है, जैसे कोमल पृथ्वीमें बीज बोते हैं, तैसे तुझको मैं उपदेश करता हों, और जिसको भोगकी इच्छा है, और संसारकी ओर यत्न करता है, सो पशुवत है. श्रेष्ठ पुरुष वही है, जिसको संसार तरनेका पुरुषार्थ होता है.

हे रामजी! प्रश्न तिनके पास करिये, जिनको जानियेकि मेरे प्रश्नका उत्तर देनेको समर्थ है; और जिसमें उत्तर देनेकी सामर्थ्यता दिखनेमें नहीं आवे, तिससों प्रश्न करना नहीं; और उत्तर देनेको जो समर्थ देखिये, और तिसके वचनमें भावना न होय, तब भी तिससों प्रश्न न करिये; काहेते कि दंभकर प्रश्न करनेमें पाप होता है; और गुरु भी उपदेश तिनको करता है, जो संसारते

विरक्त होवे; अरु केवळ आत्मपरायण होनेकी श्रद्धा होवे; अरु आस्तिक भाव होवे, ऐसा पात्र देखके उपदेश करे. हे रामजी! जो गुरु अरु शिष्य दोनों उत्तम होते हैं, तब वचन शोभते हैं. तुम उपदेशका शुद्ध पात्र हो; जेते कछु गुण शिष्यके शास्त्रमें वर्णन किये हैं, सो सब तेरेमें पैयत है; और मैं उपदेश करनेमें समर्थ हों, ताते कार्य्य शीघ्र होवेगा.

हे रामजी! शुभ गुण साथ तेरी बुद्धि निर्मल होय रही है; मेरा जो सिद्धांतका सार वचन है सो तेरे हृदयमें प्रवेश कर रहेगा. जैसे उज्ज्वल वस्त्रको केशरका रंग शीघ्र चढ जाता है, तैसे तेरे निर्मल चित्तको उपदेशका रंग लगेगा. जैसे सूर्यके उदयते सूर्यमुखी कमल खिलते हैं; तैसे तेरी बुद्धि शुभ गुण कर खिल आई है. हे रामजी! जो कछु शास्त्रका सिद्धांत आत्मतत्त्व मैं तुझको कहता हों, तिसमें तेरी बुद्धि शीघ्र प्रवेश करेगी जैसे निर्मल जलमें सूर्यकी कांति प्रवेश करत है, तैसे तेरी बुद्धि आत्मतत्त्वमें शुद्धता करके प्रवेश करैगी.

हे रामजी! मैं तुम्हारे आगे हाथ जोरके प्रार्थना करता हों, जो कछु मैं तुझको उपदेश करता हों; तिसविषे तू आस्तिक भावना करियो, जो इन वचन कर मेरा कल्याण होवेगा; अरु जो तुझको धारना न होवे तो प्रश्न मत करना. जो शिष्यको गुरुके वचनमें आस्तिक

भावना होती है, तिसका शीघ्र कल्याण होता है; ताते मेरे वचनमें आस्तिक भावना करियो; और जिसकर तू आत्मपदको प्राप्त होवेगा सो मैं कहता हों. प्रथम तो यह कर जो अज्ञानी जीवमें असत्य बुद्धि है तिनका संग त्याग कर; अरु,

मोक्षद्वारके जो चार द्वारपाल हैं, तिनसों मित्र भावना कर; जब तिनसों मित्रभाव होयगा, तब वह मोक्ष द्वारमें पहुंचाय देयँगे; तब आत्मदर्शन तुझको होवेगा. सो द्वारपालके नाम श्रवण कर-सम, संतोष, विचार, सत्संग. यह चारो द्वारपाल हैं; जिन पुरुषने इनको वश किया है तिसको यह शीघ्र मोक्षरूपी द्वारके अंतर कर देते हैं. हे रामजी ! जो चारों वश न होवें, तो तिनको वश कर; अथवा दोको वश करले, अथवा एकको वश कर; जो एक वश होवेगा, तो चारोई वश हो जायँगे, इन चारोंका परस्पर स्नेह है; जहां एक आता है तहां चारो आयके रहते हैं. जो पुरुषने इनसों स्नेह किया है सो सुखी भये हैं; और जिनने इनका त्याग किया है, सो दुःखी हैं. हे रामजी! यद्यपि प्राणका त्याग होवे, तौभी एक साधन तो बल करके वश करना; एकके वश कियेते चारोही वशी होयँगे; अरु तेरी बुद्धिमें शुभ गुणने आयके निवास किया है; जैसे सूर्यमें सब प्रकाश आये हुवे हैं तैसे संतने अरु शास्त्रने जो निर्म-

ल गुण कहे हैं, सो सब तेरेमें पैयत हैं. हे रामजी! अब तू मेरे वचनका अधिकारी भया है; जैसे चंद्रमाके उदयते चंद्रमुखी कमल खिल आते हैं; तैसे शुभ गुण कर तेरी बुद्धि खिल आई है.

हे रामजी! सत्संग अरु सतशास्त्र द्वारा बुद्धिको तीक्ष्ण कियेते शीघ्र आत्मतत्त्वमें प्रवेश होता है, ताते श्रेष्ठ पुरुष वही है, जिनने संसारको बिरस जानके त्याग किया है; अरु संत अरु सतशास्त्रके वचन द्वारा आत्मपद पानेका यत्न करता है, सो अविनाशी पदको प्राप्त होता है. और जो संसारका त्याग करके संसारकी ओर लगे हैं सो महामूर्ख जड हैं; जैसे जल शीतलता करके वर्फ हो जाता है, तैसे अज्ञानी मूर्खता करकै आत्म मार्गते जड होइ रहे हैं हे रामजी! अज्ञानीके हृदयरूपी बिलमें दुराशा रूपी सर्प रहता है, सो कदाचित्त शांति नहीं पाता, अरु आनंदसों कबहूं प्रफुल्लित नहीं होता. अरु आशा करके सदा संकुचित रहता है. हे रामजी! आत्मपदके साक्षात्कारमें विशेष आवरण आशाही है जैसे सूर्यके आगे मेघका आवरण होता है, तैसे आत्मतत्त्वके आगे दुराशा आवरण है; जब आशारूपी आवरण दूर होवे, तब आत्मपदका साक्षात्कार होवे हे रामजी! आशा तब दूर होवे जब संतकी संगति अरु सतशास्त्रका विचार होवे.

हे रामजी ! संसाररूपी एक बडा वृक्ष है, सो बोध रूपी खड्ग कर छेदा जाता है; जब सत्संग अरु सतशास्त्रकर तीक्ष्ण बुद्धि होवे, तब संसाररूपी भ्रमका वृक्ष नष्ट हो जाता है. जब शुभ गुण होते हैं, तब आत्मज्ञान आयके विराजता है; जहां कमल होते हैं, तहां भौंरे आयके स्थित होते हैं; तब शुभ गुणमें आत्मज्ञान रहता है हे रामजी ! शुभ गुणरूप पवनकर जब इच्छारूपी मेघ निवृत्त होता है, तब आत्मारूपी चंद्रमाका साक्षात्कार होता है, जैसे चंद्रमाके उदय हुवे आकाश शोभता है, तैसे आत्माके साक्षात्कार हुवे तेरी बुद्धि खिलेगी

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे वशिष्ठोपदेशो नाम एकादशः सर्ग ॥ ११ ॥

द्वादशः सर्गः १२

अथ तत्त्वज्ञ माहात्म्य वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी ! अब तू मेरे वचनका अधिकारीहै, काहेते कि, तप, वैराग्य, विचार, संतोष आदि जो शुभ गुण संत अरु शास्त्रने कहेहैं, सो सब तेरेमें पैयतहै; ताते तू मेरे वचनको सुन, सो रज तम गुणको त्यागकर शुद्ध सात्विकवान होकर सुन-राजस जो विच्छेप अरु तामस जो लय निद्रामें होतहै, सो दोऊका त्याग

करकै सुन. जेते कछु जिज्ञासुके गुण शास्त्रमें वर्णन कियेहैं, सो सब कर तू संपन्नहै, अरु जेते कछु गुरुके गुण शास्त्रमें वर्णन कियेहैं, सो सब मेरेमेंहैं. जैसे रत्नकर समुद्र संपन्नहै तैसे मैं संपन्नहों. ताते मेरे वचनका तू अधिकारीहै; और मूर्खको मेरे वचनका अधिकार नहीं. हे रामजी! जैसे चंद्रमाके उदयते चंद्रकांत मणि द्रवीभूत होतीहै, तब तामें ते अमृत सरताहै; और पत्थरकी शिलाहै, तिनते द्रवीभूत नहीं होताहै; तैसे जो जिज्ञासु होताहै तिसको परमार्थ वचन लगताहै, अरु अज्ञानीको नहीं लगता. हे रामजी! शिष्यतो शुद्ध पात्र होवे, अरु उपदेश करनेहारा ज्ञानवान नहोवे, तो उसको आत्माका साक्षात्कार नहीं होवे, जैसे चंद्रमुखी कमलनी निर्मलहोय, अरु चंद्रमा नहोय तब प्रफुल्लित नहीं होती तैसे ताते तू मोक्षकापात्रहै; अरु मैंभी परम गुरुहों मेरे उपदेश कर तेरा अज्ञान नष्ट होय जावेगा.

मैं मोक्षका उपाय कहताहों, जब तिसको तू भले प्रकार विचारेगा; तब जेती कछु मलिन मनकी वृत्तिहैं, तिनका अभाव होजायगा; जैसे महाप्रलयके सूर्यकर मंदराचल पर्वत जलजाताहै. ताते हे रामजी! वैराग्य अरु अभ्यासके बलकर इस मनको अपने विषे लीनकर शांतात्मा होवहु. तैंने बालकावस्थासों लेकर अभ्यास कर रक्खाहै, ताते मन उपशम पायके आत्मपदको प्राप्त

होवेगा. हे रामजी! सत्संग अरु सतशास्त्रद्वारा जो आत्मपद पायाहै, सो सुखी भयेहैं; फिर तिनको दुःख नहीं लगता; काहेते जो दुःख देहाभिमानकर होताहै, सो देहका अभिमान तो उनने त्याग दियाहै; तैसे जिसने देहका अभिमान त्यागदियाहै अरु देहका आत्मता करके बहुरि ग्रहण नहीं करता ताते सुखी रहताहै. हे-रामजी! जिनने आत्माका बल धरके विचारद्वारा आत्मपदको पायाहै; सो अकृत्रिम आनंदकर सदा पूर्णहै; सब जगत् तिसको आनंदरूप भासताहै; अरु जो असम्यग्दर्शीहै, तिनको जगत् अनर्थरूप भासताहै. हे रामजी! संसरन रूप जो यह संसार सर्पहै; सो अज्ञानीके हृदयमें दृढ होगयाहै, सो योगरूपी गारुड मंत्र करके नष्ट होजाताहै; अन्यथा नहीं होता. और सर्पका विषहै सो एक जन्ममें मारताहै; अरु संसरनरूप जो विषहै, तिस करके अनेक जन्म पायके मरता चला जाताहै, शांतिवान कदाचित् नहीं होता.

हे रामजी! जिन पुरुष सत्संग अरु सतशास्त्रके वचनद्वारा आत्मपदको पायाहै, सो आनंदित भयेहैं; अरु अंतर्बाहिर सब जगत् इनको आनंदरूप भासताहै. अरु सब क्रिया करनेमें आनंद विलासहै. और जिनने सत्संग अरु सतशास्त्रका विचार त्यागाहै, अरु संसारके सन्मुखहैं; तिसकर तिसको संसार अनर्थरूपहै सो

ऐसा दुःख देताहै-जैसे सर्पके दंशते दुःखी होतेहैं, अरु शस्त्रकर घायल होतेहैं, अरु अग्निमें पारेकी नांई जलतेहैं, अरु जेवरीके साथ बंध होतेहैं, अरु अंध कूपमें गिरनेते कष्ट पातेहैं; तैसे संसारमें मनुष्य दुःख पातेहैं. हे रामजी! जिन पुरुषोंने सत्संग अरु सतशास्त्र द्वारा आत्मपदको नहीं पाया, सो ऐसे कष्ट पातेहैं. जो नरकरूपी अग्निमें जरते हैं; अरुचिके विष पीते हैं; पाषाणकी वर्षाकर चूरण होते हैं; कोल्हूमें पीसडारते हैं, अरु शस्त्र साथ कटते हैं; इत्यादिक जो बडे कष्ट हैं सो तिनको प्राप्त होते हैं. हे रामजी! ऐसा दुःख कोऊ नहीं! जो इस जीवको प्राप्त नहीं होता; आत्माके प्रमादसों सब दुःख होते हैं. अरु जिन पदारथको यह रमणीक जानते हैं, सो चक्रकी नांई चंचल है; कबहूं स्थिर नहीं रहते; सतमार्गको त्यागकर जो इनकी इच्छा करते हैं, सो महा दुःखको प्राप्त होते हैं. अरु जिन पुरुषने संसारको विरस जाना है, और पुरुषार्थकी तरफ दृढ भये हैं, तिनको आत्मपदकी प्राप्ति होती है

हे रामजी! जो पुरुषको आत्मपदकी प्राप्ति भई है, तिनको फिर दुःख नहीं होता, और तिनके दुःख जो नष्ट नहीं होते, तो ज्ञानके निमित्त पुरुषार्थ कोऊ नहीं करता. जो अज्ञानी है तिनको संसार दुःखरूप है; अरु ज्ञानीको सब जगत् आनंदरूप है: अपने आपहै है. त-

नको भ्रम कोऊ नहीं रहता. हे रामजी! ज्ञानवानमें नानाप्रकारकी चेष्टा भी दृष्टि आती हैं, तौ भी सदा शांतरूप है; अरु आनंदरूप है; संसारका दुःख कोऊ नहीं परश कर सकता; काहेते कि तिनने ज्ञानरूपी कवच पहिरा है

हे रामजी! ज्ञानवानको भी दुःख होता है; बडे बडे ब्रह्मर्षि, अरु राजर्षि बहुत ज्ञानवान भये हैं, सोहू दुःखको प्राप्त होते हैं, परंतु दुःखसों आतुर नहीं होते, क्यों- कि जो ज्ञानवानने ज्ञानका कवच पहिरा है, ताते कोऊ दुःख स्पर्श नहीं करता, सदा आनंदरूप है. जैसे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, नाना प्रकारकी चेष्टा करते, और जीवको दृष्टि आवते हैं; अरु अंतरते सदा शांतरूप हैं; इस प्रकार और भी जो ज्ञानवान उत्तम पुरुष हैं सो शांतरूप हैं, ताको कर्त्ताका अभिमान कोऊ नहीं फुरता. हे रामजी! अज्ञानरूपी जो मेघ है, तिसकर मोहरूपी कुहाडाका वृक्ष है, सो ज्ञानरूपी शरत्काल करके नष्ट होजाता है; ताते स्वसत्ताको प्राप्त होवे है; अरु सदा आनंदकर पूर्ण है. हे रामजी! जो कछु क्रिया करते हैं, सो तिनको विलास रूप है; अरु सब जगत् आनंदरूप है; अरु शरीररूपी रथ, इंद्रियरूपी अश्व, और मनरूपी रस्सा, तासों अश्वको खैंचता है; अरु बुद्धिरूपी रथ वाही है, तिस रथमें यह पुरुष बैठा है; अरु इंद्रियरूपी अश्व इसको खोटे मार्गमें डारते हैं. अरु ज्ञानवानके इंद्रिय-

रूपी अश्व हैं सो ऐसे हैं कि जहां जाते हैं तहां अनंदरूप हैं, किसी ठौरमें खेद नहीं पाता; सब क्रियामें उनको बिलास है; सर्वदा आनंदकर तृप्त रहते हैं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे तत्त्वज्ञमाहात्म्य नाम द्वादशः सर्गः ॥ १२ ॥

त्रयोदशःसर्गः १३

अथ सम वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! इसी दृष्टिको आश्रयकर जो हृदय पुष्ट होवे, बहुरि संसारके इष्ट अनिष्ट कर्मकर चलायमान न होवे, जिस पुरुषको इस प्रकार आत्मपदकी प्राप्ति भई है, सो परम आनंदित भये हैं; शोकके कर्त्ता नहीं है. न याचना करता है, उपाधिते रहित परम शांतिरूप अमृतकर पूर्ण होय रहे हैं सो पुरुष नाना प्रकारकी चेष्टा करते दृष्टि आते हैं, परंतु कछु नहीं करते. जहां उनके मनकी वृत्ति जाती है, तहां आत्मसत्ता भासती है, सो आत्मानंदकर पूर्ण होय रहे हैं. जैसे पूर्णमासीका चंद्रमा अमृतकरि पूर्ण रहता है, तैसे ज्ञानवान परमानंद करि पूर्ण रहता है. हे रामजी! यह जो मैं तुझको अमृतरूपी वृत्ति कही है, इसको जब जानेगा तब तुझको साक्षात्कार होवेगा. जब, जिसको आत्मज्ञानकी प्राप्ति

होती है. तब सब दुःख नष्ट हो जाते हैं; जैसे चंद्रमाके मंडलमें अंधकार नहीं होता, तैसे ज्ञानीको अशांति कबहूं नहीं होती और जो कछु क्रिया करते हैं, तिसमें दुःख पाता है; जैसे कंकरके वृक्षमें कंटककी उत्पत्ति होती है, तैसे अज्ञानीको दुःखकी उत्पत्ति होती है.

हे रामजी! इस जीवको मूर्खता करके बडे दुःख प्राप्त होते हैं ऐसा अद्भुत दुःख और कोऊ नहीं, अरु किसी आपदा करके भी ऐसा दुःख नहीं होता; जैसा दुःख मूर्खता करके पाते हैं ऐसा दुःख कोऊ नहीं. हे रामजी! हाथमें ठीकरा ले चंडालके घरकी भिक्षा गृहण करे, और आत्मतत्त्वकी जिज्ञासा होवे, तौभी और ऐश्वर्यते श्रेष्ठ है, परंतु मूर्खतासों जीवना व्यर्थ है; तिस मूर्खताको दूर करनेको मोक्ष उपाय मैं कहता हों.

हे रामजी यह मोक्ष उपाय परम बोधका कारण है; कछुक बुद्धि शंसकारी होवे, अर्थ यह जो पद पदार्थके जानने हारी होवे, अरु मोक्ष उपाय शास्त्रको विचारे, तो तिसकी मूर्खता नष्ट हो जावेगी, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी. जैसा आत्मबोधका कारण यह शास्त्र है, तैसा और शास्त्र त्रिलोकी विषे कोऊ नहीं. नाना प्रकारके दृष्टांत सहित इतिहास है जामें, तिसको जब विचारेगा तब परमानंदको प्राप्त होवेगा; अज्ञानरूपी तिमिर नाश करनेको ज्ञानरूपी शलाका है. जैसे अंधकारको सूर्य

नाश करता है तैसे अज्ञानको यह शास्त्रका विचार नाश करता है. हे रामजी! जिस प्रकार इसका कल्याण होता है सो श्रवण कर- गुरु जो ज्ञानवान है सो शास्त्रका उपदेश करे, अरु अपने अनुभवसों ज्ञान पावे. जब गुरु अरु शास्त्र और अपना अनुभव यह तीनो इकट्ठे मिलें तब इसका कल्याण होवे; जबलग अकृत्रिम आनंदको प्राप्त नहीं भया, तबलगि दृढ अभ्यास करे; तिस अकृत्रिम आनंदको प्राप्ति करने हारा मैं गुरु हों; जीव मात्रका मैं परम मित्र हों; ऐसा मित्र अवर कोऊ नहीं हमारी संगति जीवको आनंद प्राप्त करनहारी है; ताते जो कछु मैं कहता हों सो तू कर.

हे रामजी! यह जो संसारके भोग हैं, सो क्षणमात्र हैं; ताते इनको त्याग करहु; और विषयके परिणाममें दुःख अनंत हैं; इनको दुःखरूप जानकर त्याग दे, अरु हम सारिखे ज्ञानवानका संग कर; और हमारे वचनके विचारते तेरे सब दुःख नष्ट हो जायँगे. हे रामजी! जिस पुरुषने हमारे संग प्रीति करी है, तिसको हमने आनंद पदकी प्राप्ति कर दीनी है, जिस आनंदते ब्रह्मादिक आनंदित भये हैं और ज्ञानवानहू आनंदित भये हैं, सो निर्दुःख पदको प्राप्त भये हैं. हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुष सोई है; जाने हमारे साथ प्रीति कीनी है. जिसने संत अरु शास्त्रके विचारद्वारा दृश्यको अदृश्य जाना है, अरु नि-

भय हुवा है. आत्माका प्रमाद जीवको दीन करता है; अज्ञानीका हृदयरूपी कमल तबलग सकुचा रहता है, जबलग तृष्णारूपी रात्रि होती है; जब ज्ञानरूपी सूर्य उदय होता है, तब तृष्णारूपी रात्रि नष्ट हो जाती है; अरु हृदयरूपी कमल, आनंद कर खिलि आते हैं.

हे रामजी! जा पुरुषने परमार्थ मार्गको त्यागा है, अरु संसारका खान पान आदि भोगमें मग्न हुवा है, तिनको तू मेढुक जान, जैसे कीचमें मेढुक परा शब्द करता है, तैसा वह पुरुष है. हे रामजी! यह संसार बडा आपदाका समुद्र है; तामें जो कोऊ श्रेष्ठ पुरुष है, सो सत्संग अरु सत्शास्त्रके विचार करके संसार समुद्र उलंघता है, अरु परमानंदको प्राप्त होताहै, आदि, अंत, मध्य रहित निर्भय पदको प्राप्त होताहै; अरु जो संसार समुद्रके सन्मुख हुवाहै, सो दुःखते दुःखरूप पदको प्राप्त भयाहै, कष्टते कष्ट, नरकते नरकको प्राप्त होताहै. जैसे विषको विष जान तिसका पान करताहै, सो विष उसको नाश करताहै, तैसे जो पुरुष संसार असत्य जानके बहुरि संसारकी ओर यत्न करताहै, सो मृत्युको प्राप्त होताहै. हे रामजी! जो पुरुष आत्मपदते विमुखहै, अरु आत्मपदको कल्याणरूप जानताहै, अरु आत्मपदके अभ्यासका त्यागकर संसारकी ओर धावताहै, सो जैसे किसीके घरमें अग्नि लगी,

अरु तृणका घर, अरु तृणकी शय्या करिकै शयन करताहै,सो जैसे नाशको पावे तैसे जन्म मृत्युको प्राप्त होवहिंगे. और संसारके पदारथ देखकर राग दोषवान हुवेहैं, सो सुख विजुरीका चमका जैसाहै, क्यों जो होयके मिटजावे, स्थिर नहीं रहे तैसा संसारका दुःख आगमापाईहै.

हे रामजी! यह संसार अविचार करके भासताहै; अरु विचार कियेते लीन होजाताहै; विचार कियेते लीन जो नहोता; तो तुमको उपदेश करनेका काम नहीं था; सो तो विचार कियेते लीन होजाताहै, इसी कारणते पुरुषारथ चहिये. जैसे हाथमें दीपक होवे, अरु अंधकूपमें गिरे सो मूर्खताहै तैसे संसारके भ्रमके निवारण हारे गुरु शास्त्र विद्यमानहै; तिनकी शरण नआवे सो मूर्खहै. हे रामजी! जो पुरुष संतकी संगति, अरु सतशास्त्रके विचारद्वारा आत्मपदको पायाहै, सो पुरुष केवल कैवल्य भावको प्राप्त भये; अर्थ यह जो शुद्ध चैतन्यको प्राप्त हुवेहैं अरु संसार भ्रम तिनका निवृत्त होगयाहै.

हे रामजी! यह संसार मनके सुमरणते उपजाहै, सो इसका कल्याण बांधव करके नहीं होनाहै अरु धन करके भी नहीं होनाहै, प्रजा करके भी नहीं होनाहै, अरु तीर्थ अरु देवद्वार करकेभी नहीं होनाहै ऐश्वर्य करके भी नहीं होनाहै, एक मनके जीतनेते कल्याण होताहै.

हे रामजी! जिसको ज्ञानी परमपद कहतेहैं और जिसको रसायन कहतेहैं; जिसके पायेते इसका नाश नहीं होय, अरु अमर होवे, अरु सब सुखकी पूर्णता होवे, इसका साधन समता अरु संतोषहै; इनकर ज्ञान उत्पन्न होताहै सो आत्मज्ञान रूपी एक वृक्षहै, तिसका फूल शांतिहै; अरु स्थिति इसका फलहै; जिस पुरुषको यह ज्ञान प्राप्तहुवाहै, सो शांतिवान हुवाहै; सो निर्लेप रहताहै, तिसको संसारका भावा भावरूप स्पर्श नहीं होताहै. जैसे आकाशमें सूर्य उदय होताहै, तब जगत्‌की क्रिया होतीहै, फिर जब सो अदृश्य होताहै, तब जगत्‌की क्रियाभी लीन होजातीहै; जैसे तिसक्रिया होने नहोनेमें आकाश ज्योंकात्योंहै, तैसे ज्ञानवान सदा निर्लेपहै; तिस आत्मज्ञानकी उत्पत्तिका उपाय यह मेरा श्रेष्ठ शास्त्रहै ॥

हे रामजी! जो पुरुष इस मोक्षोपाय शास्त्रको श्रद्धा संयुक्त पढे अथवा सुने तो वाई दिन सों मोक्षका भागी होय रहे; अरु मोक्षके चार द्वारपालहैं सो मैं तुझको कहता हों; सो इनमेंते एकहू जब अपने वश होय तब मोक्षद्वारमें इसका शीघ्र प्रवेश होवे; सो चारोंका नाम कहों सो सुन.हे रामजी!यह सम इसको परम विश्रामका कारण है; अरु यह संसार जो दिखताहै, सो मरुथलकी नदीवतहै; इसको देखकर मूर्ख अज्ञानीरूपी जो मृगहैं सो

सुखरूपी जल जानकर दौरताहै,अरु शांतिको नहींप्राप्त होता जब समरूपी मेघकी वर्षा होवे, तब सुखी होवे हे रामजी! सम सो परम आनंदहै, अरु सम सो परम पदहै और शिवपद है; जिस पुरुषने सम पाया है सो संसार समुद्रते पार हुवा है; तिसको शत्रु सो मित्र हो जाते हैं. हे रामजी! जब चंद्रका उदय होता है, तब अमृतकी कण फूटती हैं, अरु शीतलता होती है; तैसे जिसके हृदयमें समरूपी चंद्रमा उदय होता है, तिसके सब ताप मिट जाते हैं, अरु परम शांतिवान होते हैं हे रामजी! यह सम देवताके अमृत समान है, वही परम अमृत है; सम करके इसको परम शोभा प्राप्त होती है; जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाकी कांति परम उज्ज्वल होती है, तैसे समको पायके उसकी उज्ज्वल कांति होती है. जैसे विष्णुके दो हृदय हैं, सो एकतो अपने शरीरमें है, दूसरा संतमें है; तैसे इसके दो हृदय होते हैं; एक अपने शरीरमें, दूसरा सम भी इनका हृदय होता है; ऐसा आनंद अमृतके पान कियेते हू नहीं होता, अरु लक्ष्मी की प्राप्तिते भी नहीं होता; जो आनंद समवानको होता है.

हे रामजी! प्राणहूते भी प्रिय कोई होवे, सो अंतर्ध्यान कर फिर प्राप्त होवे, तैसा आनंद नहीं होवे, ऐसा आनंद समवानको होवे. तिसके दर्शन करभी आ-

नंद प्राप्त होता है. अरु ऐसा आनंद राजाको भी नहीं होता, जो बाहरते श्रेष्ठ मंत्री होता है, अरु अंतरते सुंदर स्त्रियां होती हैं, तिनकर भी ऐसा आनंद नहीं होता, जैसा आनंद सम संपन्न पुरुषको होता है. हे रामजी! जिस पुरुषको समकी प्राप्ति भई है, सो वंदना करने योग्य है, अरु पूजने योग्य है; जिसको समकी प्राप्ति भई है, तिसको उद्वेग नहीं आवे, अरु लोकहूते उद्वेग नहीं पावे, उसकी क्रिया अमृत समान है, अरु वचन भी उसके अमृतकी नाईं मीठे हैं; जैसे चंद्रमाकी किरन शीतल अरु अमृतरूप है; सो सबको हृदयाराम है, तैसे संत जनके वचन हैं; जिस पुरुषको समकी प्राप्ति भई है, तिसकी संगति जब इस जीवको प्राप्त होती है, तब सब परम आनंदित होते हैं.

हे रामजी! जैसे बालक माताको पायके आनंदित होता है, तैसे जिसको समकी प्राप्ति भई है; तिसका संगकर जीव अधिक आनंदवान होता है. जैसे किसीका बांधव मुवा हुआ फिर आवे, और इसको आनंद प्राप्त होवे, तिसते भी अधिक आनंद सम संपन्न पुरुषको पायके होता है. हे रामजी! ऐसा आनंद चक्रवर्ती राज्यके पायेते भी तिसको नहीं होता, अरु त्रिलोकीका राज्य पायेते भी नहीं होता. जिसको समकी प्राप्ति भई है तिसके शत्रु भी मित्र हो जाते हैं, तिसकर कछु भयभीत

नहीं होता अरु सर्पका भय भी तिसको नहीं रहता; सिं-
हका भय भी तिसको नहीं रहता; औरहू किसका भय
नहीं रहता;सदा निर्भय शांतरूप रहता है.हे रामजी! जो
कोऊ कष्ट आय प्राप्त होवे, और कालकी अग्नि आय
लगे, तौ भी सो चलायमान नहीं होता, सदा शांति-
रूप रहते हैं; जैसे शीतल चांदनी चंद्रमामें स्थित है,
तैसे जो कछु शुभ गुण अरु संपदा हैं, सो सब समवानके
हृदयमें आय स्थित होत हैं.

हे रामजी! जो पुरुष अध्यात्मकादि तापकर जल-
ता है, तिसको हृदयमें समकी प्राप्ति होवे, तब ताप मिट
जाते हैं. जैसे तप्त पृथ्वी वर्षा करके शीतल होजाती है,
तैसे उसका हृदय शीतल होजाता है. जिसको समकी
प्राप्ति भई है, सो सब क्रियामें आनंद रूप है, तिसको
[illegible] ता; जैसे वज्र शिलाको बाण
[illegible] रुषने समरूपी कवच पहिरा
है, तिनको अध्यात्मकादि ताप बेध नहीं सकता; वह
सर्वदा शीतलरूप रहता है.

हे रामजी! तपस्वी, पंडित, याज्ञिक, धनाढ्य सो,
पूजा, मान करने योग्य है, परंतु जिसको समकी प्राप्ति
भई है सो सबसे उत्तम है. सो सबको पूजने योग्य है;
उसके मनकी वृत्ति आत्मतत्त्वको ग्रहण करती है; अरु
सब क्रियामें सोभत है. जिस पुरुषको शब्द, स्पर्श, रूप,

रस, गंध, यह इंद्रियके विषय इष्ट अनिष्टमें राग दोष नहीं होता, तिसको शांतात्मा कहत हैं. हे रामजी! जो संसारके रमणीय पदार्थमें बध्यमान नहीं होता, अरु आत्मानंद कर पूर्ण है, तिसको शांतिवान कहते हैं; वाको संसारके शुभ अशुभ कर मलीनपना नहीं लगता; सदा निर्लेप रहता है. जैसे आकाश सब पदारथते निर्लेप है, तैसे शांतिवान सदा निर्लेप रहता है. हे रामजी! ऐसा जो पुरुष है सो इष्ट विषयकी प्राप्तिमें हर्षवान होते नहीं; अरु अनिष्ट विषेकी प्राप्तिमें शोकवान होते नहीं; अरु अंतरते सदा शांत रहते हैं; उसको कोऊ दुःख स्पर्श नहीं करता; अपने आपमें सदा परमानंदरूप रहता है; जैसे सूर्यके उदय हुवे अंधकार नष्ट हो जाता है; तैसे शांतिके पाये सर्व दुःख नष्ट हो जाता है; सदा निर्विकार रहते हैं.

हे रामजी! सो पुरुष सब चेष्टा करते दृष्टि आते हैं, परंतु सदा निर्गुणरूप हैं; कोऊ क्रिया उनको स्पर्श नहीं करती. जैसे जलमें कमल निर्लेप रहता है; तैसे शांतिवान सदा निर्लेप रहता है. हे रामजी! जो पुरुष बडे राज संपदाको पायकर अरु बडी आपदाको पायकर ज्योंका त्यों अलग रहता है, सो शांतिवान कहिये. हे रामजी! जो पुरुष शांतिते रहित है, तिसका चित्त क्षण क्षण राग दोषकर तपता है; अरु जिसको शांतिकी प्राप्ति

भई है, सो अंतर बाहिर शीतल है; अरु सदा एकरस है; जैसे हिमालय सदा शीतल रहता है, तैसे वह सदा शीतल रहता है. वाके मुखकी कांति बहुत सुंदर हो जाती है; जैसे निष्कलंक चंद्रमा होवे, तैसे शांतिवान पुरुष निष्कलंक रहता है. हे रामजी! जिसको शांति प्राप्त भई है, सो परम आनंदित हुवे हैं; परम लाभ तिसको प्राप्त होत है. ज्ञानी इसीको परमपद कहते हैं जिसको पुरुषार्थ करना है, तिसको शांतिकी प्राप्ति करनी चाहिये. हे रामजी! जैसे मैंने कहा है, तिस क्रम करके शांतिका ग्रहण करो, तब संसार समुद्रके पार पहुंचोगे.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे सम निरूपणं नाम त्रयोदशः सर्गः ॥ १३ ॥

चतुर्दशः सर्गः १४

अथ विचार वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! अब विचारका निरूपण सुन जब हृदय शुद्ध होता है, तब विचार होता है; अरु शास्त्रार्थ विचारद्वारा बुद्धि तीक्ष्ण होती है. हे रामजी! अज्ञानरूपी जो वन है, तिसमें आपदारूपी बेलिकी उत्पत्ति होती है; तिसको विचाररूपी खड्ग करके काटेगा, तब शांत आत्मा होवेगा; अरु मोहरूपी हस्ती है, सो जी-

वका हृदय कमलका खंड खंड कर डारता है अभिप्राय यह जो इष्ट अनिष्ट पदार्थ में राग दोषकर छेदा जाता नहीं; जब विचार रूपी सिंह प्रगटे तब मोहरूपी हस्तीका नाश करे; फिर शांतात्मा होवे.

हे रामजी! जिसको कछु सिद्धता प्राप्त हुई है, सो विचार अरु पुरुषार्थ कर भई है; जो राजा होता है, सो प्रथम विचार कर पुरुषार्थ करता है; तिसकर राज्यको प्राप्त होता है. बल, बुद्धि अरु तेज चतुर्थ जो पदार्थका आगमन, अरु पंचम पदार्थकी प्राप्ति होती है, सो पांचोंकी प्राप्ति विचारकर होती है. अर्थ यह जो इंद्रियोंका जीतना; अरु बुद्धि सो आत्मा व्यापिनी, अरु तेज पदार्थका; आगमन इनकी प्राप्ति विचारसों होती है. हे रामजी! जिस पुरुषने विचारका आश्रय लियाहै, सो विचारकी दृढता करके जिसकी वांछा करतेहैं, तिसको पावतेहैं; ताते विचार इसका परम मित्रहै. जो विचारवान पुरुषहै, सो आपदामें मग्न नहीं होता; जैसे तुंबी जलमें डुबत नाहीं, तैसे वह आपदामें डुबत नहीं. हे रामजी! वह विचार संयुक्त जो करताहै, देताहै, लेताहै, सो सब क्रिया सिद्धताका कारणरूप होतीहै. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष विचारकी दृढता करके सिद्ध होतेहैं; विचाररूपी कल्पवृक्षहै, तिसमें जिसका अभ्यास होताहै सोई पदारथकी सिद्धिको पाताहै.

हे रामजी! शुद्ध ब्रह्मका विचार गृहणकर, आत्मज्ञानको प्राप्त होहु; जैसे दीपकसोंकर पदारथका ज्ञान होताहै, तैसे पुरुष विचारसों कर सत्य असत्यको जानताहै. असत्यको त्यागकर सत्यकी ओर यत्न कियाहै, तिनको विचारवान कहतेहैं. हे रामजी! संसाररूपी समुद्रविषे आपदारूपी तरंग चलतेहैं, जो विचारवान पुरुषहै, सो संसारके भाव अभावमें कष्टवान नहीं होताहै. जो कछु विचार संयुक्त क्रिया होतीहै. तिसका परिणाम सुखहै;जो विचार बिन चेष्टा होतीहै,तिसकर दुःख प्राप्त होताहै. हे रामजी! अविचार रूपी कंटक वृक्षहै, तिसते दुःखरूपी कंटक पडे उत्पन्न होतेहैं; अरु अविचाररूपी रात्रिहै तिसमें तृष्णारूपी पिशाचनी आय विचरतीहै. जब विचार रूपी सूर्य उदय होताहै तब अविचार रूपी रात्रि अरु तृष्णारूपी पिशाचनी नष्ट होजातीहै.

हे रामजी हमारा यही आशीर्वादहै, कि तुम्हारे हृदयसों अविचाररूपी रात्रि नष्टहोहु. विचाररूपी सूर्य करके अविचारित संसार दुःखका नाश होताहै; जैसे बालक अविचार करके अपनी परछैयाको बैताल कल्पके भयको पाताहै, अरु विचार कियेते भय नष्ट होजाताहै; तैसे अविचार करके संसार, दुःखको देताहै, और सतशास्त्रको युक्तिकर विचार कियेते संसार भय नष्ट हो जाताहै. हे रामजी! जहां विचारहै; तहां दुःख नहींहै;

जैसे जहां प्रकाश होताहै तहां अंधकार नहीं रहताहै जहां प्रकाश नहीं तहां अंधकार रहताहै; तैसे जहां विचारहै, तहां संसार भय नहींहै, अरु जहां विचार नहीं, तहां संसार भय रहताहै; अरु जहां आत्मविचार होताहै, तहां सुखको देनहारे शुभगुण आय स्थित होतेहैं, जैसे मानसरोवरमें कमलकी उत्पत्ति होतीहै, तैसे विचारमें शुभ गुणकी उत्पत्ति होतीहै. जहां विचार नहीं तहां दुःखका आगमन होताहै.

हे रामजी! जो कछु अविचारकर क्रिया करतेहैं, सो दुःखका कारण होताहै. जैसे चूहा बिलको खोदके मृत्तिका निकासताहै. सो जहां इकट्ठी होतीहै, तहां बेलिकी उत्पत्ति होतीहै; तैसे अविचार कर यह पुरुष मृत्तिकारूपी पाप क्रियाको इकट्ठी करताहै तिसते आपदारूपी बेलि उत्पन्न होतीहै,अरु अविचाररूपी घुनका खाया सूखा वृक्षहै, तिसको सुखरूपी फल चाहतेहैं, तेऊ नहीं निकसतेहैं सो अविचार किसका नामहै, जिस करके शुभक्रिया नहोवे; अरु जिसकर शास्त्रानुसार क्रिया नहोवे, तिसका नाम अविचारहै.

हे रामजी! विवेकरूपी राजाहै, अरु विचाररूपी प्रजाहै, जहां विवेकरूपी राजा आताहै, तहां विचाररूपी प्रजा तिनके साथ फिरतीहै; अरु जहां विचाररूपी प्रजा आतीहै;तहां विवेकरूपी राजाभी आताहै.जो पुरुष

विचार करकै संपन्नहै, सो पूजने योग्यहै तिसको सब कोऊ नमस्कार करतेहैं; जैसे द्वितीयाके चंद्रमाको सब नमस्कार करतेहैं, तैसे विचारवानको सब नमस्कार करते हैं. हे रामजी! हमारे देखत देखत अल्प बुद्धिहू विचारकी दृढताते मोक्षपदको प्राप्त भये हैं; ताते विचार सबका परममित्र है. विचारवाला पुरुष अंतर बाहिर शीतल रहते हैं; जैसे हिमालय पर्वत अंतर बाहिर शीतल रहता है, तैसे वह भी शीतल रहता है. देख! विचार करके ऐसे पदको प्राप्त होता है. जो पद नित्य है, अरु स्वच्छ है, अनंत है, परमानंदरूप है, तिसको पायकर तिसके त्यागकी इच्छा होती नहीं, औरके गृहणकी इच्छा नहीं होती है; उनको इष्ट अनिष्ट विषे सब समान है, जैसे तरंगके होनेमें अरु लीन होनेमें समुद्र समान रहता है, तैसे विवेकी पुरुषको इष्ट अनिष्ट विषे समता रहती है, अरु संसार भ्रम मिट जाता है; आधारा धेयते रहित केवळ अद्वैत तत्त्व उसको प्राप्त होता है.

हे रामजी! यह जगत् अपने मनके मोहते उपजता है, अरु अविचार कर दुःखदायी दिखता है,जैसे अविचार करके बालकको वैताल भासता है, तैसे इसको जगत् भासता है; जब ब्रह्म विचारकी प्राप्ति होवे, तब जगत् भ्रम नष्ट होजावे. हे रामजी! जिसके हृदयमें

विचार होता है, तहां समताकी उत्पत्ति होती है. जैसे बीजते अंकुर निकस आता है, तैसे विचारते समता होय आती है; अरु विचारवान पुरुष जिसकी ओर देखता है, तिस ओर आनंद दृष्टि आता है; दुःख कोऊ नहीं भासता है. जैसे सूर्यको अंधकार दृष्टि नहीं आता, तैसे विचारवानको दुःख दृष्टिमें नहीं आता; जहां अविचार है तहां दुःख है; जहां विचार है तहां सुख है; जैसे अंधकारके अभाव हुवे बैतालके भयका अभाव हो जाता है तैसे विचार कियेते दुःखका अभाव हो जाता है.

हे रामजी! संसाररूपी दीर्घ रोग है; तिसका नाश करनेका विचार बडा औषध है. जिसको विचारकी प्राप्ति भई है, तिसके मुखकी कांति उज्ज्वल हो जाती है; जैसे पूर्णमासीके चंद्रमाकी उज्ज्वल कांति होती है, तैसी विचारवानके मुखकी उज्ज्वल कांति होती है. हे रामजी! विचार करके इसको परमपदकी प्राप्ति होती है; जिस करि अर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम विचार है; अरु जिस करि अनर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम अविचार है अविचार रूपी मदिरा है; जो इसका पान करता है सो उन्मत्त हो जाता है, तिसते शुभ विचार कोऊ नहीं हो आवता शास्त्रके अनुसार जो कछु क्रिया है, सो ताते नहीं होती; ताते अविचार करि अर्थ सिद्धि नहीं होता.

हे रामजी! इच्छा रूपी रोग है, सो विचार रूपी

औषध करकें निवृत्त होता है. जिन पुरुषने विचार द्वारा परमार्थ सत्ताका आश्रय लिया है, सो परम शांत होजाता है; अरु हेय उपादेय बुद्धि तिसकी नहीं रहती; सब दृश्यको साक्षीभूत होकर देखता है; अरु संसारके भाव अभाव विषे ज्योंका त्यों रहता है; अरु उदय अस्तते रहित निःसंगरूप है. जैसे समुद्र जलकरि पूर्ण

विचारवान आत्मतत्त्व करि पूर्ण

प विषे परा हुवा हस्तके बल करि निकसता है, तैसे संसाररूपी अंध कूपमें गिरा हुवा, विचारके आश्रय होकर विचारवान पुरुष; निकसनेको समर्थ होता है.

हे रामजी! राजाओंको जो कोऊ कष्ट आय प्राप्त होता है, तब वह विचार करके यत्न करते हैं; तब कष्ट निवृत्त हो जाता है,ताते तू विचार कर देख कि किसीको कष्ट प्राप्त होता है, सो विचारते मिटता है, तुम भी विचारका आश्रय करके सिद्धिको प्राप्त होहु; सो विचार इस कर प्राप्त होता है, जो वेद अरु वेदांतके सिद्धांतको श्रवण कर, पाठकर, भले प्रकार विचारेगा, तब विचारकी दृढता कर आत्मतत्त्वको प्राप्त होवेगा. जैसे प्रकाश कर पदार्थका ज्ञान होता है, तैसे गुरु अरु शास्त्रके वचन कर तत्त्वज्ञान होता है. जैसे प्रकाशमें अंधको पदारथकी प्राप्ति नहीं होती है, तैसे गुरु अरु शास्त्रसों जो विचार शून्य होवे तिसको आत्मप-

दकी प्राप्ति नहीं होती. हे रामजी ! जो विचाररूपी नेत्र-कर संपन्न है, सोई देखते हैं; अरु विचाररूपी नेत्रते जो रहित हैं सो अंध हैं.

हे रामजी ! ऐसा विचार कर, कि मैं कौनहूं, अरु यह जगत् कौन है; अरु इसकी उत्पत्ति कैसी हुई है; अरु लीन कैसे होता है; इस प्रकार संत अरु शास्त्रके अनु-सार विचार कर. सत्यको सत्य जान, अरु असत्यको असत्य जान. जिसको असत्य जाना है, तिसका त्याग कर, अरु सत्यमें स्थित होय इसीका नाम विचार है; इस विचार कर आत्मपदकी प्राप्ति होतीहै हे रामजी ! वि-चाररूपी दिव्यदृष्टि जिसको प्राप्त भई है, तिसको सब प-दारथका ज्ञान होता है; विचारसों आत्मपदकी प्राप्ति होती है, तिसको पायेते परिपूर्ण होता है फिर शुभ अ-शुभ संसारमें चलायमान नहीं होता, ज्योंका त्यों रहता है. जब लग प्रारब्ध वेग होता है, तब लग शरीरकी चे-ष्टा होती है; जब लग अपनी इच्छा होवे, तब लग शरीर-की चेष्टा करै; बहुरि शरीरको त्याग कर केवल शुद्ध रूप हो जाता है; ताते,

हे रामजी ! ब्रह्मविचारको आश्रय कर, संसार समु-द्रको तर जा. जो कोऊ रोगी होता है, सो एता रुदन नहीं करता, जेता रुदन विचार रहित पुरुष करता है, जिसको कष्ट प्राप्त होता है, सो भी एता रुदन नहीं कर-

ता. हे रामजी! जो पुरुष विचारते शून्य है, तिसको सब आपदा आय प्राप्त होती हैं; जैसे सब नदी स्वभावसों समुद्रमें आय प्रवेश करती हैं, तैसे अविचारमें सब आपदा आय प्रवेश करती हैं. हे रामजी! कीचका कीट होना सो भला है, अरु गर्त्तका कंटक होना सो भी भला है, अरु आंधरे बिलमें सर्प होना सो भला है, परंतु विचारते रहित होना सो भला नहीं. जो पुरुष विचारते रहित है, अरु भोगमें दौरता है, सो श्वान है.

हे रामजी! विचारते रहित पुरुष बडे कष्टको पाता है, ताते एक क्षणहू विचारते रहित नहीं रहना; विचार सों दृढ होकर निर्भय रहना; कि मैं कौन हों, अरु दृश्य क्या है, ऐसा विचार करके सत्यरूप आत्माको ज्ञानकर दृश्यका त्याग करना. हे रामजी! जो पुरुष विचार वान है, सो संसार भोगमें नहीं गिर जाता, अरु सत्यमें स्थित होता है; विचार जब स्थिर होता है, तब तिसते तत्त्वज्ञान होता है; तब तत्त्वज्ञानते विश्राम होता है; विश्रामते चित्तका उपसम होता है, अरु चित्तके उपसमते सब दुःख नाश होते हैं.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे विचार निरूपणं नाम चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

पंचदशः सर्गः १५

अथ संतोष वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे अविचार शत्रुके नाश कर्त्ता, रामजी! जिस पुरुषको संतोष प्राप्त भया है, सो परम आनंदित हुवा है. अरु त्रिलोकीका ऐश्वर्य उसको तृणकी नाईं तुच्छ भासता है. हे रामजी! जो आनंद अमृतपान कियेते नहीं होता; और जो आनंद त्रिलोकीके राज्यकर नहीं होता, तैसा आनंद संतोषवानको होता है. हे रामजी! इच्छारूपी रात्रि है, अरु सो हृदयरूपी कमलको सकुचाय देती है; और जब संतोष रूपी सूर्य उदय होता है, तब इच्छारूपी रात्रिका अभाव हो जाता है. जैसे क्षीर समुद्र उज्ज्वलता करके सोभता है, तैसे संतोषवानकी कांति सुशोभित होती है.

हे रामजी! त्रिलोकीके राजाकी इच्छा निवृत्त न भई, तब सो दरिद्रीहै, अरु जो निर्धनहै और संतोषवानहै, सो सबका ईश्वरहै. संतोष तिसकाई नामहै, श्रवण करि- जो अप्राप्त वस्तुकी इच्छा नकरै, अरु प्राप्त होइ इष्ट अनिष्टमें राग दोष नधरे, इसका नाम संतोषहै; संतोष सोई परमपदहै. संतोषवान पुरुष सदा आनंद रूपहै; अरु आत्मास्थितिसों तृप्तहुवाहै, तिसको और इच्छा कछु नहीं स्फुरती. अरु संतुष्टता कर तिसका हृ-

दय प्रफुल्लित हुवाहै, जैसे सूर्यके उदयहुवे सूर्यमुखी कमल प्रफुल्लित होताहै, तैसे संतोषवान प्रफुल्लित होजाताहै. जो अप्राप्त वस्तुहै तिनकी इच्छा नहीं करता; अरु जो अनिच्छित प्राप्त भईहै, तिसको यथाशास्त्र क्रम करके गृहण करताहै, तिसका नाम संतोषवानहै. पूर्णमासीका चंद्रमा अमृत कर पूर्ण होताहै, तैसे संतोषवानका हृदय संतुष्टता करके पूर्ण होताहै; अरु जो संतोषते रहितहै, तिसके हृदयरूपी वनमें सदा दुःख अरु चिंतारूपी फूल फल उत्पन्न होतेईहैं.

हे रामजी! जिसका चित्त संतोषते रहितहै, तिसको नाना प्रकारकी इच्छा समुद्रम नानाप्रकारक तरंग होतेहैं, तैसे उपजतीहैं. संतुष्टात्मा परम आनंदितहै, तिसको जगत्के पदारथमें हेयोपादेय बुद्धि नहीं होती. हे रामजी! जैसा आनंद संतोषवानको होताहै, तैसा आनंद अष्टसिद्धिके ऐश्वर्य करके भी नहीं होता. अरु अमृतके पान कियेते भी नहीं होता संतोषवान् सदा शांतिरूपहै, और सदा निर्मल रहताहै. इच्छारूपी सर्वदा उडती थी सो संतोषरूपी वर्षाकर शांत होगई। तिस कारणते संतोषवान निर्मलहै.

हे रामजी! संतोषवान पुरुष सबको प्यारा लगता है. जैसे आंबका परिपक्क फल सुंदर होताहै, अरु सबको प्यारा लगताहै,तैसा संतोषवान पुरुष सबको प्यारा लग-

ताहै; अरु स्तुति करने योग्यहै; जिस पुरुषको संतोष प्राप्त भयाहै, तिसको परमलाभ भयाहै. हे रामजी! जहां संतोषहै, तहां इच्छा नहीं रहतीहै; अरु संतोषवान भोगमें दीन होकर नहीं रहता; वह उदारात्माहै; सर्वदा आनंदकर तृप्त रहताहै. जैसे मेघ पवनके आयेते नष्ट होजाताहै, तैसे संतोषके आयेते इच्छा नष्ट होजातीहै; अरु जो संतोषवान पुरुषहै; तिसको देवता, ऋषीश्वर, सब नमस्कार करतेहैं, अरु धन्य धन्य कहतेहैं. हे रामजी! जब इस संतोषको धरेगा, तब परम शोभा पावेगा.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे संतोष निरूपणं नाम पंचदशः सर्गः ॥ १५ ॥

षोडशः सर्गः १६

अथ साधुसंग वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! और जेते कछु दान तीर्थादिक साधनहैं, तिनकर आत्मपदकी प्राप्ति नहीं होती; साधु संगकर आत्मपदकी प्राप्ति होतीहै; साधु संगरूपी एक वृक्षहै, तिसका फूल आत्मज्ञानहै. जिस पुरुषने फूलकी इच्छा करीहै, सो अनुभवरूपी फलको पाताहै. हे रामजी! जो पुरुष आत्मानंदते रहितहै, सो सत संगकर आत्मानंदसों पूर्ण होतेहैं; अरु अज्ञान करके जो

मृत्युको पाताहै सो संतके संगते ज्ञान पायकर अमर होताहै;अरु जो आपदा करके दुःखीहै,सो संतके संगकर संपदाको पाताहै;आपदारूपी कमलका नाश करनहारा सत्संगरूपी बर्फकी वर्षाहै, सतसंगसों कर आत्मबुद्धि प्राप्त होतीहै, तिसकर मृत्युते रहित होताहै; और सब दुःखते रहित होताहै; अरु परमानंदको प्राप्त होताहै.

हे रामजी! संतकी संगतिकर इसके हृदयमें ज्ञानरूपी दीपक जलता है, तिसकर अज्ञानरूपी तम नष्ट हो जाता है; अरु बडे ऐश्वर्यको प्राप्त होता है; बहुरि किसी भोग पदारथकी इच्छा नहीं रहती, अरु बोधवान होता है; सबते उत्तम पदमें विराजता है; जैसे कल्पवृक्षके निकट गयेते वांछित फलकी प्राप्ति होती तैसे संसार समुद्रके पार उतारन हारे संतजन धीवर नौका करके पार लगता है, तैसे संतजन युक्ति करके संसार समुद्रते पार करते हैं अरु मोहरूपी मेघका नाश करनहारा संतका संग है सो पवन है; जिनको देहादिक अनात्मसों स्नेह नष्ट भया है, अरु शुद्ध आत्मा विषे जाकी स्थिति है, तिसकर तृप्त भये हैं, बहुरि संसारके इष्ट अनिष्टते जाकी चलायमान बुद्धि नहीं होती, सदा समता भावमें स्थित रहे हैं; ऐसे संसार समुद्रके पार उतारनेमें फूल जैसे, अरु आपदा रूपी वेलिको जड समेत नाश करन हारे हैं.

हे रामजी ! संत जन प्रकाशरूप हैं; तिनके संगते पदारथकी प्राप्ति होती है, अरु जो अपने पुरुषार्थरूपी नेत्रते हीन हुवे हैं, इसको पदारथकी प्राप्ति नहीं होती जिन पुरुषने सत्संगका त्याग किया है, सो नरक रूपी अग्निमें लकडीकी नांई जरेंगे; अरु जिन पुरुषने सत्संग किया है, तिनको नरकरूपी अग्निका नाश करनहारा सत्संगरूपी मेघ है. हे रामजी ! सत्संगरूपी गंगा है; जाने सत्संगरूपी गंगाका स्नान किया, ताको बहुरि तप, दान, आदि साधनका प्रयोजन नहीं; वह सत्संग करके परमगतिको प्राप्त होनेका है, ताते अवर सब उपाय त्याग कर सत्संगको खोजना. जैसे निर्धन चिंतामणि आदिक धनको खोजता है, तैसे मुमुक्षु सत्संगको खोजता है; अध्यात्मकादि तीन तापसों जलता है, तिसको शीतल करने हारा सत्संग है. जैसे तपी हुई पृथ्वी मेघकर शीतल होती है, तैसे सत्संगकर हृदय शीतल होता है.

हे रामजी ! मोहरूपी वृक्षका नाश करनहारा सत्संगरूप कुहाडा है; सत्संग करके यह पुरुष अविनाशी पदको प्राप्त होता है; जिस पदके पायेते और पावनेकी इच्छा नहीं रहती; ऐसा सबते उत्तम सत्संग है. जैसे सब अप्सरानते लक्ष्मी उत्तम हैं, तैसे सत्संग कर्त्ता सबते उत्तम है; ताते अपने कल्याणके निमित्त सत्संग क-

रना तुमको योग्य है. हे रामजी! यह जो चारों मोक्षके द्वारपाल हैं, सो तुझको कहे; जो पुरुषने इनके साथ प्रीति करी है, सो शीघ्र आत्मपदको प्राप्त होहिंगे. और जो इनकी सेवा नहीं करते, सो मोक्षको प्राप्त नहीं होते. हे रामजी! इन चारोंमेंते एकहू जहां आता है, तहां तीनों औरहू आय जाते हैं; जहां समुद्र रहता है, तहां सब नदी आय जाती हैं; तैसे जहां सम आता है तहां संतोष, विचार, अरु सत्संग ये तीनों आय जाते हैं; जहां साधु संगम होता है, तहां संतोष, विचार, अरु सम ये तीनो आय जाते हैं; जहां कल्पवृक्ष रहता है तहां सब पदारथ आय स्थित होते हैं; अरु जहां संतोष आता है, तहां सम, विचार, सत्संग, ये तीनों आय जाते हैं. जैसे पूर्णमासीके चंद्रमामें गुण कला सब इकट्ठी हो जाती हैं, तैसे जहां संतोष आता है, तहां और तीनो आय जाते हैं; अरु जहां विचार आता है, तहां संतोष, उपसम, अरु सत्संग, ये आय रहते हैं. जैसे श्रेष्ठ मंत्रीसों कर राज्य लक्ष्मी आय स्थित होती है, तैसे जहां विचार होता है, तहां और भी तीनो आते हैं; ताते, हे रामजी! जहां चारो इकट्ठे होते हैं, तहां परम श्रेष्ठ जानना; ताते हे रामजी! चारों न होहिं, तो एकका तो अवश्य आश्रय करना; जब एक आवेगा, तब चारों आय

स्थित होवेंगे. मोक्षकी प्राप्ति होनेके यह चार परम साधन हैं; और उपायसों मुक्ति होनेकी नहीं.

श्लोक

संतोषः परमो लाभः सत्संगः परमं धनं ॥
विचारः परमं ज्ञानं शमश्च परमं सुखं ॥ १ ॥

हे रामजी! यह परम कल्याण कर्त्ता,सो इन चारों करि संपन्न है, तिसकी ब्रह्मादिक स्तुति करते हैं; ताते दंतको दंत लगाय इनका आश्रय करके मनको वश कर ले.

हे रामजी! मनरूपी हस्ती विचाररूपी अंकुश करके वश होता है, अरु मनरूपी वनमें वासनारूपी नदी चलती है, तिसके शुभ अशुभ दो किनारे हैं; अरु पुरुषार्थ करना यह है- कि अशुभकी ओरते रोकके शुभकी ओर चलावना; जब अंतर्मुख आत्माके सन्मुख वृत्तिका प्रवाह होवेगा, तब तू परमपदको प्राप्त होवेगा. हे रामजी! प्रथम तो पुरुषार्थ करना यही है कि अविचाररूपी उँचाईको दूर करना; जब अविचार रूपी बेट दूर होवेगा, तब आपही प्रवाह चलेगा. हे रामजी! दृश्यकी ओर जो प्रवाह चलता है, सो बंधनका कारण है; जब आत्माकी ओर अंतर्मुख प्रवाह होवे, तब मोक्षका कारण होय जाय; आगे जो तेरी इच्छा होवे सो कर,

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे साधु संग निरूपणं नाम षोडशः सर्गः ॥ १ ॥

सप्तदशः सर्गः १७

अथ षट् प्रकरण वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! यह मेरे वचन हैं सो परम पावन हैं; जो विचारवान शुद्ध अधिकारी है, तिसको यह वचन परम बोधका कारण हैं; जो पुरुष शुद्ध पात्र है, सो यह वचनको पायके सोभत है; और वचनहू उनको पायके शोभा पाते हैं, जैसे मेघके अभावते शरद्कालमें चंद्रमा अरु आकाश सोभते हैं, तैसे शुद्ध पात्रमें यह वचन शोभते हैं अरु जिज्ञासु निर्मल वचनकी महिमा सुनके प्रसन्न होता है.

हे रामजी! तुम परम पात्र हो, अरु मेरे वचन परम उत्तम हैं; यह महा रामायण मोक्षोपायक शास्त्र है, सो आत्मबोधका परम कारण है; अरु परम पावन वाक्यकी सिद्धता है; अरु युक्ति युक्तार्थ वाक्य है; अरु नानाप्रकारके दृष्टांत कहे हैं जिनके बहुत जन्मके पुण्य आय इकट्ठे होते हैं, तिनको कल्पवृक्ष मिलता है, सो फल कर झुक पडता है; तब तिनको यह शास्त्र श्रवण होता है; अरु नीचको इनका श्रवण प्राप्त नहीं होता है, उसकी वृत्ति इनके श्रवणमें नहीं आती है; जैसे धर्मात्मा राजाकी इच्छा न्याय शास्त्रके श्रवणमें होती है, अरु जो पापात्मा राजा है, तिसकी इच्छा नहीं होती हे रामजी!

तैसे पुण्यवानकी इच्छा इसके श्रवणमें होती है; अरु अधमकी इच्छा नहीं होती; जो कोई मोक्षोपायक इस रामायणका अध्ययन करैगा, अथवा निष्काम संतके मुखते श्रद्धायुक्त श्रवण करेगा अरु आदिते लेकर अंत पर्यंत एकत्र भाव होकर विचारेगा, तब तिसका संसार भ्रम निवृत्त हो जावेगा. जैसे जेवरीके जाननेते सर्पका भ्रम दूर हो जाता है, तैसे अद्वैतात्मतत्त्वके जाननेते तिसका संसार भ्रम नष्ट हो जावेगा. सो.

इस मोक्षोपायक शास्त्रके बत्तिस सहस्र श्लोक हैं, अरु षट प्रकरण हैं.

प्रथम वैराग्य प्रकरण है, सो वैराग्यका परम कारण है. हे रामजी! मरुथलमें वृक्ष नहीं होता, परंतु बडी वर्षा होवे तब तहां वृक्ष होता है; तैसे अज्ञानीका हृदय मरुथलकी नाईं है, तिसमें वैराग्यरूपी वृक्ष नहीं होता, परंतु यह शास्त्ररूपी जो बडी वर्षा होवे, तिसकर वैराग्यरूपी वृक्ष उत्पन्न होता है; तिनके एक सहस्र पांचसौ श्लोक हैं; तिनके अनंतर,

मुमुक्षु व्यवहार प्रकरण है, तिसमें परम निर्मल वचन हैं. तिस करके मलीन मणि हुई ताका मार्जन कियेते उज्ज्वल हो आती है; तैसे यह वचनते मुमुक्षुका हृदय निर्मल होता है; अरु विचारके बलते आत्मपद पा-

नेको समर्थ होता है. तिसके एक सहस्र श्लोक हैं; तिनके अनंतर,

उत्पत्ति प्रकरणहै; तिसके पंच सहस्र श्लोकहैं; तिसमें बडी सुंदर कथा दृष्टांत सहित कहीहै, जिस विचारते जगत्का सत्यता भाव मनते चलायमान रहताहै; अर्थ यह जो जगत्का अत्यंत अभाव जान परताहै. हे रामजी ! यह जगत्में जो मनुष्य, देवता, दैत्य, पर्वत, नदी, आदि स्वर्गलोक पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, आदि स्थावर जंगम भासताहै सो अज्ञान करकेहै; अरु इसकी उत्पत्ति कैसे भईहै; जैसे जेवरीमें सर्प होताहै, अरु छीपमें रूपा होताहै, अरु सूर्यके किरनमें जल दिखताहै; आकाशमें तरुवर दिखताहै; और जैसे दूसरा चंद्रमा दीखताहै; जैसे गंधर्व नगर भासतेहैं; मनोराजकी सृष्टि भासतीहै; अरु संकल्पपुर होताहै, अरु सुवर्णमें भूषण होताहै; समुद्रमें तरंग होताहै; आकाशमें नीलता दिखतीहै; जैसे नौकामें बैठते किनारेके वृक्ष पर्वत चलते दृष्टि आतेहैं, अरु बादरके चलेते चंद्रमा धावता दिखताहै, और थंभमें पूतरी भासतीहै, भविष्यत नगरते आदि लेकर असत्य पदारथ जैसे सत्य भासतेहैं, तैसे सब जगत् आकाशरूपहै; अज्ञान करके अर्थाकार भासताहै सो अज्ञान करके उत्पत्ति देखतीहै, अरु ज्ञान करके लीन होजाताहै. जैसे निद्रामें स्वप्न

सृष्टिकी उत्पत्ति होतीहै, अरु जागेते निवृत्त होजातीहै; तैसे अविद्या करके जगत्‌की उत्पत्ति होतीहै; अरु सम्यक् ज्ञान करके निवृत्त होजाताहै; सो अविद्या कछु वस्तुहू नहीं, सर्व ब्रह्म चिदाकाशरूपहै; सो शुद्धहै, अनंतहै; परमानंद स्वरूपहै; तिसमें न जगत् उपजताहै, न लीन होताहै; ज्योंकी त्यों आत्मसत्ता अपने आप विषे स्थितहै; तिसमें जगत् ऐसाहै जैसे भीतमें चित्र होताहै; जैसे थंभमें पुतरियां होतीहैं, अरु हुवे बिना भासतीहैं; तैसे यह सृष्टि मनमें रहीहै, वास्तवते कछु बनी नहीं सब आकाश रूपहै; जब चित्त संवेदन स्पंद रूप होताहै, तब नाना प्रकारका जगत् होयके भासताहै; अरु जब निष्पंद होताहै तब जगत् मिट जाताहै; इस प्रकार जगत्‌की उत्पत्ति कहीहै. तिसके अनंतर,

स्थिति प्रकरणहै; तिसमें जगत्‌की स्थिति कहीहै; जैसे इंद्रका धनुष आकाशरूपहै, और अविचार करके रंगसहित भासताहै; जैसे सूर्यकी किरणोंमें जल भासताहै, जैसे जेवरीमें सर्प भासताहै सो सब सम्यग्दृष्टि करके निवृत्त होताहै, तैसे अज्ञान करके जगत्‌की प्रतीति होतीहै, सो मनोराज करके जगत् रच लेताहै, सो कछु उत्पन्न हुवा नहींहै; तैसे यह जगत् संकल्पमात्रहै; जब लग मनोराजहै, तब लग वह नगर होताहै; जब मनोराजका अभाव हुवा, तब नगरका अभाव होजाताहै.

जबलग अयान होताहै; तबलग जगत्की उत्पत्ति हो-
तीहै; जब संकल्पका लय हुवा तब जगत्का अभाव
होजाताहै; जैसे इंद्र, ब्रह्माके पुत्रहूकी दश सृष्टि संकल्प
करके स्थित भई,तैसेयह जगत्भीहै; कोऊ पदारथ अर्थ-
रूप नहीं. हे रामजी! इस प्रकार स्थिति प्रकरण कहाहै;
तिसके तीन सहस्त्र श्लोकहैं; तिसके विचार करके जग-
त्की सत्यता जात रहतीहै; तिसके अनंतर,

उपसम प्रकरणहै; तिसके पंच सहस्त्र श्लोकहैं; ति-
सके विचारेते अहंतत्त्वादिक वासना लीन होजातीहैं;
जैसे स्वप्नेते जागेते वासना जात रहतीहै, तैसे विचार
कियेते अहंतादिक वासना लीन होती जातीहै; काहेते
कि उसके निश्चयमें जगत् नहीं रहता; जैसे एक पु-
रुष सोयाहै, तिसको स्वप्नेमें जगत् भासताहै, और उ-
सके निकट जो जागृत पुरुषहै; तिसको स्वप्नका ज-
गत् आकाशरूपहै; जब आकाशरूप हुवा तब वा-
सना कैसे रहे; जब वासना नष्ट भई, तब मनका
उपसम हो जाता है, तब देखने मात्र उसकी सब चेष्टा
होती है, और इसके मनमें अर्थरूप इच्छा नहीं होती;
जैसे अग्निकी मूर्त्ति देखने मात्र होती है, अर्थाकार नहीं
होती; तैसे उसकी चेष्टा होती है. हे रामजी! जब मनते
इच्छा नष्ट होती है, तब मन भी निर्वाण होजाता है;
जैसे तेलते रहित दीपक निर्वाण होता है, तैसे इच्छाते

रहित मन निर्वाण होता है; इस प्रकार उपसम प्रकरण है; तिसके अनंतर,

निर्वाण प्रकरण है; जो शेष है. तिसमें परम निर्वाण वचन कहे हैं; अज्ञान करके चित्त अरु चित्तका संबंध है; सो विचार कियेते निर्वाण हो जाता है; जैसे शरद कालमें मेघके अभावते शुद्ध आकाश होता है, तैसे पुरुष विचार करके निर्मल होता है. हे रामजी! अहंकार रूपी पिशाच है, सो विचार करके नष्ट होता है; जेती कछु इच्छा स्फूर्ति है, सो निर्वाण हो जाती है, जैसे पत्थरकी शिला फुरनेते रहित होती है तैसे ज्ञानवान इच्छाते रहित होता है; तब जेती कछु जगत्‌की यात्रा है, सो इसको होय चुकती है; जो कछु करना है सो कर चुकता है.हे रामजी! शरीर होतेही वह पुरुष अशरीरी हो जाता है, अरु नाना प्रकारका जगत् उसको नहीं भासता. जगत्‌की नेतोते वह रहित होता है; अहंतत्त्वादिक तमरूप जगत् तिसको नहीं भासता है; जैसे सूर्यको अंधकार दृष्टि नहीं आवता, तैसे उसको जगत् दृष्टिमें नहीं आता, अरु ऐसे बडे पदको प्राप्त होता है; जैसे सुमेरु पर्वतके किसी कोनमें कमल होता है, तिसके ऊपर भौंरा स्थित रहते हैं, तैसे ब्रह्माके किसी कोनपै जगत् तुषाररूप है, अरु जीव रूपी भौंरे तिसपर स्थित हैं; वह पुरुष अचिंत्य चिनमात्र है; रूप, अवलोकन, मन, ति-

सका आकाशरूप हो जाता है. तिस पदको वह प्राप्त होता है,जिस पदकी योग्य उपमा कहनेको ब्रह्मा,विष्णु, रुद्र समर्थ नहीं; ऐसे अनुपमताके सदृश कोऊ नहीं है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे षट् प्रकरण विवरणं नाम सप्तदशःसर्गः ॥ १७ ॥

अष्टादशःसर्गः १८

अथ दृष्टांत वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! यह परम उत्तम वाक्य उसको विचारनहारा उत्तम पदको प्राप्त होता है, उत्तम खेतमें उत्तम बीज बोयेते उत्तम फलकी उत्पत्ति होती है, तैसे इसको विचारनहारा उत्तम पदको प्राप्त होता है; यह वाक्य कैसे है जो युक्ति पूर्वक वाक्य. और युक्तिते रहित ऋषि वाक्य भी होहि, तो तिनका त्याग करिये; और युक्ति पूर्वक वाक्यका अंगीकार करिये.

हे रामजी! जो ब्रह्माके वचन युक्तिते रहित होहिं, तब तिनको भी सूखे तृणकी नाईं त्याग करिये; अरु बालकके वचन युक्ति पूर्वक होहिं, तो तिनका अंगीकार करिये; और पिताके कूपका खारा जल होवे, तो उसका त्याग करिये, और निकट मिष्ठ जलका कूप होवे, तब तिसका पान करिये; तैसे बडे अरु छोटेका विचार न

करिये; युक्ति पूर्वक वचनका अंगीकार करना. हे रामजी! मेरे वचन सब युक्ति पूर्वक हैं. अरु बोधके परम कारण हैं; जो पुरुष एकाग्र होयके इस शास्त्रको आदिते अंत पर्यंत पढे, अथवा पंडित सों श्रवण करके विचारे, तब तिसकी बुद्धि संस्कारित होवे.

प्रथम वैराग्य प्रकरणको विचारेगा, तब वैराग्य उपजैगा; जेते कछु जगत्के रमणीय भोग पदार्थ हैं, तिसको बिरस जानेगा, अरु किसी पदारथकी वांछा न करैगा; जब भोगमें वैराग्य होता है, तब शांतिरूप आत्मतत्त्वमें प्रतीति होती है; जब विचार करके बुद्धि संस्कारित होवेगी, तब शास्त्रका सिद्धांत बुद्धिमें आय स्थित होवेगा; और संसारके विकार रहित बुद्धि निर्मल होवेगी. जैसे शरत्कालमें बादरके अभाव हुवेते आकाश सब ओरते स्वच्छ होता है, तैसे बुद्धि निर्मल होवेगी; बहुरि आधिव्याधिकी पीडा उसको न होवेगी. हे रामजी ! ज्यों ज्यों विचार दृढ होवेगा, त्यों त्यों शांतात्मा होवेगा; ताते जेते कछु संसारके यत्न हैं, तिनका त्याग कर इस शास्त्रको वारंवार विचारेते चैतन्य सत्ता उदय होवेगी, त्यों त्यों लोभ मोहादिक विकारकी सत्ता नष्ट होवेगी. ज्यों ज्यों सूर्य उदय होता है, त्यों त्यों अंधकार नष्ट होता है; तैसे विकार नष्ट होवेगा तब तिस पदकी प्राप्ति होवेगी. जिसके पायेते संसारके क्षोभ मिट

जायँगे; जैसे शरदकालमें मेघ नष्ट हो जाता है, तैसे संसारके क्षोभ मिट जाते हैं.

हे रामजी! ज्ञानवान पुरुषको संसारके राग दोष बेधि नहीं सकते. जैसे जिस पुरुषने कवच पहिरा होय, तिसको बाण बेध नहीं सकते; उसको भोगकी इच्छा नहीं रहती; जब विषय भोग विद्यमान आयरहे, तब तिनको विषयभूत जानके बुद्धि गृहण नहीं करती. अर्थ जानकर बाहर नहीं निकसती; अंतर आत्मामेंई स्थित रहती है; पतिव्रता स्त्री अपने अंतःपुरते बाहर नहीं निकसती तैसे ताकी बुद्धि अंतरते बाहर नहीं निकसती. हे रामजी! बाहरते तो वह भी प्रकृतिजन्यकी नाईं दृष्टि आते हैं जो कछु अनिच्छित प्राप्त होते हैं, तिसको भुगतता हुवा दृष्टिमें आता है; और अंतरते उसका राग दोष नहीं फुरता.

हे रामजी! जेता कछु जगत्की उत्पत्ति प्रलयका क्षोभ है, सो ज्ञानवानको नष्ट नहीं कर सकता; जैसे चित्रकी बेलिको आंधी चलाय नहीं सकती, तैसे उसको जगत्का दुःख चलाय नहीं सकता; अरु संसारकी ओरते जड हो जाता है. वृक्षकी नाईं गंभीर हो जाता है, अरु पर्वतकी नाईं स्थिर हो जाता है, अरु चंद्रमाकी नाईं शीतल हो जाता है. हे रामजी! सो आत्मज्ञान करकै ऐसे पदको प्राप्त होता है, जिसके पायेते और कछु

पाने योग्य नहीं रहता;आत्मज्ञानका कारण यह मोक्षोपाय शास्त्र है, जामें नाना प्रकारके दृष्टांत कहे हैं. जो वस्तु अपरिच्छिन्न होवे, अरु देखनेमें न आई होइ, तिसका न्याय देखनेमें होवे; तिसको विधिपूर्वक समुझावे उसका नाम दृष्टांत है. हे रामजी! यह जगत् कार्य कारणरूप है; अरु आत्मा जगत्की एकता कैसे होवे; ताते जो मैं दृष्टांत कहोंगा, तिसका एक अंश अंगीकार करना सब देशकर अंगीकार नहीं करना हे रामजी! कार्य कारणकी कल्पना मूर्खने करी है, तिसको निषेधने निमित्त मैं स्वप्न दृष्टांत कहों हों, सो समुझनेते तेरे मनका संशय नष्ट हो जावेगा. दृग अरु दृश्यका भेद मूर्खको भासता है; तिसके दूर करनेके अर्थ स्वप्न दृष्टांत कहोंगा, तिसके विचारने करि मिथ्या विभाग कल्पनाका अभाव होता है. हे रामजी! ऐसी कल्पनाका नाश कर्त्ता यह मेरा मोक्ष उपाय शास्त्र है; जो पुरुष आदिते अंत पर्यंत विचारेगा सो संस्कारी होवेगा. जो पद पदार्थको जाननेहारा होवे, अरु इसको वारंवार विचारे, तब तिसका दृश्य भ्रम नाश पावे. इस शास्त्रके विचार विषे अवर किसी तीर्थ, तप, दान आदिककी अपेक्षा नहीं; जहां स्थान होवे तहां बैठे जैसा भोजन गृह विषे होवे तैसा करे; अरु वारंवार इसका विचार करे; तब अज्ञान नष्ट होजावे, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे. हे रामजी! यह शास्त्र प्र-

काशरूप है; जैसे अंधकार विषे पदार्थ नहीं दिखता, अरु दीपकके प्रकाश करि चक्षु सहित देखता है; तैसे शास्त्ररूपी दीपक विचाररूपी नेत्रसहित होवे. तब आत्मपदकी प्राप्ति होवे.

हे रामजी! आत्मज्ञान, विचार विना वर शापकरि प्राप्त नहीं होता; जब विचार करि दृढ अभ्यास करिये, तब प्राप्त होताहै. ताते मोक्ष उपाय जो परम पावन शास्त्र, तिसके विचारते जगत् भ्रम नष्ट होजावेगा. जगत्के देखते देखते जगत् भाव मिट जावेगा जैसे सर्पकी मूर्त्ति लिखी होतीहै, अरु अविचार करके तिसते भय पाताहै; जब विचार करि देखिये तब सर्प भ्रम मिटजाताहै; सो सर्पका आकार दृष्टि आताहै, परंतु उसका भय मिट जाताहै; तैसे यह जगत् भ्रम विचार कियेते नष्ट होजाताहै; अरु जन्म मरनका भय नहीं रहता. हे रामजी! जन्म मरनका भयभी बडा दुःखहै, परंतु इस शास्त्रके विचारते नष्ट होजाताहै. जिन्होंने इसका विचार त्यागाहै सो माताके गर्भ विषे कीट होवेंगे; अरु कष्टते नहीं छूटेंगे. अरु विचारवान पुरुष आत्मपदको प्राप्त होवेगा; अरु जो श्रेष्ठज्ञानी अनंतहैं तिसको अपना रूप भासताहै, कोऊ पदार्थ आत्माते भिन्न नहीं भासता; जैसे जिसको जलका ज्ञान हुवाहै, तिसको लहरी आवर्त्त सब जलरूपही भासताहै; तैसे ज्ञा-

नवानको सब आत्मरूप भासताहै. अरु इंद्रियहूके इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिमें इच्छा दोष नहीं करता, सदा, एक रस मनके संकल्पते रहित शांतरूप होताहै. जैसे मंद-राचल पर्वतके निकसेते क्षीर समुद्र शांतिको प्राप्त भया, तैसे संकल्प विकल्प रहित यह पुरुष शांतिरूप

हे रामजी! और जो तेज होताहै, सो दाहक होताहै; परंतु ज्ञानरूपी तेज जिस घट विषे उदय होताहै, सो शीतल शांतिरूप होताहै, बहुरि तिस विषे संसारका वि-कार कोऊ नहीं रहता. जैसे कलियुग विषे शिखावारा तारा उदयहोताहै,सो कलियुगके अभाव हुवे नहीं उदय होता; तैसे ज्ञानवानके चित्तमें विकार उत्पन्न नहीं होता.

हे रामजी! संसार भ्रम आत्माके प्रमादकरि उत्पन्न होताहै, सो आत्मज्ञानके प्राप्त भये यत्नविना शांत हो-जाताहै. फूल पत्र काटनेमें भी कछु यत्न होताहै; परंतु आत्माके पावनेमें कछु यत्न नहीं होता; काहेते कि बो-धरूपी बोधही करके जानताहै. हे रामजी! जो जानने मात्र ज्ञान स्वरूपहै, तिसमें स्थित होनेका क्या यत्नहै; आत्मा शुद्ध अद्वैतरूपहै; अरु जगत् भ्रम मात्रहै. जो पूर्व अपर विचार कियेते जिसकी सत्यता न पाइये ति-सको भ्रम मात्र जानिये, अरु पूर्व अपर विचार कियेते सत्यहोवे तिसका रूप जानिये; सो इस जगत्का स-त्यता आदि अंत विषे नहींहै, ताते स्वप्नवतहै; जैसे स्वप्न

आदि अंतमें कछु है नहीं तैसे जाग्रत भी आदि अंतमें नहींहै; ताते जाग्रत स्वप्न दोनों तुल्यहैं.

हे रामजी! यह वार्त्ता बालक भी जानताहै; कि आदि अंतमें जिसकी सत्यता न पाइये, सो स्वप्नवतहै; जो आदि भी नहोवे अरु अंतभी नरहै; तिसको मध्यमें भी असत्य जानिये; तिस विषे यह दृष्टांत कहेहैं- संकल्प पुरीवत, ध्यान नगरकी नाईं स्वप्न पुरीकी नाईं, वर शाप करके जो उपजताहै तिसकी नाईं, ओषधीते उपजकी नाईं; इस पदारथकी सत्यता न आदि होतीहै, न अंतर होतीहै; अरु मध्यमें जो भासताहै सोभी भ्रम मात्रहै. तैसे यह जगत् अकारणहै, अरु कार्य, कारण भाव संबंधमें भासताहै; तो कार्य कारण जगत् भया, अरु आत्मसत्ता अकारणहै; जगत् साकारहै, अरु आत्मा निराकारहै.

इस जगत्का दृष्टांत जो आत्मा विषे देओंगा तिसका तुम एक अंश ग्रहण करना. जैसे स्वप्नकी सृष्टि होती है, तिसका पूर्व अपर भाव आत्मतत्त्व विषे मिलता है, काहेते, कि अकारण है; अरु मध्य भावका दृष्टांत नहीं मिलता, काहेते कि उपमेय अकारण है; तो तिसका इस समान दृष्टांत कैसे होवे? ताते अपने बोधके अर्थ दृष्टांतका एक अंश गृहण करना. हे रामजी! जो विचारवान पुरुष है, सो गुरु अरु शास्त्रके श्रवण

करके सुखबोधके अर्थ दृष्टांतका एक अंश गृहण करते हैं. हे रामजी! तिसको आत्मतत्त्वकी प्राप्ति होती है, काहेते कि सारग्राहक होते हैं; अरु जो अपने बोधके अर्थ दृष्टांतका एक अंश गृहण नहीं करते, अरु वाद करते हैं, तिसको आत्मतत्त्वकी प्राप्ति नहीं होती; ताते दृष्टांतका एक अंश गृहण करना, सर्व भाव करके दृष्टांतको नहीं मिलावना अरु पृथक्को देखि करि तर्क नहीं करना. एक अंश दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त सारभूत ग्रहण करना. जैसे अंधकारमें पदार्थ परा होवे, सो दीपकके प्रकाश सों देख लेना, जो दीपकके साथ प्रयोजन है; और ऐसे नहीं कहना कि दीपक किसका है, अरु तेल बाती कैसा है, अरु किस स्थानका है; दीपकका प्रकाश ही अंगीकार करना; तैसे एक अंश दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त अंगीकार करना.

हे रामजी! जिस करि वाक्य अर्थ सिद्धि न होवे, तिसका त्याग करना; कि वचन अनुभवको प्रगट करे तिसका अंगीकार करना. जो पुरुष अपने बोधके निमित्त वचनको गृहण करता है, सोई श्रेष्ठ है; अरु जो वादके निमित्त गृहण करता है सो चोगचूंच है; वह अर्थको सिद्ध नहीं करता; जो कोऊ अभिमानको लेकरि कहता है, सो हस्तीकी नाईं शिरपर माटी डारता है, तिसका अर्थ सिद्ध नहीं होता; अरु जो अपने बोधके निमित्त वच-

नको गृहण करता है, अरु विचार करि तिसका अभ्यास करता है, तब वह आत्मा शांतिको पाता है. हे रामजी! आत्मपद पावने निमित्त अवश्यमेव अभ्यास चहिता है; जब सम, विचार, संतोष, अरु संतसमागम करि बोधकी प्राप्ति होवे, तब परमपदको पाता है.

हे रामजी! जिसका दृष्टांत कहता है, सो एक देश लेकरि कहता है, सर्व मुख कहने करि अखंडताका अभाव होय जाता है; अरु जो सर्व मुख दृष्टांत मुखको जानिये, सो सत्यरूप होता है, ऐसे तो नहीं. आत्मा सत्यरूप है; कार्य कारणते रहित शुद्ध चैतन्य है; तिसके लिखावने निमित्त कार्य कारण जगत्का दृष्टांत कैसे दीजिये; यह जगत्का जो दृष्टांत कहता है सो एक अंश लइ कहता है; अरु बुद्धिमान भी दृष्टांतके एक अंशको गृहण करते हैं. जो श्रेष्ठ पुरुष हैं सो अपने बोधके निमित्त सारको गृहण करते हैं, अरु जिज्ञासुको भी यही चहिता है, कि अपने बोधके निमित्त सारको गृहण करे, अरु वाद न करे. जैसे क्षुधार्थीको चावल पाक आय प्राप्त होवहिं, तब भोजन करनेका प्रयोजन है; अरु उसकी उत्पत्ति अरु स्थितिका वाद करना व्यर्थ है.

हे रामजी! वाक्य सोई है जो अनुभवको प्रगट करै. अरु जो अनुभवको प्रगट न करै तिसका त्याग करना; जो स्त्रीका वाक्य होवे अरु आत्म अनुभवको प्रत्यक्ष

करे तिसका गृहण करना; अरु परम गुरु वेद वाक्य होवे और अनुभवको प्रगट न करे तिसका त्याग करना. जबलग विश्रामको नहीं पाया, तब लग विचार कर्तव्य है; विश्रामका नाम तूर्यपद है; जब विश्रामकी प्राप्ति भई तब अक्षय शांति होती है. हे रामजी! जो तूर्यापद संयुक्त पुरुष है, तिसका श्रुति स्मृति, उक्त कर्महूके करनेकरि प्रयोजन सिद्ध कछु नहीं होता अरु न करनेकरि कछु पाप नहीं होता; सदेह होवे, भावे विदेह होवे, गृहस्थ होवे भावे विरक्त होवे; तिसको कर्तव्य कछु नहीं वह पुरुष संसार समुद्रते पार हुवा है.

हे रामजी! उपमेयको उपमा करि जानता है; सो एक अंशको गृहण करि जानता है, तब बोधकी प्राप्ति होती है; अरु जो बोधते रहित है, सो मुक्तिको प्राप्त नहीं होता, वह व्यर्थ वाद करता है. हे रामजी! शुद्ध स्वरूप आत्मसत्ता जिसके घटविषे विराजमान है, तिसको त्याग करि अवर विकल्प उठावता है सो चोगचंचू है अरु मूर्ख है.

हे रामजी! जो अर्थ प्रत्यक्ष है, सो प्रमाण मानने योग्य है; और जो अनुमान, अर्थापत्ति; आदि प्रमाण सों तिसकी सत्ता प्रत्यक्ष करि होती है. जैसे सब नदीका अधिष्ठान समुद्र है, तैसे सब प्रमाण हूका अधिष्ठान प्रत्यक्ष प्रमाण है; सो प्रत्यक्ष क्या है, सो श्रवण करहु. हे

रामजी! चक्षुरूपी ज्ञान संमत संवेदन है, तिस चक्षु करके विद्यमान होता है, तिसका नाम प्रत्यक्ष प्रमाण है; तिन प्रमाण हूको विषय करने हारा जीव है; अपने वास्तव स्वरूपके अज्ञानकरि अनात्मारूपी दृश्य बनी है; तिस विषे अहंकृति करके अभिमान भया है. अभिमान सब दृश्य है, ताते हेयो पादेय बुद्धि भई है; अरु राग दोष करके परा जलता है;आपको कर्त्ता मानि करि बहिर्मुख हुवा भटकता है.

हे रामजी! जब विचार करके संवेदन अंतर्मुखी होवे, तब आत्मपद प्रत्यक्ष होता है, अरु निज भावको प्राप्त होता है, परिछिन्न भाव नहीं रहता; शुद्ध शांतिको प्राप्त होता है.जैसे स्वप्नेते जागेते स्वप्नका शरीर अरु दृश्य भ्रम नष्ट होजाता है; तैसे आत्माके प्रत्यक्ष हुवेते सब भ्रम मिट जाता है; अरु शुद्ध आत्मसत्ता भासती है.हे रामजी! यह जो दृश्य अरु दृष्टा है, सो मिथ्या है; जो दृष्टा है सो दृश्य होता है, अरु जो दृश्य है सो दृष्टा होता है, सो यह भ्रम मिथ्या आकाश रूप है.जैसे पवनमें स्पंद शक्ति रहती है, तैसे आत्मामें संवेदन रहती है. जब संवेदन स्पंदरूप होती है, तब दृश्यरूप होयके स्थित होती है, जैसे स्वप्नेमें अनुभव सत्ता दृश्यरूप होयके स्थित होती है, तैसे यह दृश्य है; ताते सब आत्मसत्ता है; ऐसे विचार करि आत्मपदको प्राप्त होवहु. अरु जो ऐसे वि-

चार करके आत्म पदको प्राप्त न होय सको, तब अहं-
कार जो उल्लेख फुरता है तिसका अभाव करो; पाछे
जो शेष रहैगा सो शुद्ध बोध आत्मसत्ता है. जब शुद्ध
बोधको तुम प्राप्त होहुगे, तब ऐसे चेष्टा पडी होवेगी.
जैसे जंत्रीकी पुतरी संवेदन बिना चेष्टा करती है, तैसे
देहरूपी पुतरीका पालन हारा मनरूपी संवेदन है तिस
बिना पडी रहैगी; परंतु अहंकृतका अभाव होवेगा; ताते
यत्न करके तिस पदके पानेका अभ्यास करो जो नित्य
शुद्ध शांतरूप है.

हे रामजी! और दैव शब्दको त्याग करि अपना पुरु-
षार्थ करो, अरु आत्मपदको प्राप्त होहु. कोऊ पुरुषार्थमें
शूरमा है सो आत्मपदको प्राप्त होता है, अरु जो नीच
पुरुषार्थका आश्रय करता है,सो संसार समुद्रमें डूबता है.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे दृष्टांत प्रमा-
णं नाम अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

एकोन विंशतितमः सर्गः १९

अथ आत्मप्राप्ति वर्णनं.

वशिष्ठोवाच, हे रामजी! जब सतसंग करके यह पु-
रुष शुद्ध बुद्धि करे, तब आत्मपद पानेको समर्थ होवे;

प्रथम सत्संग यह है- जिसकी चेष्टा शास्त्रहूके अनुसार होवे; तिसका संग करे; तिसके गुणहूको हृदय विषे धरे; बहुरि महा पुरुषके सम संतोष आदिक गुणहूका आश्रय करे; सम संतोषादिक करि ज्ञान उपजता है, जैसे मेघहू करि अन्न उपजता है; अरु अन्न करि जगत् होता है; अरु जगत् हूते मेघ होता है; तैसे सम संतोष भी है. शमादिक गुणकरि ज्ञान उपजता है, अरु आत्मज्ञान करि शमादिक गुण आय स्थित होते हैं. जैसे बडे तालकरि मेघ पुष्ट होता है, अरु मेघ करि ताल पुष्ट होता है, तैसे शमादिक गुण करि आत्मज्ञान होता है, अरु आत्मज्ञानते शमादिक गुण पुष्ट होते हैं; ऐसे विचार करके शम संतोषादिक गुणोंका अभ्यास करहु, तब शीघ्रही आत्मतत्त्वको प्राप्त होवेगा. हे रामजी! ज्ञानवान पुरुषको शमादिक गुण स्वाभाविक आय प्राप्त होते हैं; अरु जिज्ञासीको अभ्यास करके प्राप्त होते हैं. अरु जैसे धान्यकी पालन स्त्री करती है, ऊंच शब्द करती है जिसकरि पक्षी हूको उडावती है;जब इस प्रकार पालना करती है,तब फलको पाती है;तिसकरि पुष्ट होती है; तैसे शम संतोषादिकके पालने करिआत्मतत्त्वकी प्राप्ति होती है

हे रामजी! इस मोक्ष उपाय शास्त्रको आदिते लेकरि अंतपर्यंत विचारे तब भ्रांति निवृत्त होवे. धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सर्व पुरुषार्थ कर सिद्ध होते हैं; परंतु

यह मोक्ष उपाय शास्त्र परम कारण है, जो शुद्ध बुद्धिवान पुरुष इसको विचारेगा, तिसको शीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी, ताते इस मोक्ष उपाय शास्त्रका भली प्रकार अभ्यास करो.

इति श्रीयोगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे आत्मप्राप्ति वर्णनं नाम एकोनविंशतितमः सर्गः ॥१९॥

समाप्तमिदं योगवाशिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणं.

इति योगवाशिष्ठ सम्पूर्ण ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.
खेमराज-श्रीकृष्णदास
"श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई